मैथिली

साहित्य

वल्लत्तोल

बी. हृदयकुमारी

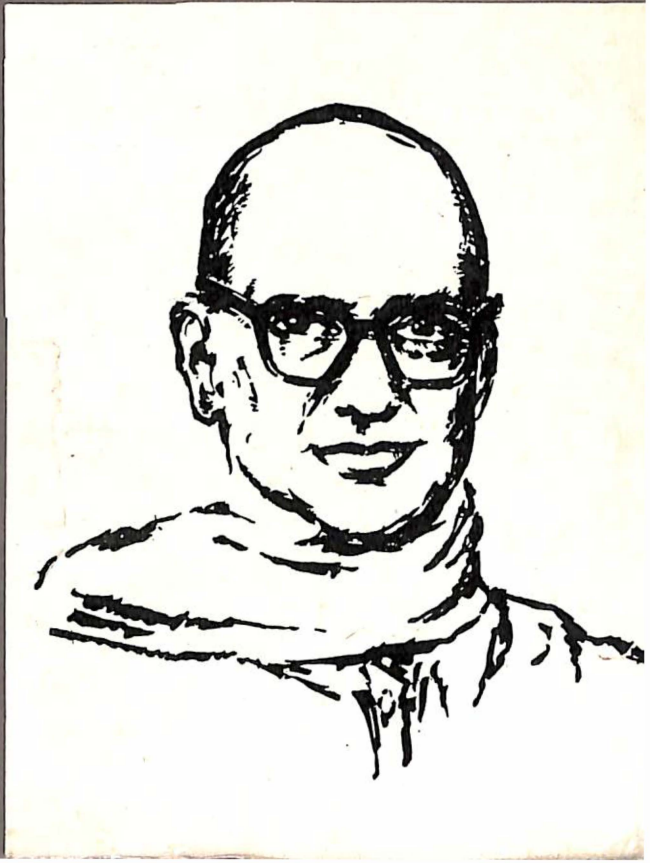

MT
891.481 218 1
V 242 H
भारतीय
साहित्यक

MT
891.481 2181
V242H

अस्तर पर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माय-रानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कय रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचाँमे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपिबद्ध कय रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख छिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

वल्लत्तोल

मूल लेखिका
बी. हृदयकुमारी

अनुवादक
कुलानन्द मिश्र

साहित्य अकादेमी

Vallathol : Maithili translation by Kulanand Mishra of B. Hriday-Kumari's monograph in English. Sahitya Akademi, New Delhi (1995), Rs. 15.

Library IIAS, Shimla
MT 891.481 218 1 V 242 H
00117146

© साहित्य अकादेमी
प्रथम संस्करण 1995

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय

जीवनतारा बिल्डिंग, 23 ए/44 एक्स, डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता 700 053
172, मुम्बई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई 400 014
304-305, अन्ना सलाई, तेनामपेठ, मद्रास 600 018
ए डी ए रंगमन्दिर, 109, जे. सी. मार्ग, बैंगलौर 560 002

मूल्य : पन्द्रह टाका

MT
891.481218 1
V242H

ISBN 81-7201-893-2

लेज़रसैटिंग : पैरागान एन्टरप्राइसेज़, नयी दिल्ली 110 002
मुद्रक : कलर प्रिंट, दिल्ली 110 032

117146
9.12.04
SHIMLA

अनुक्रम

भूमिका	7
परम्परावादी	14
राष्ट्रीयताक कवि	23
वल्लत्तोलक किछु छोट-छोट कविताक मूल्यांकन	36
वल्लत्तोलक वर्णनात्मक कविता	52
प्रकृति-गायक	70
एकटा स्वच्छन्दतावादी कवि	77
एकटा गद्य-लेखक आ समालोचक	83
वल्लत्तोलक काव्यकला	86
सहायक ग्रन्थ-सूची	96

भूमिका

बीसम शताब्दी भारतीय साहित्यसभ मे एकटा अभूतपूर्व विकासक दर्शन कयल। एहि विकासक उत्प्रेरणा मुख्यतः पाश्चात्य साहित्य एवं संस्कृति संग परिचय सँ आ संगहि सामाजिक तथा राजनैतिक जीवन मे आयल उठा-पटकक कारण प्राप्त भेल। एहि सभ शक्तिक प्रभाव मे मलयालम साहित्यो नव दिशा मे विकास कयल, ओकरा संचेतनाक नव आयाम भेटलैक आ गुण तथा परिमाण दुनू मे ओ विकसित भेल। केरल मे पुनर्जागरणक नेतागण प्रतिभासम्पन्न रहथि, जिनका सभकेँ पारम्परिक संस्कृतिक प्रति दृढ़ लगाव रहनि आ ओ सभ नबका एवं पुरना आदर्शक बीच समन्वय स्थापित करबा मे समर्थ रहथि। मलयालम कविता तीनटा महान कवि संग आधुनिक काल मे प्रवेश कयल—ओ रहथि कुमारन् आशान्, वल्लत्तोल नारायण मेनन आ उल्लूर परमेश्वर अय्यर। ई तीनू कवि उनैसम शताब्दीक आठम दशक मे जन्म लेने रहथि। बौद्धिक उत्कर्ष आ रुचिगत वैविध्य मे ई लोकनि प्रायः एक-दोसराक समकक्षे रहथि, परंच भाषाक सम्पन्नता, तत्कालीन क्रियाशील नव प्रभाव तथा पुरना परम्परा एहि तीनू रचनाकार मे भिन्न-भिन्न तरहेँ अभिव्यक्ति पाओल।

वल्लत्तोल नाम सँ प्रख्यात नारायण मेननक जन्म 18 अक्तूबर, 1878 क' भेल रहनि। वल्लत्तोल हुनक पारिवारिक नाम रहनि। हुनक पिता दामोदरन इलसतु मलयाली ब्राह्मण रहथि आ माता वल्लत्तोल परिवारक कुट्टिपाक अम्मा रहथिन। ओ हिनका सभक एकमात्र पुत्र रहथि। ओहि छोट-छिन गामक नाम चेन्नारा छल, जत' वल्लत्तोलक जन्म भेल रहनि आ जे उत्तर केरलक पोन्नानि नामक तहसीलक एक भाग वेट्टतुनाडुक अन्तर्गत पड़ैत छल। वेट्टत्तुनाडु कहियो एकटा स्वतंत्र रियासति छल जे अपन साहसी राजागण आ हुनकासभक आश्रित कविगण लेल ख्यात छल। तुंचत्तु एषुतच्छन, जे मलयालम कविताक जन्मदाता छथि, अही ठामक रहथि।

वल्लत्तोल मलयालम आ संस्कृतक शिक्षा प्राप्त कयलनि। मलयालमक प्राथमिक शिक्षाक बाद ओ अपन मामा रामुण्णि मेनन सँ संस्कृतक शिक्षा प्राप्त कयलनि। रामुण्णि मेनन संस्कृतक विद्वानक संग एकटा जानल-मानल वैद्यो रहथि। ओ चाहैत रहथि जे हुनक भागिन हुनके सन वैद्य बनथि। काव्य आ नाटक सभक अध्यापनक पश्चात् ओ अपन शिष्य केँ कैकुलंगर राम वारियर-जीक सेवा मे पठओलनि जे संस्कृतक एकटा

प्रकाण्ड पण्डित रहथि। मामा स्वयं हुनका 'अष्टांग हृदय' पढ़ौलखिन जे भारतीय चिकित्सा शास्त्रक मूल ग्रंथ मानल जाइछ। मामा अपन भागिन मे काव्य-रचनाक क्षमता कैं सेहो परखलनि। तखन ओ हुनका श्लोक-लेखन आ 'समस्यापूरणम' एवं 'अक्षरश्लोकम'—सन साहित्यिक खेल मे भाग लेबा लेल प्रोत्साहित कयलखिन। वल्लत्तोलक अपन एकटा मित्र-मण्डली छलनि, जे साहित्य आ कथकली-सन कलामे पर्याप्त रुचि लेल। हुनक पिता त' कथकलीक अन्मत्त भक्त रहबे करथिन। पास-पड़ोस मे कतौ कथकलीक आयोजन हो आ ओ देखबा लेल नहि पहुँचथि, एहन भ' नहि सकैत छल। अपन बाल्यकाले सँ वल्लत्तोल अपन पिताक संग एहन कथकली आयोजन मे जाइत रहथि आ ओही क्रम मे एहि कलाक सौन्दर्यक प्रति मुग्ध भ'गेल रहथि। कविता आ कथकली युवा वल्लत्तोलक मोनक निशाँसन भ'गेल रहनि।

तरुणावस्था प्राप्त करबा सँ पूर्वहिँ वल्लत्तोल काव्य-लेखन आरंभ क' देलनि। संस्कृत हो किंवा मलयालम, ओ दुनू भाषा मे सहज ढंगसँ कविता लिखि लैत छलाह। अपन माताक निधन भेला पर लिखल शोक गीत सँ संस्कृत भाषा पर हिनक अधिकार प्रकट होइछ। एकैस वर्षक वयमे ओ 'ऋतु विलासम' काव्यक रचना कयलनि जे मलयालम मे ऋतुसभक वर्णन अछि। ई कालिदासक 'ऋतुसंहार' क अनुकरण थिक। हिनक किछु कविता प्रकाशित भेल, किछु रचनाक लिखित प्रारूप मित्रगणक बीच प्रचलित भेल आ एहि तरहेँ युवक वल्लत्तोल साहित्यिक क्षेत्र मे अपना लेल नाम कमौलनि। अपना सँ वरीय एहन लेखक सभक अभिनन्दन एवं स्नेह प्राप्त करबाक हिनका सौभाग्य भेटलनि, जे ओहि समयक प्रतिष्ठित आचार्य रहथि आ हिनका सँ अवस्था मे बेस जेठ रहथि। ओहन लोक मे पुन्नशेरि नम्पि नीलकंठ शर्मा आ एट्टन तम्पुरान रहथि। एट्टन तम्पुरान सामूतिरि राजवंशक एकटा वरीय युवराज एहथि जे साहित्यकारलोकनिकेँ संरक्षण देबाक कारण आधुनिक भोजराजक नाम सँ प्रसिद्ध छथि। अपन एकटा कवितामे वल्लत्तोल एहि बातक स्मरण कयने छथि जे एट्टन तम्पुरान कोना काव्य-पाठ, संगीत सभा आ साहित्यक विचार-गोष्ठी मे हिनक साहचर्य्यक इच्छुक रहथि।

यद्यपि केरल एकटा समृद्ध आ राजनैतिक रूप सँ स्वतंत्रता प्राप्त क्षेत्र नहि छल, तथापि ओकर सांस्कृतिक परम्परा पूर्णतः नष्ट नहि भेल रहैक। सुदूर स्थित गामोसभ मे संस्कृत शिक्षाक प्रचार छलैक। सभठाम एहन विद्वान आ लेखक-गण उपलब्ध रहथि जे अपन आंचलिक सीमाक अछैतो शास्त्रीय एवं वौद्धिक रुचि-साम्यक कारण परस्पर एकटा समुदायक रूप मे एकजुट रहथि। राजा-महाराजा आ संभ्रान्त समुदाय द्वारा विद्वत्ताक प्रोत्साहनक परम्पराक निर्वाह कयल जाइत छल, यद्यपि हिनका लोकनिक पुरना कीर्ति आब नष्ट भ' गेल छल। ओ लोकनि आ हुनका सभक विज्ञ दरवारी सभ स्वयं एहन निष्णात पाठक रहथि जे हुनका सभके अपन रचना द्वारा प्रसन्न करब कोनो साधारण काज नहि छल। कोनो कवि हुनका सभक विवेक आ आस्वाद-सामर्थ्य पर भरोसक' सकैत छल। एहि संदर्भ मे केरल कोनो सभ्य देशक समकक्ष हेबाक दावा

क'सकैत छल। यैह ओ प्रबुद्ध वातावरण छल, जाहि मे वल्लत्तोल पैघ भेलाह आ कविक रूपमे विकसित भेलाह।

जखन ओ तेइस वर्षक रहथि, हुनक विआह भ'गेलनि। हुनक पत्नी माधवी हुनके मामाक कन्या रहथिन। ओ किछु काल सँ ओकरा प्रति अनुरक्त भ' गेल रहथि। अपन बाल्यकालक सखीकें जीवनसंगिनीक रूप मे प्राप्त क'ओ बड़ प्रसन्न भेलाह।

ताहि समय घरि वल्लत्तोल कतोक कविताक प्रणयन क' चुकल रहथि। ओहि मे अधिकांश अपन इष्टदेवक स्तुति, पौराणिक विषय सभ पर आधारित वर्णनात्मक कविता, किछु अनुवाद आ चिकित्साशास्त्रक पुस्तकसभक संकलित अंश छल। मुदा युवा कवि वल्लत्तोलक मोन मे वैद्य बनबाक कोनो आकांक्षा नहि छलनि। ओ स्वयं अपना कें पूर्णतः साहित्यक प्रति समर्पित करय चाहैत रहथि। ओहि समय मे अत्यन्त समृद्ध व्यक्तिक अतिरिक्त आन क्यो साहित्य-सर्जनक विलासिताकें एकटा व्यवसायक रूप मे स्वीकार करबाक हिम्मति नहि क'सकैत छल। सौभाग्य सँ वल्लत्तोलकें त्रिशूरक केरल कल्पद्रुमम् नामक प्रेसक मनेजर बनबाक आमंत्रण प्राप्त भेलनि। वेतन तीस रुपैया मासिक छलनि। ओहि समय मे ओ कोनो छोट राशि नहि छल। वल्लत्तोलकें काम आ दाम रुचलनि। अपन साहित्यिक क्रिया-कलापकें जारी रखबाक अवकाशो प्राप्त भेलनि। पन्दलमक राजाक 'कवन कौमुदी' नामक प्रसिद्ध काव्य-पत्रिकाक प्रकाशनक भार केरल कल्पद्रुमम् प्रेसके कें देल गेल आ वल्लत्तोल आवश्यकतानुार अपनो कविता ओहि मे छापि ओहि पत्रिकाक प्रकाशनक काज कयल। त्रिशूर मे हुनक मित्र-मण्डलीक सेहो क्रमिक वृद्धि भेल, जाहि मे कुंजिकुट्टन् तम्पुरान कुण्डूर नारायण मेनन्, नटुवत्तु महन नम्पुतिरि, वलिय रामन एलयतु-सन ख्यात लेखकसभ रहथि। हुनक आवास साहित्यकारलोकनिक मिलन-स्थल सन भ' गेल छल। ओहि मे सँ प्रत्येक लेखक वल्लत्तोलक विनोद-प्रियता आ काव्यात्मक संवेदनशीलता पर मुग्ध भ'जाइत छलाह। साहित्यिक सभा सभक ओ ख्यात वक्तो भ' गेल रहथि।

त्रिशूर अयबा सँ पहिन्हि वल्लत्तोल वाल्मीकि रामायणक मलयालम अनुवाद आरम्भ कयने रहथि। व्यस्त कार्यक्रमक अछैतो ओ प्रत्येक दिन तीस सँ पचास श्लोक धरिक अनुवाद क'लैत छलाह। अप्पन तम्पुरान आ कुजिकुट्टन तम्पुरान सन विद्वानलोकनि हुनक अनुवादकें मान्यता देलनि। वल्लत्तोल कतोक ग्राहक ठीक क' लेलनि आ सन् 1907 से हुनका सभ लेल अपन अनुवाद अनेक किस्त मे धारावाहिक रूप मे प्रकाशित कयलनि। बाद मे ओ पूर्णरूप मे ओकरा एके जिल्दमे प्रकाशित कयलनि, जकर कतोक संस्करण बहरायल। बादक संस्करण सभ कतोक बात मे पहिलुक संस्करण सभ सँ भिन्न छल। ओ अपरिपक्व रचना मे संशोधन आ परिमार्जन कयलनि। एहि कालमे ओ कतोक फुटकर कवितोक रचना कयलनि।

त्रिशूर मे निवास कालमे हुनका एक बेर एहन जोरदार कफ भेलनि जे हुनक श्रवण-शक्ति हरि लेलकनि। अपन एहि दुःस्थिति पर ओ चकित रहि गेलाह। एक

डाक्टर सँ दोसर डाक्टरक लग जाइत रहलाह। कतोक वैद्य सँ देखाओल। ओ प्रायः प्रत्येक ज्योतिषी सँ परामर्श कयलनि। रोगक विशद् चिकित्सो भेल। अही बीच कवि देवी-देवता सभक कृपा लेल स्तुतियो कयलनि, मुदा एहि सभक कोनो प्रभाव नहि पड़ल। वल्लत्तोल पूर्णतः बहीर भ' गेलाह। परंच एहि पीड़ाक एकटा सुपरिणामो बहरायल —'बधिर विलापम्' नामक कृति, जे हुनक आत्मप्रधान रचना सभमे एक अछि।

1910 मे ओ केरल कल्पद्रुमम् प्रेसक चाकरी त्यागि देल आ अपन गाम घुरि अयलाह। एकटा महाकाव्यक रचना मे ओ लागल रहलाह। संस्कृत महाकाव्य सभक परिपाटीक अनुसरण करैत दीर्घ वर्णनात्मक काव्य-लेखन उनैसम शताब्दीक अवसान काल मे मलयालम विद्वान कविगण मे प्रचलित छल। अजकट्टु पद्मनाभ कुरूप-कृत 'राम चन्द्रविलासम्' पन्दल केरल वर्मा राजाक 'रूक्मांग चरितम्', कोट्टुंगल्लूर कोच्चुण्णि तम्पुरानक 'पाण्डवोदयम्', के. सी. केशव पिल्लैकृत 'केशवीयम्' तथा उल्लूरक 'उमाकेरलम्' एहि प्रकारक किछु उत्कृष्ट रचना छल। एहि परम्पराक अनुरूप वल्लत्तोल 'चित्रयोगम'क प्रणयन कयलनि, जे संस्कृतक प्राचीन कवि सोमदेवक 'कथा सरित्सागर' क एकटा कथा पर आधारित छल। एक हजार पाँच सय नब्बे श्लोकक एहि काव्यक रचना मे ओ दू वर्षक समय लगौलनि। एहि काव्य पर मिश्रित प्रतिक्रिया भेल। परम्परावादी विचारधाराक रचनाकार लोकनि एकर हार्दिक स्वागत कयल, त' कुमारन आशान् सन कतोक रचनाकार एकर रूढ़िवादिता आ अनुकरण-प्रियताक निन्दा कयल।

'चित्रयोगम्' क प्रकाशन कालमे वल्लत्तोल 36 वर्षक छलाह। आगामी पन्द्रह वर्ष हुनक प्रतिभाक चरमोत्कर्षक समय रहल। अपन श्रेष्ठ कृति सभक रचना ओ अही अवधि मे कयलनि। ओ सभ कतोक प्रकारक रचना छल-नाटकीय गीतात्मक तथा वर्णनात्मक। ओहि सभ मे 'बन्धनस्ताय अनिरुद्धन (कैदी अनिरुद्ध), 'शिष्यनुम मकनुम्' (शिष्य आ संतान) 'मगदलन मरियम' (मेरी मगदलन) आ लघुकविता सभक संकलन 'साहित्यमंजरी' प्रमुख अछि। 'साहित्यमंजरीक' प्रथम खण्ड सन् 1917 मे प्रकाशित भेल आ सातम खण्ड सन् 1930 मे। एकर चारिटा आर खण्ड बादक अवधि मे प्रकाशित भेल। किछु पुराणसभ एवं किछु संस्कृतक प्रसिद्ध नाटक (यथा 'पंचरात्रम्' आ 'स्वप्नवासवदत्तम्') सभक मलयालम अनुवाद करबाक समयो ओ बहार क' लेलनि। 'कवनकौमुदी' आ 'आत्म पोषिणी' सन साहित्यिक पत्रिको सभ संग ओ सम्बद्ध रहलाह आ किछु अवधि लेल 'केरलोदयम्' नामक समाचार पत्रक साहित्य-सम्पादको छलाह।

राजाक प्रति निष्ठा धर्मसम्मत गुण छल आ हिन्दू-मानस मे ओकर जड़ि बहुत गहीड़ मे रहैक। जखन भारतीय राजालोकनिक हाथ सँ हस्तान्तरित भ' क सत्ता ब्रिटिश हाथ मे आबि गेल आ विदेशी सरकार द्वारा कानून आ शांतिक स्थापना भेल त' कतोक लोक एहि स्थितिक मौन स्वागत कयल। ओ लोकनि ब्रिटिश सिंहासनक प्रति निष्ठावानो भ' गेलाह। भारतीय कविगण विक्टोरिया आ एंडवर्डक अभ्यर्थना मे गीतक रचना कयल जे समुद्र-पार सँ हुनका सभ पर शासन कयल आ हुनका सभ लेल सुन्दर प्रशासन

आनल। वल्लत्तोलो अपन युवावस्थामे सम्राट एडवर्ड सप्तमक अभ्यर्थना मे किछु गीत लिखलनि। तहिया ओ 23 वर्षक रहथि। एकैस वर्षक बाद हुनक धारणा आ विश्वास ततेक बदलि गेलनि जे ओ अपन काव्य-रचनाक सम्मान मे देल राजकीय पुरस्कार अस्वीकार क' देलनि। हुनक कहब रहनि जे जखन हुनक गुरु गांधीजी अंग्रेजसभक द्वारा जेलमे बन्द कयल गेल छथि, ओ ई पुरस्कार स्वीकार नहि क' सकैत छथि। भारतक एकटा सुदूर कोन मे बसनिहार कोनो कवि द्वारा ब्रिटिश राजसत्ता द्वारा प्रदत्त पुरस्कारक एहन तिरस्कार सँ कविक आत्मसम्माने-टाक नहि, अपितु देशक आंतरिक एकतोक व्यवस्थित परिचय भेटैछ। वल्लत्तोल देश भरि मे व्याप्त राष्ट्रीयता-बोध सँ प्रभावित भ' गेल छलाह। भारतक अतीतक प्रति गर्व आ हुनक बद्धमूल हिन्दुत्व बोध हुनक राष्ट्रीयताक अंग बनि गेल छल। ओ गांधीजीकेँ अपन गुरु मानलनि आ ओहि आन्दोलन तथा शक्ति-सम्पन्न घटना-क्रमक सम्पूर्ण रूप सँ समर्थन कयल जे स्वयं स्वतंत्रता संग्रामक वीरगाथाक संरचना मे संलग्न छल। ओ कतोक एहन कविता लिखलनि जे देशाभिमानक भावना सँ उद्दीप्त छल आ जे मलयालम-भाषी केँ देशक महान संघर्ष मे भाग लेबाक लेल प्रेरित कयने छल।

कविताक बाद कथकली वल्लत्तोलक प्रिय विषय रहल। ओ एहि कलाक प्राचीन गौरवक पुनर्स्थापनाक स्वप्न देखलनि आ कथकलीक कलाकार सभक प्रशिक्षण हेतु एकटा स्कूल खोलबा लेल कठिन प्रयास कयलनि। सन् 1930 मे केरल कलामण्डलम्-क स्थापना भेल। कथकली प्रेमी मानाकुलमक राजा अपन बँगला सभमे सँ एक गोट एहि स्कूल लेल उदारतापूर्वक देल। वल्लत्तोल कला-प्रेमी लोकनि सँ पर्याप्त पैघ राशि एकत्र कयलनि। अपन कथकली विद्यालयक लेल ओ ख्यातिप्राप्त शिक्षकलोकनिक सेवा प्राप्त कयलनि एवं हुनका सभक कार्यक निरीक्षण हेतु स्वयं प्रतिदिन कतोक घंटा ओतय उपस्थित रहथि। ओ अपन मित्र प्रख्यात विद्वांन आ आलोचक कुट्टि कृष्ण मारार केँ, विद्यार्थीगण केँ कथकली साहित्यक नीक परिचय देबाक कार्य पर नियुक्त कयलनि। बाद मे ओ कलामण्डल टोलीकेँ देश-विदेशक भ्रमण लेल ल' गेलाह आ विद्यालयक भवन हेतु धन एकत्र कयलनि। सन् 1937 मे कलामण्डलम चेरत्तुरत्ती स्थित नव भवन मे स्थानान्तरित कयल गेल। ताबत धरि ओ संस्था प्रसिद्ध भ' गेल छल। ओहि संस्था मे भारतक सभ भूभाग तथा विदेशो सँ छात्र आयल। कथकलीक अतिरिक्त केरलक दोसरो नाट्यरूप सभक शिक्षा ओतय देल जाइत छल। सन 1939 मे एकटा टोली ल' क' वल्लत्तोल शान्ति निकेतन गेलाह। कथकलीक प्रस्तुतिक बाद गुरुदेव ठाकुर कहने रहथिन "जखन शुद्ध भारतीय नृत्य रूप सभक स्मरणो आब नहि रहि गेल अछि, तखन उत्तर भारतमे रहनिहार हमरा सभ लेल केरलक एहि महान नृत्य नाटकक प्रदर्शन एकटा सुखद अनुभव थिक।" ओ पुरना नृत्य-रूप सभक संरक्षण लेल वल्लत्तोलक अभिनन्दनो कयलनि। वल्लत्तोल कलामण्डलम् कैं ठोस आ सुरक्षित आधार प्रदान कयलनि। एहि लेल ओ एकटा सुदृढ़ प्रशिक्षण पद्धति स्थिर क' एहि संस्था दिस भारत आ विश्वक

ध्यान आकृष्ट कयलनि। सन् 1941 मे ओ एहि संस्था कैं प्रान्तीय सरकारक हाथ मे द' देलनि। संस्थानक लगातार विकास होइत रहल अछि आ कथकली एक बेर फेर सँ लोकप्रिय भ' गेल अछि। जहिया वल्लत्तोल कथकलीक पुनरुद्धार लेल काज आरम्भ कयने रहथि, तहिया किछु आलोचक हुनका परामर्श देने रहथिन जे एहि अवशेष कैं कोनो संग्रहालय मे राखि देबाक चाही। मुदा एहि अवशेष कैं नव जीवन प्राप्त भेलैक आ दीर्घ अवधि धरि जीवित रहबाक आश्वासनो भेटलैक।

अन्य क्रिया-कलाप सभ मे भने ओ कतबो व्यस्त रहल होथि, मुदा कविताक उपेक्षा ओ कहियो नहि कयलनि। सन् 1930 क बाद 'साहित्यमंजरी' क अन्तिम चारि खण्ड आ आन काव्य-संकलन 'विपक्कणी', 'दिवास्वप्नम्' एवं 'वीरश्रृंखला' प्रकाशित भेल। हुनक एकटा लोकप्रिय काव्य 'अच्छुनम् मकलुम्' (पिता आ संतान) सन् 1949 मे प्रकाशित भेलनि। एहि तरहक किछु काव्यक अतिरिक्त हुनक परवर्ती काव्य सभ मे अधिकांश काव्यात्मक दृष्टिसँ निम्न कोटिक थिक। चारिम आ पाँचम दशक मे रचित हुनक किछु कविता वामपंथी राजनैतिक विचार सँ प्रभावित अछि। 'इण्डिययुटे करच्छिल' (भारत विलाप) आर 'वल्लत्तोल रष्यमिल' (वल्लत्तोल रूस मे) एहि तरहक प्रवृत्तिक परिचायक संकलन थिक।

एहि अवधि मे वल्लत्तोलक किछु अनुवादो प्रकाशित भेल। सन् 1937 मे हुनक कालिदास कृत 'शाकुन्तलम्' क पहिल अनुवाद प्रकाशित भेल। पाँचम दशक मे संस्कृतक कवि वत्सराजक चारिटा नाटकक रूपान्तर प्रकाश मे आयल। एहि नाटक सभक नाम थिक कपटकेलि, कर्पूर चरितम्, रुक्मिणी हरणम् तथा त्रिपुरदहनम्। सन् 1951 मे त्रावनकोर विश्वविद्यालय द्वारा क्षेमेन्द्र रचित 'बोधिसत्वपठन कल्पलता' क वल्लत्तोल कृत मलयालम रूपान्तर प्रकाशित कयल गेल। सन् 1952 मे 'हाल गाथा सप्तति' क अनुवाद 'ग्राम सौभाग्यम्' नाम सँ प्रकाशित भेल। एकर लेखक रहथि प्रथम शताब्दीक संस्कृत कवि हाल। जखन वल्लत्तोल पचहत्तरि वर्षक भ' गेलाह तखन ओ ऋग्वेदक मलयालम मे रूपान्तरक महान काज आरम्भ कयल। स्वामी विवेकानन्दक ई कथन जे भारतक पिछड़ल जाति सभ कें वेदक शिक्षा देल जयबाक चाही, हुनका मोन मे बैसि गेल छलनि आ ओ ऋग्वेदक अनुवादक कठिन कार्यक प्रेरणा पाबि ओहि लेल प्रयन्नशील भेलाह। हुनका एहि कार्य मे दू वर्ष लगलनि। ई अनुवाद गद्य आ पद्य दुनू मे कयल गेल अछि। वैदिक विद्वान लोकनि एहि अनुवाद सँ पूर्णतः संतुष्ट त' नहि भेलाह मुदा एहि मे शंका नहि जे ई अनुवाद मलयालमक एकटा पैघ आवश्यकताक पूर्ति कयल।

अपन प्रमुख कृति सभक प्रकाशनक संगे-संग वल्लत्तोल कैं सम्मान प्राप्त होइत रहलनि। सन् 1919 मे कोचीनक महाराज द्वारा हुनका 'कवि-तिलक' क उपाधि प्रदान कयल गेल। सन् 1928 मे महाराज हुनका एकटा आर विरुद-'कवि सार्वभौम' प्रदान कयल। सन् 1948 मे मद्रास सरकार हुनका चारि राजकवि मे एक घोषित कयल। ओ केन्द्रीय साहित्य अकादेमीक सदस्य तथा केरल साहित्य अकादेमीक उपाध्यक्ष सेहो

रहथि। सन् 1955 मे भारत सरकार हुनका 'पद्म भूषण' क उपाधि सँ सम्मानित कयल। मुदा एहि सभ उपाधि सँ बढ़ि क' छल महान कविक मान जे हुनका पाठकवर्ग सँ प्राप्त भेल छलनि।

अपन वृद्धावस्था मे वल्लत्तोल अत्यन्त सक्रिय रहलाह। सन् 1950 मे, बहत्तरि वर्षक अवस्था मे, ओ वारसा मे सम्पन्न भेल शांति सम्मेलन मे भाग लेलनि। हुनका अंग्रेजी किंवा आन कोनो विदेशी भाषाक ज्ञान नहि रहनि। मुदा ई बात वारसा मे अपन एकटा कविताक पाठ आ पेरिस मे आमंत्रित दर्शक सभक सभा मे कथकली पर भाषण देबा मे बाधक नहि भेल ! आगामी किछु वर्ष मे ओ रूस आ चीनक भ्रमण कयलनि। चीन, मलाया, सिंगापुर मे कथकली टोली ल' गेलाह। देश मे रहैत ओ साहित्यिक संस्था सभ संग सम्पर्क बनौने रखलनि—विशेषतः केरलक संस्था साहित्य परिषद् संग। सन् 1946 मे ओ एहि परिषद्क अध्यक्ष बनाओल गेलाह आ दश वर्ष धरि अध्यक्ष रहलाह। परिषदक वार्षिक सम्मेलन सभ मे देल गेल हुनक भाषण संकलित आ प्रकाशित कयल गेल अछि।

13 मार्च, 1957 कैं वल्लत्तोलक निधन भ' गेल। ओ उनासी वर्षक रहथि। हुनक जीवन संतोषपूर्ण, व्यक्तित्व आकर्षक आ प्रतिभा पर्याप्त सर्जनात्मक रहलनि। ओ स्वयं तथा हुनक काव्य-साहित्य हमरा सभक देशक परम्परागत संस्कृतिक वास्तविक शक्तिक जीवन्त प्रमाण थिक।

परम्परावादी

उनैसम शताब्दीक अवसान कालमे केरलक एक गाम मे जन्म लेनिहार एक कवि, जनिक शिक्षा संस्कृत मे भेल छल जा जिनका अंग्रेजीक कोनो ज्ञान नहि छल, परम्परावादिये भ' सकैत छलाह। ओ परस्पर विरोधी अथवा आत्माक त्रासद व्यथाक अनुभूति नहि करैत छलाह। पुरना मूल्य सभ आ पुरना संवेदना कें ओ आत्मसात क' लेने रहथि। वल्लत्तोल अही प्रकारक परम्परावादी छलाह। हुनका लेल सोझ एवं अनात्मज्ञानी परम्परावादी होयब अधिक सुविधाप्रद छलनि, कारण जे अपन समर्थ वैयक्तिकताक अछैतो केरलक संस्कृति एवं साहित्य हिन्दू धर्म आ संस्कृत भाषाक संस्कृतिक अनुरूप चलल।

बारहम शताब्दी सँ प्रचलित मलयालम कविताक मुख्य शैली 'मणिप्रवालम' रहल, जे 'मणि' (संस्कृत शब्द रत्न) आ 'प्रवालम' (मलयालम शब्द मुक्ता) क मिश्रण छल। 'मणिप्रवालम्' यथार्थतः मलयालमे छल, जाहि मे संस्कृतक शब्द स्वाभाविक रूप सँ खपि गेल छल। संस्कृत एवं शुद्ध मलयालम शब्दक अनुपात भिन्न-भिन्न कवि मे फराक-फराक भ' सकैछ, मुदा संस्कृतकें पूर्णतः त्यागि शुद्ध मलयालम शैलीक रचना तहिया कृत्रिम-सन प्रतीत होइत। विशेषतः दीर्घ कविता सभमे वल्लत्तोल मलयालमक सर्वाधिक उपयुक्त, सुस्पष्ट, प्रवहमान आ श्रुतिमधुर शब्द सभक प्रयोगमे सभ सँ प्रतिभा-सम्पन्न रहथि। परंच ओ अपन प्रवाहयुक्त गीतो सभ मे संस्कृत शब्दक पर्याप्त प्रयोग कयलनि। उदाहरण-स्वरूप हुनक कविता 'एन्टे भाषा' (हमर भाषा) मे जे कि मलयालम भाषा आ साहित्यक अतीत गौरवक गाथा थिक, संस्कृतक शब्दक आधिक्य छैक जे मलयालम मे प्रयुक्त स्वाभाविक शब्द सभ सँ भिन्न आ पाण्डित्यपूर्ण छैक। हुनका द्वारा प्रयुक्त शब्द सभ मे धार्मिक एवं दार्शनिक शब्दक अधिकता भेटत। कर्मयोग, मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण, निवृत्ति, व्रत, दम, सम, सच्चिदानन्द, परमात्मा-सन शब्द हुनक कविता मे सर्वत्र भेटैछ। ई शब्द सभ हिन्दू विचारधाराक मोहाबरा थिक जकर पर्यायवाची अंग्रेजी मे नहि भेटि सकैछ। हिनक कविताक बाह्य स्वरूप परम्परागत तत्वे सभ सँ निर्मित छनि, ई कहब अत्युक्ति नहि होयत। अपन समृद्ध पुराण सभ आ साहित्य सँ युक्त हिन्दू भारत वल्लत्तोलक कविताक रूपरेखा एवं सहायक पृष्ठभूमिक निर्माण करैछ। हुनक कतोक कविताक विषय आ पात्र पुराणसभ सँ लेल गेल अछि। 'अनिरुद्ध' मे

श्रीकृष्णक पौत्र अनिरुद्ध आ कोनो असुर राजाक बेटी उषाक पुरान प्रणयेक कथा अछि। शिष्यनुम मकलुम (शिष्य आ पुत्र) मे शिव, पार्वती, गणपति, सुब्रह्मण्य, परशुराम, राधा आ कृष्ण पात्र छथि। घटनास्थल कैलाश थिक आ कथा पौराणिक। 'ओरूचित्रम' (एकटा चित्र) श्रीकृष्ण पर लिखल एकटा सुन्दर कविता थिक। 'अम्पाडिपिल' 'चेल्सुन्न अक्रूरन' (गोकुल गेल अक्रूर) भागवतक एकटा प्रसंग कें चित्रित करैछ। कृष्ण कें मथुरा ल' जयबा लेल जे अक्रूर वृन्दावनक यात्रा कयलनि, तकरे चित्रण अछि। एकटा अन्य कविता 'कर्मभूमिपुटे पिचुकाल' (कर्मभूमिक नरम पैर) मे कालिय नागक मस्तक पर कृष्णक नृत्यक वर्णन अछि। 'अच्छुनुम् मकनुम्' (पिता एवं संतान) विश्वामित्र आ हुनक बेटी शकुन्तलाक काल्पनिक मिलनक वर्णन थिक। 'किलिकोंचत्म' (अस्पष्ट बोल) गाछी मे खेलाइत पाँच वर्षक सीताक चित्रण थिक। केरलक जनश्रुति पर आधारित हिनक किछु आनो कविता छनि—'आ मोतिरम्' (ओ अउंठी), 'भक्तियुम् विभक्तियुम्' (भक्ति आ विद्वता') एवं मलयालत्तिन्टे तल' (मलयालमक माथ)। ओहनो कविता सभ मे जे पुरना कथासभन पर आधारित नहि छैक, एहन संदर्भ, चरित्र ओ विम्वसभक पर्याप्त उल्लेख भेल अछि। एहन प्रसंग सभ मे कोनो ने कोनो धार्मिक पात्र होइछ। गांधीजी पर रचित अपन प्रसिद्ध कविता 'एन्टे गुरुनाथन' (हमर गुरुदेव) मे कवि कहैत छथि—

"गीताक मातृभूमिये मे
संभव थिक
एहन कर्मयोगीक जन्म
आत्म निग्रह मे कुशल एहन सिंह,
मात्र हिमालय आ विन्ध्यक मध्यवर्ती प्रदेशेमे
दृष्टिगोचर होइछ
गंगासँ सिञ्चित माटिये मे
उत्पन्न होइछ
वरदान सभसँ आच्छादित कल्पतरु।"

एकटा अन्य कविता 'पाप मोचनम्' (पाप सँ मुक्ति) मे ओ गांधीजी मे विश्वामित्र सन कठिन संन्यासवृत्ति मे अनुरक्ति, राजा जनक सन महान कर्मयोग, भीष्म-सन रण-शौर्य आ विदुरसनक लाभकारी परामर्शक प्रवीणता देखैत छथि। नीलाकाश मे फहराइत तिरंगा झण्डासभ कें देखि कवि उल्लासपूर्वक कहैत छथि- "ई पर्याप्त नहि, ई पर्याप्त नहि। देवर्षि सभकें ई झण्डा सभ ओहने आनन्द प्रदान करय, जेना वासुदेवक वक्ष पर लटकल माला सभ प्रदान करैछ।"

मगदलन मरियम (मेरी मगदलेन) मे ओ ईसा मसीह कें कृष्णक रूप मे देखैत छथि। हुनक नैतिक शिक्षा ई छनि—

"कृष्णक वंशीक मधुर स्वरक कोनो उपमा नहि भ' सकैछ आ कृष्ण त' ईसा मसीह छथि।"

हिन्दू परम्परा मे निष्णात कवि मे हिन्दू दर्शनक प्रभाव भेटब स्वाभाविक थिक। वल्लत्तोल कोनो दार्शनिक नहि छथि, वेद-उपनिषद सभक अव्यावहारिक दुनियाक अपेक्षा पुराण आ महाकाव्य सभक नाटकीय तथा जन-सम्पन्न दुनिया सँ ओ अधिक परिचित लगैत छथि, मुदा अद्वैत दर्शनक प्रभाव हुनक कविता पर निश्चिते पड़ल रहनि— कखनो वाह्य त' कखनो अन्तर्धाराक रूपमे। एकता आ समानताक प्रति हुनक विचार ईश्वर मे समस्त जीवधारीक एकरूपता सम्बन्धी आस्था सँ पोषित छल आ तैं ओ एकता एवं समानता लेल आह्वान कयलनि। 'ओणप्पुटवा' शीर्षक अपन कवितामे ओ सूर्य कें सम्बोधित करैत कहैत छथि—

"ज्ञानक मूर्तरूप
अहाँक पवित्र किरण-जाल
ब्राह्मणक फूल सँ भरल पूजा-पात्र
आ हरिजनक मड़इ मे राखल
माछ रान्हबाक मृत्तिका-पात्रकें
करैत अछि।
समाने रूप सँ स्पर्श।"

एकटा दोसर कविता 'अद्वैतम् शिवम् शान्तम' मे ओ केरल मे कोनो वर्ष आयल बाढ़ि आ अकालजन्य कष्टक वर्णन कयलनि अछि। ओ कहैत छथि जे एहि बात पर ओ विश्वास कयने बिना नहि रहि सकैत छथि जे प्रकृति अमीर-गरीबक भेद मेटौलक, ब्राह्मण आ अस्पृश्य कें समान कष्ट देल जे ओ बूझथि जे ककरो आन पर विशेष अधिकार नहि होइछ। ओ चाहैत छथि जे केरल एहि ईश्वरीय पाठ सँ लाभ उठाबय आ पावनकारक ई मातृभूमि 'अद्वैतम् शिवम् शान्तम' क अवस्था प्राप्त करय अर्थात् आत्माक पूर्ण शांति एवं सुखमय एकता प्राप्त करय। एहन विचार हुनक कवितामे कतोक बेर कतोक ठाम देखल जा सकैछ। एहन प्रतीत होइछ जे हिन्दू समाजक सुधार तथा जाति व्यवस्थाक अभिशाप सँ ओकरा बचयबाक हुनक इच्छो परम्परागत हिन्दू विचाराधारा सँ उद्भूत भेल छल।

एहि परम्परावादी आ विद्वान कवि मे स्वाभामिक रूप सँ एहन भाव-प्रकार आ जीवन-दृष्टि प्राप्त होइछ जे हिन्दू मानसक अनुकूल थिक। ओहि मे सँ एक थिक भक्ति किंवा अनुरक्ति, जे कतोक शताब्दीक शिक्षाक फलस्वरूप एकटा हिन्दूक सहज स्वभाव बनि जाइछ। भारतीय साहित्य सँ परिचित कोनो व्यक्ति वल्लत्तोलक कविता सभक स्तर तथा प्रसादगुणक आकलन क' सकैत अछि। ओहन कविता सभ थिक—'ओरूचित्रम', 'आम्पाडियिल चेल्लन्न अक्रूरन्,' 'भक्तियुम् विभक्तियुम्' आदि।

'ओरूचित्रम' कृष्णक मोहक वर्णन थिक, जे वाक्य-विन्यास मे मधुरता तथा भक्तिक गीतात्मक अभिव्यक्तिक कारण मर्मस्पर्शी अछि। बाल कृष्ण कें, जखन ओ गाय दुहैत माय पर झुकल छथि, सम्बोधित करैत कवि कहैत छथि—

"अहाँ त' ठाढ़ छी,
अपने मायक देह धयने
अहीं समस्त विश्वक छी माता-पिता।
धर्मक रक्षा लेल अहाँ लैत छी
समय-समय पर अवतार।
जानि क' मनोभाव
गोकुलक ललना सभक
पयबा लेल नेओन आ दूधक उपहार
अपन तीन डेग सँ
समस्त लोक कें नापि लेनिहार
. . . अहाँ छी नृत्यरत हुनका सभक समक्ष।
बालरूपधारी !
अहाँक अद्‌भुत लीला सभक
ने ओर अछि आ ने छोर
ओ नीलवर्ण-देह धारी !
संरक्षक छी अहाँ समस्त विश्वक
करैत छी अहाँक बन्दना हम. . . . ।"

'अम्पाडियिल चेल्लन अक्रूरन' शीर्षक कविता मे अक्रूर कें आं कृष्णक परिचय एना दैत छथि— "हे चातक पक्षी, यैह ओ नील मेघ थिक, जकर अहाँ बाट तकैत रही।" आगाँ ओ एकटा सुन्दर वर्णन प्रस्तुत करैत छथि—

"नन्दक घर मे भगवानक जराओल
सुन्दर दीप थिक ई।
धन्या यशोदाक छाती पर जगमगाइत
माहेन्द्र नील मणि थिक ई।
एक सँ दोसर लता पर फुदकैत
मनोहर पक्षी थिक ई
लता जे गोपी थिक
कालिन्दीक पुलिन सभ पर खेलाइत
कारी हंस थिक ई
गोप-बाल सभक
स्नेहपात्र सखा थिक ई।
आ वेद-निष्णात सभक
परम तत्व थिक ई।"

चाहे वल्लत्तोल अपन मातृभूमिक वर्णन करैत होथि, जकर ओ आदर करैत छथि किंवा कोनो नदी वा पर्वतक वर्णन करैत होथि, जकरा ओ सिनेह करैत छथि, अथवा कोनो महान पुरुषक वर्णन करैत होथि, जनिका ओ सम्मान दैत छथि—श्रद्धाक यैह स्वर सर्वत्र अनुभव कयल जा सकैछ। गांधीजी पर लिखित कविता सभ मे भक्तिक कारण हुनक अभिव्यक्ति अत्युक्तिपूर्ण भ'जाइत छनि। 'पापमोचनम्' शीर्षक कवितामे वैक्कम सत्याग्रहक काल मे गांधीजीक सान्निध्यक वर्णन ओ एहि तरहें करैत छथि—

''दूर सँ झाँकय लगलीह उषा
चमकि रहल छल प्रसन्नतासँ
जनिक रक्तिम कपोल
परिपूरित भ' रहल छल श्रद्धाक नोर सँ
नभ-मण्डलक समस्त दिशा सँ छलकल
ओसक कण
एकबेर फेर
नव बुद्धक दर्शनक उत्कण्ठा संग
सभ ठाम पसरल छल
जागृति एवं प्रकाश
क' सकलहुँ दर्शन हम
गुरुदेवक चरण-युगलक
निकट हम रही उपस्थित
मानव रूप मे अवतरित एकटा तेजपुंजक।''

कवि आगाँ सखेद कहैत छथि—

''भीड़क कारण हाय !
पाबि नहि सकलहुँ हम सुयोग
नत होयबाक
हुनक चरण मे।
कतेक पैघ पापात्मा छी हम
जे काशी जाइयो क'
क' नहि सकलहुँ हाय !
गंगा मे स्नान।''

विनय, संस्कृति, आदर, प्रेम आदि कतोक भावक मिलल-जुलल रूप थिक भक्ति जे अपन आराध्यक सान्निध्यमे सौन्दर्य वा सदगुण कें परम रूप द' दैत अछि। परिवर्तनक यैह रूप वल्लत्तोलक कतोक कविताक सामान्य स्वभाव थिक।

संस्कृत आ मलयालमक अधिकांश प्राचीन कविता मे क़विक ईश्वरीय भक्ति जीवनक एकटा गंभीर आ प्रसन्नतापूर्ण उत्तेजना संग मिझरायल भेटत। जीवन मे तीव्र इन्द्रियजन्य आनन्द, प्रकृतिक सौन्दर्य मे आह्लाद, सम्बन्ध सभक प्रति आत्म-विश्वासी सुख—यैह भारतीय मानसक प्रकृत स्वभाव थिक। परम योगी-लोकनि आ कट्टर धर्मावलम्बी सभकें छोड़ि क' एहन प्रवृत्ति भिन्न-भिन्न अनुपात एवं भिन्न-भिन्न संयोग मे भास आ कालिदास-सन पुरान कवि वा रवीन्द्रनाथ ठाकुर सदृश आधुनिक कविगण किंवा वल्लत्तोल सन सीमित वातावरणक कवि सभ मे देखल जा सकैछ। वल्लत्तोलक इन्द्रिय सुखपरायणता एहि तथ्य दिश इंगित करैत अछि जे ओ भारतीय काव्यक मुख्य धाराक अंश छथि। ई ऐन्द्रियता मलयालम कविता मे सदा-सर्वदा परखल जा सकैछ, मुदा चूरूशेरी आ कुंचन नमियारक बाद एतेक अधिक परिमाण मे वल्लत्तोलेक रचना मे उपलब्ध होइछ। अपन 'सांध्य-अटन' शीर्षक कविता मे ओ कहैत छथि—

"ओ विश्व !
भरलो छी यदि अहाँ दुखक आधिक्य सँ
तइयो के होयत एहन सहृदय
रखैत हो अन्तर मे जे
अहाँक प्रति वितृष्ण-भाव
अहाँक विस्तार मे
एतेक रास रमणीय स्थल
तइयो के क' सकैत अछि
अहाँ सँ घृणा
जखन कि दृष्टिगोचर होइछ
अहाँ मे एतेक सुन्दर दृश्य . . . ।"

एहन मनोहारी दृश्यक आनन्द हुनक कविता मे सर्वत्र उपलब्ध होइछ। अपन कविताक एक स्रोत हुनका प्रकृतिक सौन्दर्य मे भेटैत छनि—

"कोकिलक हर्षित कण्ठ मे
पबैत छी अहींकें हम गबैत
उत्कण्ठित पवन द्वारा चुम्बित
पुष्पलताक गुल्म मे
देखैत छी अहींकें हम नृत्यरत।
फलसभक मधुकोश मे
सुनैत रहैत छी हम
अहींक प्रमुदित स्वर।
नहि कोनो आन वस्तु
अछि एहि दुनिया मे

एतेक सुन्दर आ आनन्ददायक
जतेक होइत अछि।
अहाँक लीलाक अरुणोदय।"

मूल कविताक श्रृंगारिक अभिव्यंजना एहि अनुवादमे नहि आबि सकल अछि। समस्त आदर्शवादिताक अछैतो हुनका कवितामे मूलभूत पार्थिवता देखबा मे अबैछ जे हुनक प्रकृतिपरक कविता सभ मे परिष्कारक संग प्रकट भेल अछि।

संस्कृत आ मलयालमक अधिकांश काव्य-रचना मे देखार विलासिता कविताक स्वभाव जकाँ देखबामे अबैछ। शारीरिक सौन्दर्य सँ उत्तेजित उत्कट आसक्ति मे प्रेमक सरलीकरण आ रमणीक विविध, विशद एवं बहुरूपी भव्य वर्णन अधिकांश कवि मे उपलब्ध होइछ। वल्लत्तोल एही परम्पराक कवि छथि। हुनक कतोक कविता मे शुद्ध श्रृंगार भेटैछ जा नारी-सौन्दर्यक पारम्परिक चित्रणक पुनरावृत्ति मे हुनका आनन्द प्राप्त भेलनि। कारी मेघ-सन केश-जाल, पैघ-पैघ कारी आंखि, कमल किंवा चन्द्रमा-सन मुंह आ गोल-गोल छातीक हुनक रचनामे अभाव नहि छनि। अपन 'संध्या' नाम कविता मे प्रार्थनारत मुसलमान स्त्रीक लावण्य दिस कवि बेर-बेर पाठकक ध्यान आकृष्ठ करैत छथि। एतेक धरि जे ओहि नारीक तरबा ओकर नितम्बक स्पर्श करैछ आ प्रवाल सदृश ओकर हाथ ठेहुन पर ढाकनि जकाँ राखल छैक (से कहब ओ नहि बिसरैत छथि)। हुनक पारम्परिक विम्ब आ दृष्टिकोण एहि तथ्य दिस इंगित करैछ जे ओ श्रृंगारक प्राचीन काव्य-परम्पराक कवि छथि। 'हमर कविता' कि 'रावणक अन्तःपुर गमन'—सन कविता, यद्यपि ई दुनू वस्तु आ शैली मे एक दोसरा सँ भिन्न छैक, जीवन मे कविक इन्द्रिय सुख-बोधक नीक उदाहरण अछि। ओ अपन कवि-प्रतिभा सँ कहैत छथि—

"कविते !
करैत छी हम अहाँक रमणीय रूपक दर्शन
प्रतापी भट'क
तरुआरिक संचालन सँ
छिटकैत तड़ित-ज्योति मे,
मृगनयनी बाला द्वारा
अपन मनमोहन दिस कयल दृष्टिपातमे,
किलकारी भरि-भरि खेलाइत बच्चाक
स्वेद-कण-राजित
अरुण कपोल मे।"

एकटा दोसर कवितामे रावण अपना सम्मुख प्रस्तुत मनोहर दृश्यक वर्णन एना करैछ—

"जरि रहल अछि शताधिक स्वर्ण-दीप
जौंआ-पाँति बना हमरा सम्मुख

स्तनभारावनता रमणीक हाथ मे
शोभित ई दीपावलि
वना रहल अछि राति कें दिन
आ काकु क' रहल अछि परस्पर
. . . . . .
साधि रहलि अछि
वीणाक तार
कोनो रमणी अपन कोमल कर सँ
दोसर पीसि रहलि अछि चानन
अपन आन्दोलित नितम्ब संग
तेसर मृगनयनी बाला
भरि रहलि अछि चषक मे मदिरा
मधुर-मधुर अछि व्याप्त
मन्दोदरीक भवन मे सर्वत्र।''

संस्कृत काव्य-साहित्य सँ परिचित व्यक्ति एहि तथ्य सँ अवगत होइत छथि जे प्राचीन सभ्यता कोन प्रकारें भक्ति, श्रृंगार, जीवनक इन्द्रिय-जन्य समर्पण आ दार्शनिक स्थैर्य-सन विषम भाव सभक बीच सामंजस्य स्थापित कयल। वल्लत्तोलो मे ककरो प्राचीन सभ्यताक एहि रासायनिक प्रक्रिया सँ उत्पादित वस्तु उपलब्ध भ'सकैछ।

वल्लत्तोल शास्त्रीय कविताक पाठशाला मे दीर्घ प्रशिक्षण प्राप्त कयने रहथि आ हुनक सभ श्रेष्ठ कविता काव्य-शिल्पक उत्तम उदाहरण थिक। हुनक प्रत्येक कविता मे शास्त्रीयताक प्रायशः दर्शन होइछ जेना कि संस्कृतनिष्ठ पदावली आ संस्कृत-छन्द सभक प्रयोग किंवा परम्परागत विम्बक लगातार उपयोग। एहन विम्ब सभमे चातक आ वर्षाक मेघ-खण्ड, सूर्य आ कमल, समुद्र आ ओकर पत्नी नदी, पुष्प-शय्या-शायी वसन्त, लता-वेलिसभक नाच आ ओकर तन्तु सभक नृत्य-मुद्रा, चन्द्रमा द्वारा बूनल श्वेत रेशमी वस्त्र आ थानक खेत मे पसरल हरित परिधान गनाओल जा सकैछ। शास्त्रीयताक अन्य प्रधान लक्षण शब्द-विन्यास आ कवित्वक पूर्णता थिक, जे हुनक अनेक कविता मे दृष्टिगोचर होइछ। हुनक कविताक गुण कोनो अनुवाद मे प्रकट नहि कयल जा सकैछ। 'शिष्यनुम मकनुम' क कोनो छन्द किंवा 'किलि कोंचल' क कोनो खण्ड अथवा 'ओरू चित्रम' क कोनो अंश ध्वनि, अर्थ आ तालक पूर्ण सामंजस्य तथा शब्द-चयनक अचूक सौन्दर्यक उदाहरणक रूपमे द्रष्टव्य थिक। एहि कविता सभ कें कोनो विशिष्ट रूप सँ पृथक कयल उदाहरण नहि मानि हुनक कविताक सामान्य नमूना कहल जा सकैछ। सौन्दर्य नामक शास्त्रीय गुण मे आधुनिक कविगणक बीच वल्लत्तोल अद्वितीय छथि। अपन कविताक स्वस्थ स्थूलताक दृष्टि सँ ओ एकटा शास्त्रीय कवि छथि। ओ कखनो अपन काव्य पंक्तिकें मात्र शब्द सँ नहि पाटैत छथि, अपितु अपन शब्द, बिम्ब आ

चित्रण मे हुनका परम आनन्द प्राप्त होइत छनि तथा अपन कविता कें ओ विषयासक्त आ वस्तुनिष्ठ स्वरूप प्रदान करैत छथि। हुनक अधिकांश कविता आकार मे छोट छनि, परंच ओ सभ अपन आकार सँ पृथक् पूर्णताक आभास दैत अछि। विम्बक बहुलता-विशेषतः उपमा तथा वैविध्यपूर्ण विवरण पर आधारित वर्णन एहि तरहक आभास हेतु प्रधान उपकरण बनैछ।

शास्त्रीय कविता मे परम्परागत विश्वासक मर्म प्राप्त छैक, ओहि मे परम्परागत मूल्य आ दृष्टिकोणक समावेश भेल छैक। ओहि मे रूढ़ि सभ सँ बनल अन्योक्ति (मोहावरा) छैक त' सुशिक्षित पीढ़ी सभ द्वारा श्रमपूर्वक रूपायित शिल्पो छैक। मलयालम कविताकें ई गौरव प्राप्त छैक जे ओ शास्त्रीय ग्रंथ आ शास्त्रीय परम्परा सभक निर्माण कयने अछि। शास्त्रीय कवि सभक परम्पराक अन्तिम कड़ी प्रायः वल्लत्तोल छथि। ओ जाहि परम्पराक प्रतिनिधित्व कयलनि, ओ अपन प्राचीन अनात्मज्ञानी सहजता संग जारी नहि रहि सकल। अपन कलाक श्रेष्ठतामे ओ एकटा शास्त्रीय कवि छथि आ इतिहास मे आइयो ओ प्राचीन भारतीय शास्त्रीयताक किछु आधारभूत प्रवृत्तिक प्रतिनिधि छथि।

राष्ट्रीयताक कवि

जखन गांधीजीक नेतृत्व मे स्वतंत्रताक संग्राम जोरदार ढंग सँ चलि रहल छल, तहिया वल्लत्तोलक अवस्था चालीस वर्ष सँ किछु अधिक रहनि। असहयोग आन्दोलनक आरम्भक संग संघर्ष कैं नव गति प्राप्त भेलैक। प्रत्येक भारतीय ओहि सँ प्रभावित भेल आ सामान्य जनताक उत्साह सँ भारतक कोन-कोन आन्दोलित भ' उठल। वल्लत्तोल ता धरि सुखपूर्ण आ शांतिमय जीवन व्यतीत क' रहल छलाह। ओ किछु वर्ष पूर्व 'भारत चक्रवर्ती पंचकम्' नामसँ भारत सम्राटक संस्तुतिमे पाँच टा पद्य लिखने रहथि। ओ राजधर्म आ प्रजाधर्म सँ आगाँ बढ़ि राष्ट्रक प्रति गांधीजीक आह्वान सँ पूर्णतः प्रभावित भ' गेलाह। शीघ्रे ओ उत्तेजना-परिपूरित देशभक्तिक कवि भ' गेलाह।

देशप्रेम आ राष्ट्रीयता विषयक हुनक कविता सभ अपन गुणवत्ता, अपन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि आ प्रेरणादायक उन्मेषक कारण प्रमुख रूप सँ महत्वपूर्ण अछि। मातृ-भूमिक प्रति भक्ति-भावना सँ भारतीय राष्ट्रीयताक प्रथम सोपान तैयार भेल। कोनो राष्ट्रीय भावनाक कविता बहुलांशमे एकटा धार्मिक स्तवन जकाँ पढ़ल जाइछ। एहन भावात्मक दृष्टिकोणक सर्वोत्तम उदाहरण बंकिम-चन्द्र चट्टोपाध्यायक 'वन्देमातरम्' थिक। कालगणनाक दृष्टि सँ वल्लत्तोलक कविता सभ यद्यपि परवर्त्तीकालक थिक, तइयो हुनक कतोक कविता राष्ट्रीयताक अही युगक रचना थिक। हुनक 'मातृवन्दनम' (माताकं वन्दना), जे कि केरल पर लिखल गेल अछि, मातृभूमिक पूजाक एकटा सुन्दर उदाहरण अछि। ई कविता सन् 1918 मे लिखल गेल छल। कविता वन्दना एवं संस्तुतिक संग आरंभ होइत अछि—

"माताक वन्दना करू
करू माताक वन्दना
ओहि वरेण्याक वन्दना करू
करू ओहि वरदाक वन्दना
सत्राजित कैं स्यमन्तक मणि सूर्य जे दान देल
ओहिना जमदग्नि-सुत परशुरामकैं
दान देल सागर भूमि
की नहि थिक एकटा अमूल्य रत्न

ओहि सहस्त्रांशु-सूर्य द्वारा दान देल-रल-सन
दान जे देल गेल पूर्वक नृपति सत्राजितकेँ ?
उत्कर्षक देवी सागर-जनताक करू वन्दना
राखि अपन माथ जे
हरित वसन सह्य पर्वत पर आ पसारि अपन पैर
सागरक वालुकामय किनार धरि
क' रहलीह अछि विश्राम
अभ्यर्थना मे ठाढ़ जनिक दुनू भाग
देव गोकर्ण आ देवी कुमारी
माताक वन्दना करू
करू माताक वन्दना
ओहि माताक करू बन्दना
जकर पूजा करैत छथि देवगण।
जकर पूजा करैत छी हमरा सभ।''

तकरा बाद कवि केरलक अतीत गौरवक वर्णन करैत अन्त मे देशभक्तलोकनिक कर्त्तव्य दिस संकेत करैत छथि—

''गाताक वाणी हो हमरा सभ लेल साक्षात् वेद
हुनक सेवे हो हमरासभक सभसँ पैघ यज्ञ
अर्पित हो हमरा सभक जीवन माता लेल
बन्धुगण ! एहि मातासँ पैघ
के थिक एहि दुनिया मे देवता ? . . ."

कवि द्वारा पूजित केरल आ भारत-भूमि मात्र सुन्दरताक देशेटा नहि, अपितु महामुनिगणक जीवन आ आत्मा द्वारा पवित्र कयल नव चेतना आ महान ईश्वरीय परम्परोक देश थिक। आर्ष भारत हुनक पवित्र देश छनि आ जखन कखनो ओ भारतक सम्बन्ध मे विचार करैत छथि, तखन ओ भारतक महापुरुषो सभक सम्बन्ध मे सोचैत छथि। हुनक देश प्रेमक रंग राजनैतिक नहि भ' क' धार्मिक आ आदर्शमूलक छनि। 'नमूते मारूपति' (हमर उत्तर) शीर्षक कविता मे ओ कहैत छथि—

''भारत हमर देश थिक
हमरा सभक पूर्वज महामुनिगण
शांति छलनि जिनकर सम्पत्ति
हमरा सभक परम्परागत गुणवत्ता
उपनिषद् आ गीता थिक
जे सभ अछि चैतन्य-रविक
उदय-कालक रश्मि

तीनू एहि लोकमे
हमरा सभक कामना थिक
शाश्वत मोक्ष टा।''

'कोचु सीता' (छोट वयक सीता) शीर्षक कविता मे भारतक श्रेष्ठताक अभ्यर्थना—

''कतेक चमत्कारपूर्ण थिक अहाँक श्रेष्ठता !
युद्ध क्षेत्रमे निष्काम कर्मयोगक आवाहन
शिकारीक पर्णकुटी मे संतक सम्पत्ति
वेश्योक बस्तीमे सच्चारित्र्यक सुगंधि !''

'मलयालटिन्टे तल' (केरलक माथ) शीर्षक कविता मे शंकराचार्य ओहि कापालिक सँ, जे अपन देवीकेँ चढ़यबा लेल हुनक माथ काटय चाहैछ, कहैत छथि जे हुनक वध करबामे ओ संकोच नहि करय—

''की रहथि नहि कर्ण हमरा सभक पूर्वज
जे उतारि अपन देहक कवच
तानि देलनि अपन वक्ष मृत्युक आघात लेल
त'फेर किएक करैत छी अहाँ
अपन कर्त्तव्य सँ विमुख हमरा ?
की नहि रहथि जीमूतवाहन
हमरा सभक नृपति
जे अपन स्वस्थ आ सुन्दर देह
बचयबा लेल एकटा सर्पक जीवन
अर्पित क' देलनि गरुड़क चोंच केँ ?
राजा शिवि काटि अपन देहक मांसु,
की अर्पित नहि क'देलनि चिल्ह केँ
रक्षा करबा लेल
कोनो कपोतक प्राण ?
हुनक देह सँ स्रवित रक्त
बनि क' सिन्दूरक रेखा
एखनो अछि दीपित होइत
हमरा सभक देशक सीथ मे।''

अहिंसा, स्नेह, आत्मत्याग, दार्शनिक चिंतन आदि जाहि गुण सभ लेल हमरा सभक भारतीय ऋषिगण जीवित रहैत छलाह, ओहि सभक प्रशंसा वल्लत्तोलक कविता मे सर्वत्र भेटैछ। गांधीजीक हुनक आराधनाक मुख्य कारण इएह छल जे हुनका मे ओ प्राचीन भारतीय आदर्शक मूर्त्तरूपक दर्शन कयलनि। 'एण्टे गुरुनाथन' (हमर गुरुदेव) शीर्षक गांधीजी पर लिखल हुनक विख्यात कविता मे एहि अवस्थाक विकास देखल जा सकैछ—

"समस्त विश्वे छनि हुनक घर,
गाछ, घास आ कीट धरि
हुनक बन्धु-बान्धव छनि,
त्यागे छनि हुनक सम्पत्ति,
विनये छनि हुनक महानता,
एहन छनि हमरा गुरुक गौरव
जे स्वयं छथि योगक सार तत्व
आकाश भने ताराक माला पहिरय
वा मेघक कालिमा सँ भ' जाय श्याम
दुहू स्थिति मे रहैत अछि ओ
निस्संग आ निर्लिप्त
ओ सभ काल रहैत अछि स्वच्छ
हमर गुरुओ छथि
ओही आकाशक समान
यदि चाहैत छी देखय अहाँ
एके व्यक्तिमे पुंजीभूत
ईसा मसीहक त्याग
भगवान कृष्ण द्वारा कयल
धर्मरक्षाक उपाय
बुद्धक अहिंसा
आ शंकराचार्यक मेधा-शक्ति
रन्तिदेवक दया
कि हरिश्चन्द्रक सत्य
वा मुहम्मदक स्थैर्य
त' जाउ अहाँ देखि आउ
हमर गुरुदेवक चरित्र।"

ई स्वाभाविके थिक जे जखन वर्त्तमान दुःखपूर्ण आ अन्धकारमय हो, तखन मनुष्य प्रकाश आ साहस लेल अतीतक दिस घुरैत अछि। मुदा वल्लत्तोलमे एहि सँ अधिको किछु छनि। अतीत सँ तथा अतीत सँ वर्तमान धरि ओकर निरन्तरता सँ ओ वर्त्तमाने कें अधिक महत्व दैत छथि। भारत जकरा स्वाधीनता मे जीवित रहबाक चाही, उयाह ओ भारत थिक जकरा एकटा गांधी उत्पन्न करबाक नैतिक बल छैक आ ओ नैतिक सामर्थ्य अतीतेक आधार-शिला सँ निरन्तर प्रवाहित होइत अछि। ओ भविष्य जकर निर्माण हमरा सभ कें करबाक अछि, ओ अतीतेक आदर्शक मूर्त्तिमान प्रतिरूप होयत ! पोरा पोरा (पर्याप्त नहि पर्याप्त नहि) शीर्षक कवितामे, जे कि भारतीय तिरंगा झडांक

सलामी पर लिखल एकटा उल्लासपूर्ण कविता थिक, कवि झंडा सँ कहैत छथि जे अहाँ ओहि स्वर्गवासी लोक सभ कें धैर्य प्रदान करैत फहरायब जे धर्मक हानि देखि दुःखी भ'गेल छथि। झण्डा पर अंकित चिह्नक तुलना श्रीकृष्णक सुदुर्शन चक्र सँ कयल गेल अछि जे अनिष्टक गर्दनि छोपैत अछि।

विदेशी आधिपत्य सँ मुक्तिक वल्लत्तोलक कामना आंशिक रूप सँ पश्चिमी सभ्यताक प्रति हुनक विरोध आ अविश्वासक कारण थिक। 'ओरू कृष्णप्परून्ति नोडु' (एकटा कारी बाज सँ) तथा 'निंगल तन पोवकु विपरीत माकोला' (अहाँक गति विपरीत नहि हो) शीर्षक अपन दुनू कविता मे ओ अपन एहि भावनाकें खुलि क' प्रकट कयलनि अछि। पश्चिमी सम्यताकें ओ सतही मानैत छथि। पश्चिम दिश अभिमुख लोक सभसँ ओ कहैत छथि—

"की ई संभव थिक ओ चतुर लोक !
जे क' देने अछि मोहित
पश्चिम दिशाक आकाशक उर्म्मि-रेखा
ओ जे रंगीन आभा अहाँ देखि रहल छी
एकटा नष्टप्राय आकाशक अंतिम दीप्ति थिक
हमरा सभकें जयबाक अछि ओहि ठाम
जतय प्रतिदिन होइछ अरुणोदय
ई त' थिक अन्धकारक प्रकृति
जे अस्त होइत पश्चिम दिस अभिमुख होइछ।"

वल्लत्तोल विदेशी पश्चिमी सभ्यताक दुष्प्रभाव सँ देशक मुक्तिक लेल राजनैतिक स्वाधीनताक कामना कयलनि। मुदा स्वाधीनताक हुनक आदर्श मात्र चिकित्सकीय नहि छल। हुनक नजरि मे स्वाधीनताक एकटा निश्चित मूल्य छल जे आत्माक मुक्तिक अंतिम आदर्शक विश्वजनीन पर्याय छल। राजनैतिक पराधीनता आ आध्यात्मिक अज्ञान के परिभाषित करबा लेल ओ जाहि विम्ब सभक प्रयोग करैत छथि से हुनक कतोक कविता मे एके रंग छनि— अंधकार वा राति। हुनक एकटा प्रसिद्ध कविता 'पारवश्यम्' एहि तरहें आरंभ होइछ—

"की हमरा देशक लेल बरोबरि रातिये रहत ?
की नहि होयत अरुणोदय कहियो हमर एहि क्षेत्र मे ?"

एकटा दोसर 'कालममाटी' (समय बदलि गेल) शीर्षक कविता मे स्वाधीनताक अरुणोदयक चित्रण ओ राति आ भोरक ताराक रूपक-योजना सँ करैत छथि—

"भागि गेल अन्धकारक
जंगलक झोंझि मे
पहिने सँ नुकायल हमरा देशक नैसर्गिक शोभा
प्रकट भ' गेल अछि आब

उतारि क' फेकि देलक अछि पूर्व दिशा
अपन दीनताक कारी कम्बल आब
आ धारण क' लेलक अछि
रेशमी परिधान,
आलसी जागि उठल अछि
आ अपवित्र भ'गेल अछि पवित्र
अशांतिक भ' गेल अछि
शांति मे रूपान्तरण
कतेक बदलि गेल अछि समय आब।"

ओ स्वाधीनताकेँ एकटा एहन उत्तराधिकार मानलनि अछि जे युवा वर्ग केँ देल जयबाक चाही। पैघ लोक सभक कर्त्तव्य थिक जे ओ युवावर्गक पथ प्रशस्त करथि। 'हमर उत्तर' शीर्षक कविता मे ओ कहैत छथि—

"एहि बात सँ निरपेक्ष रहि
जे हम लक्ष्य धरि पहुँची वा नहि
आ कि बाटे मे करी मृत्युक वरण
हम निरन्तर बढ़ैत जायब आगाँ दिस
कूचैत बाटक सभ काँट-कूस
एहि उद्देश्य सँ
जे हमरा पाछाँ अबैत
युवा वर्गक कोमल पैर केँ
नहि हो कोनो पीड़ाक अनुभव।"

वल्लत्तोल गांधीजीक अधिकांश कार्यक्रमक उत्साही अनुसरणकर्त्ता रहथि। केरल मे एहन कोनो आन कवि नहि छथि जे खादीक प्रचार लेल उदारतापूर्वक अपन कलमक उपयोग कयलनि। 'चक्रगाधा' (चरखा गाथा) आ "खादी वसनंगल कालकोलविन इवेरम" (सभ क्यो खादी पहिरथि) शीर्षक दुनू कविता कोनो समय मे बहुत लोकप्रिय भेल रहय।

हिन्दू समाजक सुधार राष्ट्रीय आन्दोलनक एकटा अंग छल। हरिजनोद्धारक लेल चलाओल गांधीजीक कार्यक्रमसभ एवं जाति प्रथाक विरुद्ध हुनक निरन्तर धर्मयुद्ध कट्टरताक नैतिक आधार केँ हिलाक' राखि देने छल। वल्लत्तोल गांधीजीक शिक्षा सँ अत्यधिक प्रभावित भेल रहथि, जे हुनका दृष्टि मे हिन्दू धर्मक नैतिक सिद्धान्तक सातत्य तथा सजीवीकरण छल। अपन अनेको कविता मे ओ हिन्दू समाजक असमानताक विरूद्ध रोष प्रकट कयलनि। "ऐक्यमे सेव्यल सेव्यम्" (एकते सभ सँ पैघ सेवा थिक) शीर्षक कविता मे ओ जोर द' क' कहैत छथि—

''घोर मूर्खता संग,
जा धरि हम सभ कहैत रहब
'हमरा लग नहि आ
नहि छू हमरा'
आ भगबैत रहब अपना कें
ता धरि हमसभ नहि सुनब
हिन्दू धर्मक सुगीत,
ता धरि अपने देशमे निर्वासित हम सभ
नहि घुरि सकब अपन देश।''

'परस्परम् सहायिप्पिन' (एक-दोसराक सहायता करू) शीर्षक अपन कविता मे ओ चेतावनी देलनि जे जा धरि हम सभ छोट-छोट दल मे बँटि क' एक दोसराक टांग खींचैत रहब, ता धरि हमरा सभक गुलामीक बेड़ी आर कसाइत रहत। ओ अपन केरलवासी बन्धुगण कें बुझबैत छथि जे हुनक माये एहन विशाल-हृदया छथि जे एकटा निम्नजातियोक मड़इ मे वेदक ज्योति जरौलनि अछि। एहि तरहक भाव हुनक कविता सभ मे पर्याप्त भेटैछ। हरिजन सभ लेल मन्दिरक पट खोलयबाक लेल भेल वैक्कुम सत्याग्रह पर लिखल हुनक 'पाप मोचनम्' (पाप सँ मुक्ति) शीर्षक कविता मे ओ सत्याग्रही सभ दिस इंगित करैत कहैत छथि—

''पान क' ई पवित्र जल
जे एहि धर्मयोद्धासभक
श्रम-स्वेद थिक
दूर भगा दिअ ओहि महापापकें
मनुक्ख सँ मनुक्ख कें
पृथक् करैत अछि जे।''

प्रत्यक्षतः आदर्शवादी कविता सभक अतिरिक्त जाति-पातिक विरूपता पर काकु करैत वल्लत्तोल एकटा छोट-छिन वर्णनात्मक कविता लिखने छथि। 'शुद्धरिल शुद्ध' (मूर्खो मे महामूर्ख) शीर्षक कवितामे ओ राति मे एकटा घर मे आगि लागि जयबाक दृश्यक वर्णन करैत छथि। ओ एकटा उच्च वर्णक हिन्दू नायरक घर थिक। आगिक धधरा घरक ऊपर धरि धधकय लगैछ, मुदा सौभाग्य सँ घरक लोक सभ बहरा जाइछ। आगि लागल देखि आगि मिझयबालेल सभ सँ निम्नजातिवलाक भीड़ एकत्र होइछ आ ओहि मे सँ किछु गोटे पानि अनबा लेल इनार दिस बढ़ैत अछि, परंच गृहस्वामी कुपित स्वर मे ओकरा सभकें रोकैछ—

''यदि भ' जाइछ भस्म
हमर घर अग्नि-ज्वालामे
त' होबय दैह

मुद्रा तों सभ नहि करह किन्नहु
अपन सीमाक अतिक्रमण
नहि करह इनार हमर अपवित्र।''

कवि एहि प्रसंग मे आगाँ टिप्पणी करैत छथि—

''हे नायर,
वास्तव मे छी अहाँ
अबोधो मे अवोध।
की भेलैक जँ घर अहाँक
भ' गेल जरि क' भस्म
बचा त' लेल अहाँ
अपन अमोल जाति!

ई आश्चर्यक गप्प थिक जे वल्लत्तोल सन परम्परावादी व्यक्ति जाति-व्यवस्थाक घोर विरोध लेल प्रस्तुत भ' गेलाह। अपन 'जातिप्रभावम्' (जातिक प्रभाव) शीर्षक कवितामे ओ उच्च वर्ण मे उत्पन्न कन्या गौरीक कथा कहैत छथि जे सम्पन्न, सुन्दरि आ शिक्षिता छलीह आ जे निम्न जातिक एकटा अशिक्षित मजूर भैरव सँ प्रेम क'तकरा संग विवाह क' लैत छथि। दुर्भाग्यवश ई दम्पति दरिद्र भ' जाइछ, आ पति अस्वस्थ भ' मरि जाइछ। गौरी भिखारि भ' जाइत छथि आ हुनक जीवन हुनक रूपे जकाँ दीनतापूर्ण भ' जाइछ। एहना मे ओ एकबेर अपन पिताक घर जाइत छथि त' सम्पूर्ण परिवार कुपित भ' जाइछ आ हुनका भगा देल जाइत छनि। न्यूनाधिक नाटकीयता संग कवि हमरा सभकें गौरीक परिजनक हृदयहीनता आ अभद्रताक परिचय दैत छथि। ई कविता यद्यपि पाठक मे आलोचनात्मक रुचि कम जगा सकल, तथापि ई एकटा महत्वपूर्ण कविता थिक, कारण जे एहि मे एक वास्तविक स्थितिक यथार्थ चित्रण अछि आ बदलैत समाजक तात्कालिक समस्या दिस संकेत करैत अछि। संगहि ई वल्लत्तोलक मानवीयताक स्पष्ट प्रमाणो थिक।

वल्लत्तोल अपना समयक एकटा आर प्रासंगिक विषय पर कविता लिखलनि—ओ छल हिन्दू आ मुसलमान बीच सामंजस्य पर। एहि समस्याक प्रति हुनक दृष्टिकोण आदर्शवादी एवं भावुकतापूर्ण छलनि। 'भाइ लोकनिक बीच ई झगड़ा नहि, प्रेमक उत्पात मात्र थिक'—एहन काव्यात्मक उक्ति सँ ई तथ्य प्रमाणित होइछ। तइयो हुनक कल्पनाश्रित सोच सँ किछु रत्न उत्पन्न भेल ! ओ हिन्दू लोकनिक ध्यान ओहि मानवीय मूढ़तादिस आकृष्ट करैत छथि, जे गो-हत्या रोकबा लेल मनुष्यक हत्या करैछ आ बाजा तथा संगीतक विरोध कयनिहार मुसलमान सभसँ ओ पुछैत छथि—

''यदि अल्लाह वस्तुतः करैत छथि विरोध
वाद्य-यंत्रक आ संगीतक
त' ई कोना संभव होइछ

जे समुद्र बजबैत अछि अपन नग़ाड़ा
आ कोइली गबैत अछि गान ?'

वल्लत्तोल कें साम्प्रदायिक झगड़ा किंवा जाति-प्रथाक कुरूपता राजनैतिक स्वाधीनताक आदर्शक अनुसरण सँ विलग नहि क' सकैछ। वेर-बेर प्रस्तुत ई तर्क जे अपना मे विभक्त ई देश स्वाधीनताक योग्य नहि थिक कि पद-दलित जाति सभ लेल राजनैतिक स्वतंत्रता अयथार्थ होइछ, वल्लत्तोलक मोन मे थोड़बो आशंका उत्पन्न नहि क' सकल। अपने 'पारवश्यम' आ 'हमर उत्तर' शीर्षक कवितामे ओ एहन मिथ्या तर्कक उपयुक्त उत्तर देने छथि। कविक कहब छनि जे 'डेरायल मनुक्ख कें अपन छाया सँ भय होइत छैक।' जड़ि कें ओ चिन्हलनि। भये एकर कारण थिक आ ई भय तखने जायत जखन राजनैतिक स्वाधीनता प्राप्त होयत। जखन स्वामी श्रद्धानन्दक हत्या कोनो अनुदार उन्मत्त मुसलमान द्वारा क' देल गेल त'ओ खिन्न तथा हतोत्साह भइयो क' शीघ्र स्वाधीनता लेल अनुनय कयलनि। ईश्वर सँ अपन प्रार्थना मे ओ इयैह कहलनि जे' एहि असह्य पराधीनता सँ एखने मुक्ति दिअ।' जाति-प्रथा-सन पारम्परिक बेड़ी सँ ओ नहि डेराइत छथि। ओ सोचैत छथि जे ई बेड़ी सभ स्वतः टूटि जायत यदि किछु पैघ डेग उठाओल जाय।

हुनक राष्ट्रीय भावनाक कवितासभमे 'पारवश्यम्' (पराधीनता) एकटा सशक्त कविता थिक। स्वामी श्रद्धानन्दक हत्या सँ उत्पन्न अत्यन्त दुःखद मनःस्थिति मे एहि कविताक रचना भेल। वल्लत्तोल एहि घटना कें एकटा राष्ट्रीय शोकक रूप मे देखलनि— राष्ट्रक आत्माक पराजयक रूपमे देखलनि। ओ देशक पराधीनताक लेल विलाप करैत कहैत छथि—

"की ई थिक एहन ग्रहण
जकर कोनो उग्रास नहि
जे ग्रसि लेने अछि हमर मनोहर चन्द्रमा कें ?
की भेटतैक नहि वर्षा कहियो
एहि सुखायल धारकें
जकर पानि अछि सुखा देल गेल
जरैत सूर्यक उत्ताप द्वारा ?
की शिशिर द्वारा नष्ट कयल
हमर एहि फुलवाड़ीक
सुधि नहि लेत कहियो वसन्त ?'

निष्फल उद्योगक प्रति व्यक्त कविक दुःख एहि पाँती सभमे देखल जा सकैछ—

"कतोक तरहक रोग सँ ग्रस्त देह
आ दीर्घ-दीनताक संग
कहिया धरि ऊघैत चलब

हमसभ एहि पराधीनताक बोझ ?
जतबा डेग हमसभ बढ़वैत छी आगाँ
ओतवे पाछाँ जयवा लेल
हमसभ छी अभिशप्त
हम सभ नहि क' सकैत छी आव
निष्फल श्रम
दुखाइत अछि पैर हमरा सभक
भ' गेल छी वस्तुतः हमसभ कोल्हुक वड़द।''

एहि तरहक निराशाक कारण दिस ओ संकेत करैत छथि—

''बिसरि अपन मानवता
जखन लड़ैत जा रहल छी
हम सभ परस्पर
कोन आन फलक आशा
क' सकैत छी एहनामे ?
सभ धर्म देखबैत अछि
वस्तुतः एकताक पंथ
मुदा हम सभ
जे धर्मक उपासक छी
उत्पन्न करैत छी
धर्मक नाम पर लड़ैत गिरोह,
हमसभ उत्पन्न करैत छी इजोत सँ अन्हार
मजबूत बनबैत छी दासताक बन्धन
स्वाधीनताक कामना संग।''

श्रद्धानन्दक मृत्यु पर विलाप आ हुनक गुणक स्मरण कयलाक बाद कवि ईश्वर सँ प्रार्थना करैत छथि—

''हे अहाँ कालक आत्मा
आ ब्रह्माण्डक संरक्षक !
अहाँ करैत छी मात्र असहायक साहायूय
करू हमरा सभ पर दया
आ माफ करू हमरा सभक अपराध
ओ जे डेरायल लोक थिक
अपनो छाया सँ होइत अछि भयभीत

. . . . . .

एक स्वर मे करैत छी हम सभ
अहाँक संस्तुति
अही क्षण मुक्त करू हमरा सभकेँ
एहि दीर्घकालिक दासताक असहनीय यातना सँ।"

ई एकटा गंभीर आ उदास मनोभावक कविता थिक जाहि मे स्वाधीनताक प्रबल कामना के नियतिक अनुल्लंघनीयता-बोधक संग चित्रित कयल गेल अछि। अनुभवक विस्तृत आयाम, जीवनक प्रति यथार्थ अन्तर्दृष्टि आ भावक सूक्ष्मता एहि कविताकेँ विरल गाम्भीर्य प्रदान करैत अछि।

हुनक दोसर उल्लेखनीय कविता थिक 'एण्टे प्रयागस्नानम्' (हमर प्रयाग स्थान)। ई सन् 1928 मे कलकत्ता मे भेल कांग्रेस-अधिवेशनक सम्बन्ध मे लिखल गेल छल, जाहि मे ओ केरलक एकटा प्रतिनिधिक रूप मे भाग लेने रहथि। लगभग दस हजार श्रमिक एहि अधिवेशन मे भाग लेल। कारी रंगक एहि अशिक्षित एवं असंगठित लोक सभक समुदायक बलात प्रवेश सँ उच्चवर्णक प्रतिनिधि सभ चकित, कुपित आ भयभीतो भेल रहथि। ओ सभ पैघ जुलूसक रूपमे प्रवेश कयल आ कांग्रेस पण्डाल मे यथास्थान बैसि गेल। ई देखि कविक हृदय प्रसन्नतापूर्वक उत्फुल्ल होइछ आ ओ कहैत छथि—

"भारतीय जनताक ई महासभा
स्वागत करू आदरपूर्वक
एहि साहसी अतिथिगणक
सुदीर्घ अवधिमे अही वर्ष
प्राप्त कयलक अछि
अहाँसभक महासभा पूर्णता
कारण जे पहिल बेर भेल अछि
ओहन लोक सभ जमा एतय
जकरा सभक सम्मिलन
सभ तरहेँ जरूरी अछि।"

एहि नवागंतुक सभक प्रकृतिक सम्बन्ध मे ओ कहैत छथि—

"ई सभ ओ कृषक छथि
जे माटि पर ओंघड़ाइत छथि
ओ सभ तरहक भलाइक
मूलस्थ कारण छथि
जे अपन मड़इमे
भूखल-पियासल रहि

धनिक लोकनिक टेबुल पर
सुस्वादु भोजनक थार पसारैत छथि
जे दोसराके चमकाबय लेल
अपनाकेँ करैत छथि मैल
ई सभ छथि निःस्वार्थ
पुरातन कर्मयोगी
. . . . . .
ऋषिगणक एहि पवित्र भूमिक
यैह सभ छथि आदि संतान।''

कविकेँ धवल वस्त्र धारण कयनिहार गौर वर्णक कांग्रेसी प्रतिनिधि गंगा-सदृश आ कारी वर्णक नवागंतुक सभ युमना समान प्रतीत होइत छनि। कविक दृष्टिमे कांग्रेस दू टा धारक मिलन-स्थल, प्रयाग-सन पवित्र संगम बनि गेल, जाहि मे बेर-बेर डुबकी लगयबामे कविकेँ अत्यधिक हर्ष होइत छनि। श्रमिक वर्गक प्रतिएँ, विशेषतः खेत आ खरिहान मे काज कयनिहार श्रमिक वर्गक प्रतिएँ, जनिक जीवनक हुनका प्रत्यक्ष ज्ञान रहनि, तीव्र सहानुभूति आ आदरक भाव संग ओ कतोक कविता लिखलनि। बिना कोनो संरक्षणभाव आ कृपा-भावके ओ ओहि लोकसभक प्रतिएँ अपन चिंता आ आदर प्रकट करैत छथि जे जीवन भरि श्रम करैत अछि। हुनक आरम्भिक कवितामे ई भाव स्पष्ट एवं सशक्त रूप मे प्रकट भेल अछि। केरलक राजनैतिक जीवन मे समाजवादी विचारधाराक आविर्भाव सँ पूर्वे गांधीजीक शिक्षा सँ बल ग्रहण क' वल्लत्तोलक मानवीय संवेदना हुनका भारतीय जीवनक वास्तविक स्वरूप प्रदान कयने छल आ हुनका जाति आ सम्प्रदाय सँ उपर उठा हुनक राष्ट्रीयताक आधार केँ व्यापक आ आत्माकेँ दृढ़ बनौने छल। हुनक 'प्रयाग स्नानम्' शीर्षक कविता ओहि मानवीय बोधक नीक उदाहरण थिक जे राजनैतिक जीवन मे यथार्थवादिताक आवश्यक अंश थिक। अपन फरीछ अन्तर्दृष्टिक संग वल्लत्तोल एहि तथ्य दिस संकेत करैत छथि जे कोना काँग्रेस मे श्रमिक वर्गक आगमन सँ मितवादी लोकनिक कायरता दूर होयत आ कांग्रेस बिना कोनो शर्त स्वाधीनता लेल प्रतिबद्ध भ' सकत। हुनक परवर्ती कविता सभमे गांधीजीक प्रति हुनक पूजा-भाव आ वामपंथी विचार सभक बीच किछु विरोधाभास बूझि पड़ैछ। हुनक ई वामपंथी झुकाव कोनो वैचारिक परिवर्त्तनक प्रतिफल नहि भ' स्वाधीन भारतमे गरीबी आ असमानताक समस्याक समाधान मे देखल जाइत मन्दगति सँ उत्पन्न अधीरताक कारण छल। अहिंसा आ प्राचीन भारतक नैतिक आदर्श मे हुनक आस्था बरोबरि निष्कम्प बनल रहलनि।

जहिया वल्लत्तोलक राष्ट्र-प्रेमक कविता सभ स्वाधीनता-संघर्षक महत्वपूर्ण अवधि मे प्रथम बेर प्रकाशित भेल, ओकर हार्दिक स्वागत भेलैक। केरलक जनता केँ ओ सभ प्रेरणादायिनी प्रतीत भेल रहैक आ एहन हजारो व्यक्ति रहथि जे हुनक 'मातृ वन्दनम्' (माताक वन्दना), 'पोरा पोरा' (पर्याप्त नहि पर्याप्त नहि) आ 'एण्टे गुरूनाथन' (हमर

गुरूदेव) सन कविताक स्मरण सँ पाठ क' सकैत रहथि। ई सभ आ राष्ट्र-प्रेम पर हुनक आन कविता सभ आइयो ओतबे लोकप्रिय छनि, किछु त'अपन काव्यगत विशेषताक कारण आ किछु एहि लेल जे ओकर विषय भारतीय मानस लेल सदैव सार्थक छैक। कोनो कविक महानता समकालीन घटना मे हुनक सहभागिता पर निर्भर नहि होइछ। मुदा एहन समय मे जीवित रहब जखन कि इतिहासक निर्माण भ'रहल हो, अपना देशक किछु महान व्यक्तिक समकालीन होयब आ अपना समयक क्रान्तिकारी घटना सभक साक्षी होयब दुर्लभ सौभाग्यक गप्प थिक। ई एकटा पैघ उत्तरदायित्वो होइछ। वल्लत्तोल अपन एहि सौभाग्यक प्रति प्रसन्न रहथि। ओ अपन दायित्वक निर्वाह कयलनि। एक कवि आ व्यक्तिक रूप मे ओ अपना कें सहृदय आ महान प्रमाणित कयलनि, कारण जे ओ समस्त जनताक संवेदना संग तादात्म्य स्थापित करबामे सफल भेलाह। इतिहासक महत्वपूर्ण नाटकक प्रति अनुकूल प्रतिक्रिया लेल आवश्यक सत्यनिष्ठा आ कल्पनाशीलता हुनका मे यथेष्ट रहनि। हुनका अन्तरमे निर्भय भ' अपन बात कहबाक आ अपना लोकसभक स्तर ऊपर उठयबाक स्वाभिमान आ साहस रहनि। हुनका बिना केरलक राष्ट्रीयता अभिव्यक्ति मे पिछड़ल आ नैतिक तथा भावनात्मक जागृति मे आर सीमित रहैत। विचार तथा अनुभूति तखने फरीछ होइछ जखन स्पष्टता संग उपस्थापित कयल जाइछ आ एहने स्पष्ट उपस्थापन सँ जनताक निर्माण होइछ।

वल्लत्तोलक किछु छोट-छोट कविताक मूल्यांकन

वल्लत्तोलक छोट कविता सभ 'साहित्य मंजरी' नामक पोथीक एगारह खण्डमे संकलित अछि, संगहि ओहन कविता सभक किछु आनो संकलन थिक, यथा 'वीर श्रृङ्घल' (वीरक लेल कंगन), 'दिवा स्वप्नम' (दिवा स्पप्न), 'विथुक्कणि' (विथु प्रभात कें अर्पण) 'इण्डियापुते कराचिल (भारतक रोदन) आ 'वल्लत्तोल रूसायिलं' (वल्लत्तोल रूसमे)। एहि सभ संकलन मे सभ मिलाक' 214 कविता संकलित अछि। एहि सभ कविता मे 'साहित्य मंजरी' क पहिल सात खण्डक कविता सभ सर्वाधिक मनोरंजक थिक।

वल्लत्तोलक कविता मे भाव आ रूपक, स्वर आ मनःस्थितिक, छन्द आ शैलीक एतेक विविधता छनि जे ओहि कविता सभक वर्गीकरण एकटा कठिन काज थिक। मुदा हुनक मूलभूत काव्यगुणक नमूनाक रूपमे किछु कविता विचारार्थ लेल जा सकैत अछि।

कविता

ई संस्कृतक शार्दूल विक्रीड़ित छन्द मे रचित हुनक 10 टा पदक एकटा छोट कविता अछि। ई कविता सन 1927 मे प्रकाशित 'साहित्य मंजरी' क षष्ठ खण्डमे संकलित अछि। जखन कोनो कवि कविताक सम्बन्धमे लिखैत अछि, त' ओ ओहि कविक आस्था आ आदर्शक घोषणा भ' जाइछ। वल्लत्तोलक 'कविता' शीर्षक रचना एकटा सुन्दर कविता थिक, जाहि मे ई स्पष्ट कयल गेल अछि जे हुनका लेल कविता की थिक आ परोक्ष रूप सँ एहि मे ओ अपन कविताक सामान्य गुण सभक व्याख्या सेहो करैत छथि। हुनका दृष्टि मे कविता एकटा देवी छथि, मनोहारिणी युवती छथि, एकटा अजेय शक्ति आ अदृश्य उपस्थिति छथि, जिनका परोक्षे रूप सँ देखल, सुनल वा अनुभव कयल जा सकैछ।

ई कविता काव्य-देवीक कृपालु दृष्टिक वर्णन संग आरम्भ होइछ, यथा 'कीर्त्तिक तारागणक (उदय) हेतु रात्रिक आगमन', 'साहित्यक छाती पर श्याम-नील रत्न'। एकटा सुन्दरीक नजरि कें कवि कारी वर्णक कहैत छथि, तैं कवि द्वारा काव्य-देवीक दृष्टिक तुलना कारी आ श्याम-नील वर्णक वस्तु सभक श्रृंखला संग कयल जायब सुखद कल्पना थिक। ईहो महत्वपूर्ण थिक जे कविताक आरम्भ-खण्ड कीर्त्तिक निर्देश संग आरम्भ होइछ। एहन प्रतीत होइछ जे मिल्टन जकाँ कीर्त्ति वल्लत्तोलक मस्तिष्को कें उत्तेजित

करैत छल। ई आरंभिक पद विचारक दृष्टि सँ सामान्य होइतो संस्कृत शब्द सभक प्रयोग तथा कारी दृष्टिक मनोहारी बिम्बक कारण ओजस्वी तथा ओजनी भ' गेल अछि। फेर अवैछ वल्लत्तोलक सर्वाधिक प्रसिद्ध पद सभ मे सँ एक पद जे पहिने दोसर अध्याय मे उद्धृत कयल गेल अछि। एहिमे मे ओ कहैत छथि जे कविताक रमणीय रूप ओ योद्धा द्वारा चलाओल तरुआरिक चमक, अपन प्रियतम दिस स्नेहपूर्वक दृष्टि-निक्षेप करैत सुन्दरीक नजरि तथा अबोध बच्चाक पसेनाक बुन्नी पसरल फूल सन गाल मे देखैत छथि। अगिला पद मे वसन्तक सौन्दर्यक वर्णन काव्य देवीक भिन्न-भिन्न अंगोपांगक रूप मे कयल गेल अछि। कोइलीक गान काव्यदेवीक गान थिक, लता-बेली सभक नृत्य हुनके नृत्य थिक, फूल सभक मधु हुनके विनोदपूर्ण बोलीक माधुर्य थिक। ई दूनू पद वल्लत्तोलक कविताक प्रकृत इन्द्रियासक्तिक मुखर घोषणा थिक। हुनका दृष्टि मे सौन्दर्य—इन्द्रियजन्य सौन्दर्य—प्रत्यक्ष, स्पष्ट तथा तिल-तिल नूतन सौन्दर्य होइछ। एतय ई अंकित करब रोचक प्रतीत हैत जे एहि दुनू आरंभिक पदक प्रथम पद मे प्रयुक्त तीनू रूपक कविताक तीन आधारभूत रागात्मक वृत्तिक प्रतिनिधित्व करैछ, जे थिक वीरम्, श्रृंगारम, तथा वात्सल्यम्, अर्थात् वीरता, श्रृंगारिक रसिकता तथा बाल्यकालक प्रति कोमल मनोभाव। ई पद शैलीक उपयुक्तता, कविक बहुविध अनुभवक संक्षेप मे प्रस्तुति-क्षमता तथा कविताक सुन्दर रूप-रचनाक दृष्टिसँ सर्वथा परिपूर्ण छनि। एहि कविताक आगाँक पाँती सभ मे कहल गेल अछि जे काव्य देवीक मुसकी चन्द्रमाक ज्योत्स्नो के धवलतर बना दैछ आ ई कथन अजगुतो नहि थिक, कारण जे संवेदनशील व्यक्ति हुनक नोरो कें गुलाबक अत्तर-सन सुगंधित मानैत अछि। कविता मे वेदनो कें आनन्द मे परिवर्तित क' देबाक जे जादुइ शक्ति होइछ, तकरा दिस एतय संकेत भेटैछ। कविताक कृपा सौभाग्यक कुंजी होइछ आ जा धरि ई कुंजी प्राप्त नहि होइछ, लोक उपेक्षा हेतु अभिशप्त होइछ। ता धरि एकटा योद्धा डरपोक रहैछ, एकटा विद्वान व्यक्ति मात्र अज्ञानी रहैछ, पहाड़ी घासक ढेरी मात्र रहैछ आ राजा भिखारि रहैछ। कविताक कतोक गरिमापूर्ण सिद्धिक उल्लेख कयल गेल अछि। वेदसभ ओकर आदेश, पुराण सभ ओकर उपकारी उपदेश आ सर्वाधिक रुचिकर कविता सभ ओकर स्नेह-स्निग्ध वाणी थिक। ओ हृदय मे विवेकक बीआ बाओग क' दैत छथि, क्लेशक क्षण मे मधु-सदृश औषधि दैत छथि आ ककरो स्वतंत्रताकें बिना सीमित कयने जीवनक सत्य मार्ग दिस उन्मुख क'दैत छथि। फेर कवि कविताक जन्मक वर्णन करैत छथि। जखन अन्धकारक विनाशक बाद प्रभातक उदय होइछ, तखन समस्त विश्व कविताक प्रशंसा मे गीत गबैत अछि—

"समुद्रक देवता बजबैत छथि अपन नगाड़ा
दीप्त रक्तिम रवि
झंकृत करैत छथि अपन सुवर्ण-वीणाक तार
आ चिड़इ बरिसबैत अछि गीतक सुन्दर राग

गुन-गुनाइत भ्रमरक स्वरमे
फूल करैत अछि मंत्रक गान
हे ध्वनिक स्वर्गीय सार!
तमक विनाशक एहि क्षण मे
समस्त विश्व करैत अछि
अहाँक अभ्यर्थना मे जाप।"

रातिक अंत आ प्रभातक उदय प्रतीकात्मक ढंग सँ मनक तामसी दुर्गुणक समाप्ति आ सात्त्विक गुणक अभ्युदय दिस संकेत करैत अछि। प्रेरणा अबैत अछि आ मनक सात्विक शुद्धिक कालेमे नादब्रह्मक प्रार्थना कयल जाइछ। अंतिम दू पद मे ई उपराग देल गेल अछि जे सभ कविक प्रेरणा अपना तरहें अनस्थिर आ स्वेच्छाचारिणी होइछ। काव्य देवी एकटा एहन चंचल नारी छथि जे अविश्वसनीय आ सनकी स्वभावक छथि आ जे मोहित क' अधिकार त' जमबैत छथि, मुदा जे उपकार करबा मे कृपण होइत छथि। जखन कवि हुनक पाजेबक झन-झन स्वर सुनैत छथि आ हुनक रूप-सौन्दर्यक चमक देखैत छथि, तखन ओ आनन्द-विभोर भ' जाइत छथि, मुदा ओ लगले बिला जाइत छथि आ फेर घनघोर अन्हार पसरि जाइछ। एहनामे ओ मात्र प्रार्थना क' सकैत छथि -- " हे हमर हृदयेश्वरि! हमरा सँ दूर नहि जाउ। " ओ मानि लैत छथि जे ई ब्रह्माण्डक प्रकृति हुनका सँ अधिक भाग्यवान नहि थिक। ओ तारा रूपी चमकैत अक्षर मे आकाशक नील पृष्ठ पर किछु लिखैत छथि फेर ओकरा मेटा फेर सँ किछु लिखय लगैत छथि। काव्य-देवी जे एकटा ईश्वरीय गरिमा सँ पूर्ण होइत छथि, ककरो सोझा समर्पण नहि करैत छथि।

एहि कविता मे वल्लत्तोल कविताक तीनटा गुण पर बल दैत छथि -- ऐन्द्रिक, नैतिक तथा दैवी। कविताक ऐन्द्रिकता ओकरा मनोहारी, नैतिकता ओकरा अनन्य रूप सँ आवश्यक आ दैविक गुण ओकरा पलायनवादी बना दैत अछि। कविता - सम्बन्धी किछु आधारभूत तत्वक एतय उल्लेख कयल गेल अछि-- यथा कविता एकटा दैवी प्रेरणाक परिणाम होइछ, कि ओकर स्रोत कोनो स्वर्गीय रहस्य मे होइछ, कि ओकर उद्देश्य आनन्दक माध्यम सँ शिक्षा देब होइछ, कि ई आनन्द ओकर कोनो भाव कें रसमय बना ओकरा सम्प्रेषित करबाक तथा एकटा आदर्श विश्वक सृजन करबाक शक्तिमे निहित होइत अछि। वल्लत्तोक लेल आदर्श विश्व ओएह थिक, जत' अतिसूक्ष्म इन्द्रिय-सुखक प्राप्ति हो आ अही लेल चमचमाइत तरुआरिक भाँजला सँ उत्पन्न चमक तथा मृगनयनी प्रेमिकाक दृष्टि - निक्षेप मे हुनका आनन्दक प्राप्ति होइत छनि। ई कविता शास्त्रीय विचार सभक संक्षिप्तीकरणक एकटा सुन्दर उदाहरण थिक जाहि मे परिनिष्ठित संस्कृत शैलीक उपयोग कयल गेल अछि। संस्कृत छन्द, संस्कृत - शैलीक विन्यास, परम्परागत रूपक आ कविताक सम्बन्ध मे परम्परागत दृष्टिकोण वल्लत्तोलक कविताक सम्पूर्ण पक्ष कें उद्घाटित करैत तकर प्रतिनिधित्व करैत अछि। कविताक

सामान्य स्तरीयता सँ एकर दोसर पद अपन स्वागतयोग्य रूपक आ शैलीगत सामर्थ्यक कारण पृथक भ' जाइछ, जाहि मे संस्कृतक गौरव सँ अधिक मलयालमक स्पष्टता आ माधुर्य देखबा मे अबैछ।

किलिकोंचल

ई वल्लत्तोलक सुन्दर कविता सभमे एक अछि। ई द्रविड़ छन्द 'मंजरी' मे रचित अछि आ एहि कविता मे वल्लत्तोलक कविताक समस्त विशिष्टता देखल जा सकैछ। ई ' साहित्य मंजरी' क चतुर्थ खण्डमे संकलित अछि जे सन् 1924 मे प्रकाशित भेल छल।

कवि अपन पाठकवर्ग कें कल्पनाक वायुयान मे बैसा अतीतक भ्रमण-यात्रा पर ल' जाइत छथि। हुनका सभक समक्ष राजा जनकक नगर आ राजधानी मिथिला प्रत्यक्ष होइछ, 'जे अपन राजदण्डक मदति सँ संसार-सागर कें पार कयल।' ओतय महलक ऊपर एहन झण्डा फहरा रहल अछि जाहि पर हरक चिह्न अंकित छैक। ई एहन सभागार थिक जतय विद्वान-ऋषि याज्ञवल्क्यक छात्र-गण पुस्तक रचना मे संलग्न छथि आ एकटा पैघ चबूतरा छैक जतय शिवक त्रयम्बक नामक धनुष राखल अछि। मुदा, कवि अपना पाठकगण कें लगले महलक उद्यान दिस ल' जाइत छथि ---

"हे हमर नयन
जुनि होइ अचम्भित
निहारि प्रत्येक फूल आ नरम पल्लव
उद्यानक देवी स्वयमेव छथि विराजमान
एहि स्फटिक -सन स्वच्छ ओसारा पर
ओ जे पाँच वर्षक कन्याक रूपमे
खेला रहलीह अछि रम्यता संग
छनि हुनक काया फुलाइत चम्पा-सन
मुखमण्डल त' साक्षात् गुलाबे लगैत अछि
हुनक पैघ- पैघ सुन्दर आंखि
लगैत अछि
जेना कटैया फूलक
नील- श्याम पुष्प- दलक समान
हुनक कन्हा सँ लटकैत कुन्तल केश- राशि
भ्रमर - दल समान छनि कारी
लता- बेलि समान कोमल
छनि हुनक भुज- युग्म
आ हाथ लगैत अछि पल्लव- सदृश मृदुल।"

ओ बालिका नाना तरहक खेल मे मग्न छथि। हुनका कतोक प्रकारक पशु- खेलौना छनि, जकरा सभके ओ एकटा गृहिणी समान पाँतीमे बैसा ओकरा सभक आगाँ दूध, फल आ चीनीक सुस्वादु भोजन परसैत छथि। तखन ओ एकटा स्वर्ण निर्मित घैल मे पानि भरि गाछ सभक जड़ि मे पटवैत छथि, जे सभ अपन-अपन माथ हिला प्रसन्नता प्रकट करैछ। ओ पहिरल रेशमी साड़ीक आँचर फर्श पर ओछा अपन गुड़िया सभकें ओहि पर सुतबैत छथि, माय-जकाँ गीत गावि ओकरा सभके सुतबैत छथि आ हुनक कोमल हाथ गुड़ियाक जाँघ के थप- थपवैत रहैछ। फेर ओ विष्णुक मूर्तिक आगाँ फूल चढ़वैत छथि आ अपन पैघ- पैघ आँखि मूनि साध्वी गार्गी जकाँ ध्यानमग्न भ' जाइत छथि। एहि तरहें ओ भावी जीवनक कतोक दृश्यक पूर्वाभिनय सम्पन्न करैत छथि। जखन ओ आकाशक प्रशंसा मे तोताक जोड़ी कें गवैत सुनैत छथि ---

''की अहाँ नहि सुनैत छी
एहि तोता सभके बजैत
हमरा सभक समान
हम एकरा अवश्ये पकड़व '---
कहैत छथि ओ
एकटा नव खेलौनाक प्रेमक वशीभूत भ'।''

तखन हुनक दासी सभ ओहि पक्षी सभकें पकड़ि हुनका हाथ मे द' दैत छनि आ ओ अत्यन्त प्रसन्न भ' जाइत छथि।

''ओकरा सभकें अपना वक्ष सँ लगा लैत छथि ओ
जे सोन आ रत्नक लड़ी सँ छारल होइछ
जखन ओ गड़ा लैत छथि
तोताक चोंच अपन गालमे
लगैत अछि प्रवाल सँ शोभित ओ
नहुएं सोहरबैत छथि ओ
ओकर रेशमी देह
रेशमो सँ कोमल अपन हाथ द्वारा।''

ओ ओकरा सभके दूध आ मधु दैत छथि, मुदा ओ सभ भयभीत रहबाक कारण एक-दोसरा दिस तकैत अछि ---

''स्वर्णहिक चमकैत पिजड़ा किएक ने हो,
बन्धन होइत अछि
बरोबरिए बन्धन।''

आब दृश्य बदलि क' सीताक मायक कक्ष दिस जाइत अछि। ओ (जनकक पत्नी) एकटा पैघ कक्ष मे विश्राम क' रहलि छलीह। ओतय विशुद्ध शांति पसरल छल। ओ मैत्रेयी द्वारा सिखाओल किछु वेदान्त तत्वक चिंतन मे लीन छलीह। तखने वेद प्रथित आनन्द हुनका अपन बेटीक रूप मे प्राप्त भेलनि, जे हवामे स्वर्णिम फूल जकाँ तैरैत हुनका लग आबि गेलनि। जेना लक्ष्मीक पाछाँ समस्त ऐश्वर्य आबि रहल हो, तहिना हुनक समस्त दासीगण सीताक पाछाँ उपस्थित भेलि। बेटी कें देखि रानी कें जे प्रसन्नता मेलनि, तकर वर्णन करैत कवि कहैत छथि ---

"उद्यान मे खेला- धुपा
घुरैत अपन बेटी कें देखि
आनन्द हुनक भ' गेलनि दीप्त
अपरिमित आनन्द सँ
स्नेह सँ विगलित भ' गेलीह ओ
जेना कतोक दिनक वियोगक बाद
बेटी संग भेल हो मायक मिलन।"

तोताक सम्बन्ध मे गप्प करबा लेल आतुर भेलि बेटी बाजलि ---

"ओ तोता कतेक नटखट अछि माँ
जे कहैत अछि औताह राम
अहाँक बेटी संग परिणय लेल
हम नहि -----"

मुदा माय हुनका बजबा सँ रोकि दासी सँ जिज्ञासा कयलनि जे बात की थिक। ओ कहलकनि जे वाल्मीकिक आश्रम सँ तोताक एकटा जोड़ा आयल छैक (वाल्मीकिक नाम सुनैत रानीक दुनू हाथ पंकज- प्रसून जकाँ अंजलि -बद्ध भ' गेलनि)। ओ दुनू तोता बाल्मीकि रचित रामायणक पाँती सुना सकैछ, जे ओ भविष्य मे झँकैत लिखने छथि ---

"कहैत छथि ज्ञानी वाल्मीकि
जे दशरथ- सुत सुन्दर राम
परिणय करताह आबि
अहाँक सुकुमारि सीता संग
कतेक पैघ भाग्यक ई बात।"

तखन बालिका सीता जिज्ञासा कयल- ' किएक वाल्मीकि हमरा संग रामक विआह करौताह?" एहि पर माय बेटीकें बुझबैत कहलखिन -- " तनये, बालिका सभकें अपना जीवन मे ई कर्म करबाक होइछ।" तखन निश्चयात्मक स्वर मे सीता बाजलि जे आन

क्यो हमरा संग विआह नहि करय, मात्र हमर माय करय।'' एहि पर सभ क्यो ठठा क' हँसि देल आ बालिका अपन मायक गर्दनि ध' लटकि गेलि।

ई कविता मात्र एकटा सुन्दर कविते नहि थिक, अपितु सम्पूर्ण दृश्यक स्पष्ट पकड़, एहि कविता मे सर्वत्र पसरल नाटकीय जीवंतता, वर्णनक सौन्दर्य, मंजरी छन्दक विशिष्ट प्रवाह आ शब्द- विन्यासक स्पष्टता आ मृदुता सन गुण ल' क' वल्लत्तोलक कविताक मध्य ई सर्वोत्तम उपलब्धि बनि गेल अछि। एकर वर्णन विन्यास अरुचिकर नहि भ' मधुर थिक आ संगीत बिनु जीवंतता गमौने साधु (मृदु) थिक। एहि कवितामे वल्लत्तोल शैशवक शुद्ध सौन्दर्य पुनः प्राप्त कयलनि अछि जाहि मे सहजता, बालसुलभ कौतुक, आत्मलीन व्यस्त आनन्द तथा अपरिभाषेय चारुताक मिश्रित रूपक दर्शन होइछ। हिनक सीता मलयालम कविताक अति विशिष्ट चरित्र मे एक थिक।

नरेन्द्रक प्रार्थना

ई द्रविड़ छन्द 'पाना' मे लिखल एकटा छोट कविता थिक। ई साहित्य मंजरीकं पाँचम खण्ड मे संकलित अछि। ई स्वामी विवेकानन्दक जीवनक एकटा घटना पर आधारित थिक। संन्यास ग्रहण करबा सँ पूर्वक जीवन मे स्वामीक नाम नरेन्द्र रहनि। ओ श्री रामकृष्णक सम्पर्क मे अयलाह आ हुनका अपन गुरु स्वीकार कयलनि। एक दिन परमहंस अपन शिष्यके कनैत देखलनि। ओहि सुन्दर आ मधुर स्वभावक युवक कें दुःख मे देखि, जकर गीत हुनका लेल दिव्य आनन्दक स्रोत रहनि, श्रीरामकृष्ण स्नेहक चिंतासँ उद्वेलित भ' जिज्ञासा कयलनि ----

'' की किछु अघट घटल अछि
घर मे अहाँक नरेन्द्र
किएक छी अहाँ सुसकैत एना
की छैक बात
कि आँखि अहाँक
जे आनक नोर पोछबा लेल
ताकि रहल अछि वस्त्र
स्वयं बहा रहल अछि नोर
एहि जगतक संताप सँ संतप्त भ'।''

कँपैत स्वर मे नरेन्द्र उत्तर देल जे हुनक माय क्षुधित छथिन। हुनक पिता जखन जीवित रहथिन त' हुनक घर विश्वप्रेमक केन्द्र रहनि आ एखन ओ भीषण दरिद्रताक घर बनि गेलनि अछि।

'' पान क'
जकरा वक्षस्थलक वत्सल दूध

भेलहुँ हम पैघ
भ' रहल अछि विदीर्ण
ओ रेशमी वक्षस्थल
भूखक व्यथा सँ
कतेक कृतघ्न छी हम,
हे हमर माय।''

अपन दुःख नहि सहि सकबाक कारण ओ बिलखि-बिलखि कानय लगलाह। श्री रामकृष्ण, जे लोक सभकें मोक्षक तत्व सिखाओल करथि, अपन शिष्य कें अर्थोपार्जनक मार्ग देखाबय लगलाह ----

'' हे हमर प्रेम-पात्र
जाह हमरा समक माता महाकाली लग
सुनावह अपन दुःखक गाथा हुनका
जनिका कृपा सँ गंगा बनि बहैत अछि
गलि क' चानी एहि दुनियामे
जनिका प्रताप सँ स्वर्ण छिड़िअबैत अछि
सूर्य एतय अनवरत
जनिक दिव्य रत्नक प्रभासँ
बनि जाइछ प्रकाशमय सघन अन्धकारो एतय
यदि एहि विश्वक ओ मलिकाइन
फेरैत छथि तोरा पर अपन कृपा- दृष्टि
कोन एहन थिक फेर निर्धनता
जे नहि बिला जायत सत्वर।''

नरेन्द्र दीर्घ निश्वास छोड़लनि। ओ अपन शालक एक छोर सँ अपन आँखिकें झाँपि अपन नोर कें रोकलनि। फेर माथ झुकौने ओ कालीक महामन्दिर दिस प्रस्थान कयलनि। किछु काल बाद जखन ओ घुरि क' अयलाह त' हुनक आँखि पूर्वे जकाँ नोरसँ डब-डबायल रहनि। श्री रामकृष्णक नजरि हुनक नोर पर गेलनि आ ओ पुछलखिन ---

'' किएक तों कनैत छह फेर
की ई संभव थिक
जे कयने होथि कंजूसी
हमर संतान सँ ओ कल्पलता
कह' तों हमरा
कयलह जे प्रार्थना।''

तखन भविष्यक ओ संन्यासी वजलाह ----

" देवी सँ हम धनक नहि
विरक्तियेक याचना कयल
मुदा, हाय ! हमरा घर मे... "

श्री रामकृष्ण हुनका रोकैत आ मुस्कुराइत वजलाह जे हुनक एहि प्रार्थना सँ ओ कतेक प्रसन्न छथि। पुनः ओ बजलाह ----

" हमरा छल ई पहिनहिं सँ ज्ञात
जे ' माया ' कें दूर करबे लेल
उत्पन्न तों भेल छह
भने केहनो स्थिति हो
सत्यक आत्मा कें तों नहि करवह प्रदूषित
किन्नहु नहि पसारबह तों अपन कप्पा
अर्थ- सन क्षुद्र वस्तु लेल
कोनो साम्राज्ञीक आगाँ
तत्वतः तों बनले नहि छह
एहन काज करबा लेल।"

ई एकटा सुन्दर रचना थिक, प्रवाहपूर्ण आ स्पष्ट शब्दावली सँ विन्यस्त, जकर नाटकीय संरचनामे गुरु आ शिष्य– दुहुक श्रेष्ठताक अभिव्यक्ति भेल अछि। युवा आ भावात्मक मनोवृत्तिक नरेन्द्र, गुरुक प्रति हुनक पूर्ण आस्था, गुरुक हुनका प्रति असीम स्नेह, सत्वर फलदातृ आ सर्वव्यापिनी शक्तिक रूप मे देवी पर हुनक विश्वास आ देवीक समक्ष नरेन्द्रक शुद्ध चरित्रक प्रकटीकरण –– एहि सभ तथ्यकें दू टा पात्रक वार्तालापक माध्यम सँ स्पष्टतया अभिव्यक्त कयल गेल अछि। संक्षिप्तता एवं पूर्णताक संयोग वल्लत्तोलक कविताक अपन विशेषता छनि आ ई कविता एहि दुनू गुणक संगमक सुन्दर उदाहरण थिक। विषयक अनुरूप सरलता आ अहम्मन्यताक अभाव सँ उत्पन्नं गरिमा एहि रचनामे अनायास भेटैछ। आडम्बरहीन संस्कृत-शब्दावली आ मलयालमक शब्दसभक संयोग सँ विन्यस्त ई रचना 'मणिप्रवाल' शैलीक निर्मल वाक्पटुता आ गीतात्मक प्रवाहक सुन्दर परिचायक थिक।

कृषकगणक गीत

'केका' छन्द मे लिखित ई कविता 'साहित्यमंजरी' क सातम खण्ड मे संकलित अछि। ई कविता एहन प्रभावशाली पंक्तिसभक संग आरम्भ होइत अछि --

"यदि लोह कें होइत नोर
त' ओ जरूरे खसैत एहि ठाम
आ ओ बनि जाइत शब्द।"

एतय शब्द वेदनाक शब्द थिक, जे स्वार्थी मुनक्ख द्वारा लोहक दुरुपयोगक सम्बन्ध मे छैक। जाहि लोहकें जीवनदायी खेतक लेल औजार बनबाक छलैक, ओ जीवनक लेल नाशकारी अस्त्र- शस्त्र बनयबामे लगाओल जाइछ। यदि कतहु उन्नत माथ देखा पड़ैछ त' तरुआरि ओहि पर बजरि क' ओकर उच्छेद करत, भाला ओहि दिस बढ़त आ बन्दूक ओहि पर गोली उगिलैत अछि। ई लोहे थिक जे एहि नृशंस हत्यामें सहायक होइत अछि। की ई कहियो पापक धब्बा सं मुक्त भ' सकैत अछि ?

मुदा एहि अन्धकारमय धरतीक अशिक्षित किसान सभक अतिरिक्त लोहक क्रन्दन सुननिहार के अछि ? भारतक लोक एहन योद्धा नहि होइछ जे युद्धक ज्वालाक लपक सँ आकाश कें स्याह बना अपना नामकें आलोकित करथि। दोसराकें दबा क' मिथ्या अभिमान करबा दिस भारत आकृष्ट नहि अछि। " दोसर पहाड़ सभ कें पद- दलित क' हिमालय अपन गौरव नहि प्राप्त करैछ।" जाधरि अपन सहजीवीसभ लेल एहि खेतसभ मे सिनेह नहि उगैत अछि, ता धरि हमरा सभ लेल ओ बाँझे रहत। कृषकगण कहैत रहताह—

" हे हमर देह
निहुरि जाह नीचाँ तों
गोचर उठयबा लेल
मुदा किन्नहुँ नहि झुकह तों
अन्यायी सत्ता समक्ष
हे हमर कान्ह उठाबह तों खुशी- खुशी
हरक भार
मुदा किन्नहु नहि उठाबह तों
अपन स्वार्थक आदेश।"

ई कृषकगण एकरा स्थापित करैत छथि जे स्वतंत्र भारत मे हिनका-लोकनिक श्रम दोसरा सभक भलाइ लेल होयत, ककरो हानि लेल नहि। भारतक कल्पना एकटा हाथीक रूप मे कयल गेल अछि जे अपन जंजीर तोड़बाक चेष्टा करैत अछि। ओ अपन स्वतंत्रता एहि लेल नहि चाहैत अछि जे उन्मत्त भ' भगदौड़ मचाबय आ नाशलीला करय, अपितु ओ स्वतंत्र भ' दुःख भोगैत लोकसभक त्राण करय चाहैत अछि। ई कविता किसान सभ द्वारा भारतक प्राचीन प्रार्थनाक पाठ संग समाप्त होइत अछि -- ' लोकाः समस्ता सुखिनो भवन्तु '।

ई कविता श्रेष्ठ भाव सँ परिपूरित थिक जाहि मे ठाम- ठाम सुखद बिम्बक प्रकाश भेटैत अछि। ई कविता थोड़े मंदगति सँ चलैत अछि जाहि मे विचार कल्पनाक आगाँ-आगाँ दौगैत अछि। ई कविता वल्लत्तोलक ' आदर्शवादी ' कविताक विशिष्ट उदाहरण थिक, जाहि मे एकर प्रेरणा कतहु-कतहु मंद लागत, परंच एहि मे उदार आदर्शवादक स्वरक सर्वत्र निर्वाह भेल अछि।

एकटा फाटल - पुरान गेडुआ

ई कविता 1916 ई. मे लिखल गेल छल आ एकरा ' साहित्य मंजरी ' क प्रथम खण्डमे संकलित कयल गेल अछि। ई वल्लत्तोलक लोकप्रिय कविता सभ मे एक थिक आ हुनक शैलीक स्वच्छता एवं सरलता आ रचनाक मृदुता आ सहज प्रवाहक सुन्दर उदाहरण थिक। एहि कविता मे कवि एकटा फाटल - चिटल गेडुआ कैं सम्बोधित करैत छथि जे गन्दा भ' गेल अछि आ जकर तूर बहरा गेल छैक। ओ गेडुआक नीक दिनक स्मरण करैत कहैत छथि —

" कहियो छल एहनो समय
जखन करबा लेल तोहर स्पर्श
ककरो लगैत छलैक आवश्यक
अपन हाथक प्रच्छालन
मुदा एखन अछि तोहर एहन दुर्भाग्य
जे तोहर स्पर्श कयला पर
लोक कें धोबय पड़ैत छैक अपन हाथ।"

कहियो ई गेडुआ एकटा सुन्दर युवतीक फूल- सन शय्याक वस्तु छल ---

" ओकर धवल शय्या पर
एकटा सुन्दर वस्त्र- खण्ड सँ झाँपल
कोनो निर्मल हेमन्तकालीन सोताक
शशि- चुम्बित किनार जकाँ
तों प्रभा- मण्डित रह'
कहियो तोहर ऊपरी भाग
यदि भेलैक नहि प्रतीत कोमल
ओहि सुन्दरी कें
त' सोहरबैत छलि अपन कोमल कर सँ ओ
एकटा माय जकाँ
जे सुतबैत हो अपन बच्चाकें
नहुएं- नहुएं फेरि क' अपन हाथ

ओकर जाँघ पर
तखन तों कयने होयबह
आर अधिक सुखक अनुभव
ओहि सुखो सँ अधिक
जखन कयने होयतीह विकीर्ण ओ
फूलक राशि तोरा पर।''

ओहि युवतीक दाम्पत्यक सुन्दर दिनक ओ गेडुंआ मूक साक्षी छल ---

'' जखन चाहैत छल पति ओकर
लेबय लेल चुम्बन ओकर ठोरक
ओ नव परिणीता
लज्जा सँ विगलित भेलि
कतोक बेर नुका लैत छलि अपन मुखमण्डल
गोंड़िक' अपन चेहरा ओकरा मे
कतेक जरि जाइत रहल होयत
ओकर पति तोखन तोरा सँ।''

राति मे जखन ओ सभ अपन माथ अलस भाव सँ गेडुआ पर रखैत जाइत रहल होयत, तखन ओकरा सभक प्रेमालाप, जे ओकरा सभक हृदय मे पुष्पित प्रेम-वल्लरीक मधुक समान मधुर रहल होयत, सभ सँ पहिने, हवो द्वारा सुनबा सं पहिने, तोरे आनन्द देने होयतह।

''हरिण- सन आँखिवाली ओ वधू
सँझुका स्नानक उपरान्त जखन
लेटि जाइत रहलि होयत
पसारि क' तोरा पर अपन तीतल केशराशि
तखन तों लगैत रहल होयबह
अपन धवल खोल मे
कारी मेघ सँ मण्डित
शरदकालीन चन्द्रमा- सन
ओकर सुन्दर केश- राशि
जे अपन कालिमा सँ
रातियो कें करैत रहल होंयत मात
आ जाहि मे गुम्फित छल फूल
कतोक दिन धरि रहल होयत

सन्निकट तोहर
जकर सुगंधि सँ तों
अखनो छह सुवासित।''

आव ओ खुशीक दिन नहि रहल। गेडुआक सम्मुख मरुस्थल पसरल अछि। ई देखि गेडुआ कें बीतल सुखक स्मरण शतगुण तीव्र भ' जाइक। मुदा कवि विचारैत छथि जे गेडुआ कें एहन दुर्भाग्य किएक भेलैक ? ई त' दोसरा लेल अपन जीवन कें अर्पित कय शुद्ध जीवन वितौने छल---

'' की भेलैक
जे अनका दिवा- रात्रि
देबा लेल सुख
भ' गेलह अछि तोहर देह
विवर्ण आ नष्ट ?
तोहर हृदय त' एखनो छह
एकटा महान कर्मयोगी जकाँ
स्वच्छ एवं पवित्र।''

कविक एहि कामना संग ई कविता समाप्त भ' जाइछ जे एहि गेडुआ कें एकटा दोसर खोल मे सेवा हेतु नव- जीवन प्राप्त होइ। गेडुआ के जाहि नव तूर सँ भरि देल जाइ तकरा कवि ' सुस्थिरात्मा ' कहैत छथि। एहि कविताक सम्पूर्ण भाव गीताक प्रसिद्ध श्लोक ' वासांसि जीर्णानि यथा विहाय - - - ' सँ लेल गेल अछि।

ई कविता अपन शैली, विन्यास जा कल्पनात्मक विचारक निर्वाहक दृष्टिएं अत्यन्त सुन्दर थिक। ई वल्लत्तोलक श्रेष्ठ कविता सभमे सँ एक नहि थिक, परन्तु ' साहित्य मंजरी ' मे संकलित हुनक औसत कविता सभक प्रतिनिधित्व करैत अछि।

हमर मातृभाषा

सन् 1927 में रचित ई प्रसिद्ध कविता अपन मातृभाषाक प्रतिएँ कविक गौरवक अभिव्यक्ति थिक। एकर रचना द्रविड़ छन्द ' माकन्द मंजरी ' मे भेल अछि आ ई 'साहित्य मंजरी ' क सातम खण्ड मे संकलित अछि। ई कविता भाषाक आभ्यन्तरिक गुणक वर्णन संग प्रारंभ भेल अछि ---

'' निकटक सागरक गुरु गंभीरता
आ सह्य पर्वतक स्थिरता
गोकर्णक मन्दिर सँ उपलब्ध परमानन्द
आ कन्याकुमारीक देवीक देल
आनन्दमय धवलता

पेरियार नदीक गंगा-सन पवित्रता
काँच नारिकेरक जलक मधुरता
चन्दन आ आन सुवासित वस्तुक सुगंधि
संस्कृत भाषाक आन्तरिक आ स्वाभाविक ओज
तथा माधुर्यपूर्ण तमिलक सुन्दरता
एहि सभ गुण आ सौष्ठवक
सम्मिलित रूप थिक हमर प्रिय भाषा
हे हमर गौरव- भाव
नाचि - नाचि उठह तों
आनन्दक अतिरेक संग।''

आगाँ कवि कहैत छथि जे एकटा शिशुक स्वाभाविक आ स्वस्थ विकास हेतु मातृभाषा कतेक आवश्यक थिक ----

''वजवा लेल प्रयत्न करैत
शिशुक सुकुमार अधर कें
मायक दूधक संगे-संगे
भेटि जाइछ दू अक्षरक शब्द
अम्मा अर्थात् माय
दोसर भाषा होइत अछि
यथार्थतः मात्र धात्री
मातृभाषा टा होइत अछि
जन्मदायिनी माय
मायक वात्सल्य संग कराओल दुग्धपाने सँ
संभव थिक पूर्ण विकास
कोनो टा बच्चाक
स्वर्गक अमृतो
तखने लगैछ अमृत हमरा सभकें
जखन ओ परसि क' जाइछ देल
माये द्वारा स्नेहक संग।''

जे किछु क्यो पढ़ैत अछि-- ओ धर्म ग्रंथ हो, कविता हो वा विज्ञान, ओ तखने हृदयंगम होइछ जखन कि ओ मातृभाषाक माध्यम सँ पढ़ल जाय। तखने ओ मोनक मधु बनैछ। अन्यथा ओ मानस- पुष्पक वाहरी पँखुड़ी पर लटकल ओसक कणें जकाँ शोभित भ' रहि जाइछ। ओ एहि तर्कक प्रतिवाद करैत छथि जे मातृभाषा सामर्थ्यहीन होइछ ---

"के कहि सकैत अछि
केरली कें असमर्थ
जे कयने अछि लोकक लेल
प्रथम काव्य
पंचम वेद
धर्मशास्त्र आ उपनिषदक गान।"

आगाँ ओ आलोचक लोकनि कें सावधान करैत कहैत छथि जे कोनो विदेशी भाषाक माध्यम सँ ओ मानवीय सत्ताक श्रेष्ठता धरि नहि पहुंचि सकैत छथि। " जा धरि अहाँ सभक भाषा कें निरन्तर प्रयोग सँ सामर्थ्य, विकास आ प्रसार प्राप्त नहि होयतैक, ता धरि अहाँ सभ अयोग्य, अर्द्ध विकसित विचारवला रहब आ शून्य मे भटकैत रहब।" कवि ई स्वीकार करैत छथि जे मलयालम एकटा गरीब घरवाली अछि जे नीक पुस्तक उपलब्ध करा क' अपन संतानक ज्ञानक भूख नहि मेटा सकैत अछि। परंच ई ओहन गनल- गुथल लोक सभक कर्त्तव्य थिक जे अन्य भाषा सभक सागर मे अवगाहन करैत छथि। ई हुनका सभक दायित्व छनि जे ओहि सागरक तल सँ उपलब्ध रत्न कें अपन मातृ (मातृभाषा) कें समर्पित करथि।

" इ केहन लज्जाजनक स्थिति थिक
जे बिसरि गेल छी अहाँ सभ पुत्र-धर्म
यदि अहाँ सभ बनैत नहि छी
सेवक अपन मातृभाषाक
त' कोन अधिकार सँ
करैत छी शासन अहाँसभ
मायक आगाँ श्रद्धा संग
नतमस्तक होयबामे
अहाँसभ छी यदि असमर्थ
कोना फेर गौरवक संग
उठा सकैत छी माथ।"

कविता भविष्यक प्रति कविक आशा प्रकट करैत समाप्त होइछ ——

" आर की कहब हम ?
ज्ञानक शिक्षा लेल
काल्हि सँ जे केओ आवथि एहि केरल मे
घुरथि ओ निश्चित रूपें
भरल-पूरल मोटरी संग

अनादि काले सँ हमसभ केरलवासी
प्रख्यात रहल आयल छी
अपन आत्यन्तिक उदारता लेल।''

ई कविता एकटा तथ्यक अत्यन्त समर्थ अभिव्यक्ति थिक जाहि मे प्रत्याशित विपरीत दृष्टिकोण अंकित भेल अछि, मातृभाषाक प्रति आस्थाक उद्घोष कयल गेल अछि, ओकर महत्त्वक स्वीकार तथा सेवाकें अंगीकार कयल गेल अछि। अपन पारम्परिकता आ राष्ट्रीक कारण अपन मातृभाषाक प्रति वल्लत्तोलक स्वाभिमानक आर सशक्त अभिव्यक्ति एहि मे भेटत। मुदा मातृभाषाक प्रतिएँ कवि एहि कविता मे विक्षिप्त प्रतीत नहि होइत छथि। स्पष्ट चिन्तनक अतिरिक्त एहि कविता मे गीतात्मक विन्यासक गुण देखबामे आओत।

एतय चर्चित कतिपय कविता सभ वल्लत्तोलक काव्य- क्षेत्रक विशालताक प्रतिनिधित्व नहि करैत अछि, मुदा ई सभ हुनक शैली आ विचारक उपयुक्त उदाहरण प्रस्तुत करैछ।

वल्लत्तोलक वर्णनात्मक कविता

वल्लत्तोलक कतोक काव्य कृति आख्यान काव्य किंवा वर्णनात्मक थिक। 'चित्रयोगम' एकटा पैघ आख्यान काव्य थिक तथा 'साहित्य मंजरी' मे सेहो अनेक कथा काव्य थिक जे नाटकीय गीतकाव्य किंवा वर्णनात्मक काव्य रचना थिक। मुदा आख्यान कविक रूपमे हुनक कीर्ति एहि पाँच टा कृतिक कारणें छनि -- (1) बन्धनास्थानय अनिरूद्धन (वन्दी अनिरूद्ध) (2) शिष्यनुम मकनुम (शिष्य आ पुत्र) (3) मगदेलना मरियम (मेरी मगदेलेन) (4) कोचु सीता (वालिका सीता) (5) अछनुम मकलुम (पिता आ पुत्री)। ई कवितासभ हुनक काव्य- जीवनक विभिन्न कालमे लिखल गेल छल आ फुटकर कविताक रूपमे प्रकाशित भेल छल। अपन काव्य- शिक्षणक कालो मे ओ पौराणिक विषय पर अन्य कथा - काव्यक रचना कयने रहथि— यथा 'गणपति'।

'आत्मपोषिणी' मे 1914 ई मे 'अनिरूद्धन' क प्रकाशनक संग वल्लत्तोल प्रसिद्ध भ' गेलाह। उषा आ अनिरूद्धक कथा मलयालम साहित्य मे पहिनहि कतोक रूप मे प्रकाशित भ' गेल छल- चम्पु कथकली आ मुल्ललूक रूपमे। एहि पौराणिक प्रेम-कथाक एक काल्पनिक घटनाक आधार पर वल्लत्तोल एकटा खण्डकाव्य अथवा लघुकाव्यक रचना कयलनि। काव्यक आरम्भ मे हमसभ उषा कें दुःख मे डूबलि देखैत छी, कारण जे हुनक पिता वाण हुनक प्रेमी अनिरूद्ध कें कारामे ध' देने छथिन। ओ वयोवृद्ध मंत्री कुम्भाण्डक खोज करैत छथि। ओ अनिरूद्ध सँ भेंट करबा लेल हुनक अनुमति चाहैत छथि आ हुनक मौन कें स्वीकृति मानि उषा ओहि काल- कोठरी दिस जाइत छथि जतय अनिरूद्ध बन्दी बना क' राखल गेल छथि। कवि हुनका लोकनिक मिलन आ वार्तालापक वर्णन करैत छथि आ सुखी भविष्यक आशा सग ओहि दृश्य कें समाप्त करैत छथि।

एहि काव्य मे चारि- चारि पाँतीक तिहत्तरि टा पद छैक। कतहु वर्णन त' कतहु वार्तालापक संग कथा आगाँ बढ़ैत अछि। काव्यक आधा सँ अधिक भाग प्रथम पुरुष मे होयबाक कारण ई काव्य मात्र वर्णनात्मक नहि भ' नाटकीय अधिक थिक। कुम्भाण्डक प्रति उषाक कथन अत्यन्त मर्यादित छनि, मुदा ओहि कथन सँ हुनक दुःख आ कटुता सशक्त ढंग सँ प्रकट होइछ। ओ कहैत छथि जे यदि अनिरूद्ध वन्दी होयबा योग्य छथि त' ओ मृत्यु सँ छोट दण्डक पात्री नहि छथि --

"किंवा किएक देल जाय दण्ड आर हमरा ?
बिनु मारने हमरा अहाँ वास्तवमे
पहिनहि हरि लेने छी प्राण हमर।"

हुनक आवाज लड़खड़ा जाइत छनि आ ओ बाजि नहि पबैत छथि। ओ टूटि जाइत छथि आ एकटा बच्चा जकाँ कानय लगैत छथि।

अनिरूद्ध बहुत दुःखी होइत छथि, कारण जे हुनका सँ भेट लेल उषाकें जहल मे अयबा लेल विवश होबय पड़ैत छनि —

" एकटा दरिद्रो मनुक्ख
अपन प्रेमिका आ विवाहिता कें
ल' जाइछ अपन घर
मुदा बिआह क'
हमरा - सन अनाथक संग
प्रेमिका हमर पौलनि अछि
एहि कारा मे अपन नब घर।"

उषाक नोर हुनका आवेगपूर्ण व्यथा सँ भरि दैत छनि—

" हे हमर हृदयक साम्राज्ञी,
कानू जुनि
सहन क' हम सकैत छी
शत्रु द्वारा छोड़ल तीर
अपन वक्षस्थल पर सहज भावें
मुदा कठिन थिक सहाज करब
अहाँक नोरक एको बुन्नी।"

ओ अपना संग जहल सँ पड़यबाक प्रेमिकाक आमंत्रण स्वीकार नहि करैत छथि —

" की अहाँक पति छथि कोनो चोर
जे पड़ा जाथि जहल सँ हे यादवगणक पुत्रवधू!
भ' क' एकटा वीर नारी
विसर्जन जुनि करी अहाँ
अपन सम्मानक
हमरा प्रतिएँ अहाँक सहानुभूति सँ प्रेरित भ'
शीघ्र अबैत जयताह
अहाँक नब सम्बन्धीगण
वीरतापूर्वक मुक्त कराबय
एहि कालकोठरी सँ हमरा।"

आ फेर ओ हुनका सान्त्वना दैत कहैत छथिन ----

" हे हमर प्रिया !
जे ईश्वर कयलनि अछि
प्रेमक बीज बाओग
हमरा सभक अन्तर मे
दूरि नहि होबय देताह
किन्नहु ओ ओकरा।"

रूढ़ ऋंगारक मूढ़ता सँ मुक्त एहि कवितामे मर्यादित एवं कोमल प्रेम देखबामे अबैछ। कवि द्वारा मात्र एकटा मधुर आ महान भावे टा नहि प्रकट कयल गेल अछि, अपितु पात्र सभकें सजीव बनवैत संदर्भक तनावक अभिव्यक्ति एहि कवितामे भेल अछि। कुम्भाण्ड एकटा आदरणीय आ दयालु व्यक्तिक रूप मे चित्रित कयल गेल छथि जे उषाक लेल पितृ-तुल्य वा वात्सल्य- भाव रखैत छथि। ई कवि हुनक मुखमण्डल पर उत्पन्न होइत भाव सँ नाटकीय रूपमे प्रदर्शित करैत छथि। उषामे उदासी भरल परिवर्तन देखि ओ प्रस्तर स्तम्भ जकाँ ठाढ़ रहि जाइत छथि। ओ उषाकें सान्त्वना देबय चाहैत छथि, मुदा ई नहि जनैत छथि जे हुनका सँ की कहल जाय। जखन उषा जहल मे जा क' अनिरूद्ध सँ भेट करय चाहैत छथि, त' ओ तड़ित वेग सँ उद्वेलित भ' जाइत छथि। हुनका हृदय कें आघात लगैत छनि आ ओ आश्चर्य- चकित भ' जाइत छथि। अभिमानिनी, कटुता सँ भरल, खेदपूर्ण, दुःख सँ आन्दोलित आ प्रेम-निमग्ना उषाक प्रस्तुति वर्णन सभ तथा हुनके कथन द्वारा कयल गेल अछि। अपने सोच मे निमग्न ओ तखनो चित्रवत् बैसलि रहैत छथि ' हुनक उदास चेहरा निहुरल छनि, पसेना सँ तर ललाट अपन कोमल हाथ सँ टेकने ओ बैसलि छथि।' जखन ओ कुम्भाण्ड सँ किकु कहैत छथि तखन हुनक आंखि मे क्रोध प्रज्वलित भ' जाइत छनि, मुदा लगले ओ टुटि क' बच्चा जकाँ कानय लगैत छथि। हुनक आँखिक नोर हुनका अनिरूद्ध सँ भेट करबाक अनुमति देअबैत छनि। ओ शीघ्रता सँ कालकोठरी दिस बढ़ैत छथि आ स्वागत लेल अनिरूद्ध के उठबा सँ पहिनहि ओ हुनका कोरा मे खसि पड़ैत छथि आ अपन नोर कें रोकि नहि पबैत छथि। नहुए- नहुए ओ अनिरूद्धक देहक घाओ कें सोहरबैत छथि आ हुनक कष्टक सम्बन्ध मे सोचि बीर- पत्नी होयबाक हुनक गौरव- भाव क्षीण भ' जाइत छनि। जखन अनिरूद्ध हुनका सँ घुरबाक आग्रह करैत छथि त' ओ ठाढ़ि भ' करबद्ध प्रार्थना करैत छथि जे हुनका बिलम' देथु। जखन अनिरूद्ध हुनका घुरि जयबा लेल जोर द' कहैत छथिन, त' ओ हुनका संगे चलवा लेल प्रेरित करैत छथि। ओ शुद्धमना, प्रेरणादायिनी आ महान नारी छथि। अनिरूद्ध अधिक संतुलित आ वीर छथि। जहलो मे ओ एना शांत आ प्रसन्न छथि, जेना ओ अपन पितामहक नगरक अपने घर मे होथि, जतय शांति आ ऐश्वर्यक देवी खेलाइत रहैत छथि। उषाक प्रति हुनक समस्त प्रेम घंटो भरि

लेल उषा कें ओतय रहय देबा लेल किंवा हुनका संग जहल सँ बाहर जयबाक लोभ मोन मे उत्पन्न होबय नहि दैछ। मुदा कौखन क' एहनो क्षण अबैछ जखन ओ वीर नायक अपन संतुलन गमा दैत छथि ----

" जखन ओ देखैत छथि
कालकोठरीक मद्धिम प्रकाशमे
बिखरल कारी केश राशि संग
उषाके अबैत असमय मे
धड़कय लगैत छनि
जोर- जोर सँ हुनक वक्षस्थल।"

जखन अनिरूद्ध उषाक कथन सुनैत छथि त' हुनक हृदय क्षुव्ध आ देह पसेना सँ तर भ' जाइत छनि, नथुना फूलि जाइत छनि आ आँखि नोर सँ डबडबा जाइत छनि, जखन उषा कर जोड़ि हुनका आगाँ ठाढ़ि होइत छथि, ओ हुनक हाथ कें चुमैत छथि आ हुनका छाती सँ लगा भावावेगक संग कम्पित स्वर मे बजैत छथि। हुनक स्वर, भंगिमा, दृष्टि आ वाणी सँ ओ एकटा एहन कुलीन युवा प्रतीत होइत छथि जे हृदयक कोमल आ अटल निश्चयक लोक अछि।

ई एकटा सोझ आ स्पष्ट कविता थिक जाहि मे संयम आ संवेदनाक सुन्दर सम्मिश्रण थिक। एकर प्रत्येक पद चमकैत हीराक सदृश लगैछ।

चारि वर्षक बाद वल्लत्तोलक ' शिष्य आ पुत्र ' शीर्षक कविता प्रकाशित भेलनि। उनहत्तरि (69) पदक ई काव्य ' अनिरूद्ध ' क समाने पैघ थिक। विषय-वस्तुक दृष्टि सँ ईहो कविता पौराणिक थिक। एहि मे एक मात्र मानवीय पात्र परशुरामक अतिरिक्त आन सभ पात्र स्वर्गक निवासी छथि। एहि मे अनिरूद्धक तुलना मे पात्र, दृश्य तथा भाव- प्रवाह अधिक छैक, तें एहि मे नाटकीय सक्रियतो अधिक लागत। अलकाक मार्ग सँ शिवक निवास कैलाश दिस परशुरामक गमन संग ई काव्य आरम्भ होइत अछि। परशुराम द्वारा दोसर लोक सभ पर छोड़ल प्रभाव सँ हुनक महत्ता के स्थापित कयल गेल अछि। जखन ओ व्यस्त मार्ग सँ चलैत छथि ----

" नाना तरहें व्यस्त मनुक्ख
काज अपन छोड़ि - छाड़ि
निहारय लगैछ हुनका
विनय- भावक संग
किछु हाथें अपन मुह झाँपि
फुस- फुसा क' पड़ोसी कें
मना कयलनि
उच्च स्वर मे बजबा सँ

भास्वर आ सुन्दर परशुरामकें
यक्षिणी सभ माला पहिरौलनि
अपन कारी- नील सतृष्ण आँखि सँ
मोन भरि निहारलनि हुनका
आ मोने- मोन कयलनि ई प्रार्थना
जे हुनके सन पावथि ओ पुत्र
वाटक दुनू कात बैसल लोक
हड़बड़ा क' उठि गेल
आ संग चलैत लोक सभ
सत्वरे कात भ' रास्ता देल
सड़क छल शांत भेल
हुनका प्रति आदर
सम्मान आ भीतिक भाव संग।''

ओ कैलाश पहुँचैत छथि आ शिवक निवासक आगाँ हुनक पुत्र गणपति आ सुब्रह्मण्यकें देखैत छथि। हुनका सभकें शीघ्रता सँ नमस्कार क' ओ शिवक दिस बढ़ैत छथि कि गणपति हुनका रोकि दैत छथिन -- "एहन जल्दबाजी किएक ? हमर पिता भीतर विश्राम क' रहल छथि।'' ई कहैत सुब्रह्मण्यो हुनका रोकैत छथिन जे --

'' वन्धु, की ई उचित होयत
जे बिना पूर्वानुमतिकेँ
जाइ ओहि ठाम अहाँ
जतय गुरु करैत होथि
एकांत मे विश्राम ? ''

मुदा परशुराम उत्तर दैत छथि जे एकटा शिष्य कें गुरुक लग जखन मोन होइ जयबाक स्वतंत्रता होइत छैक आ फेर जखन ओ घर मे प्रवेश करय लगैत छथि त' गणपति हुनका रोकि दैत छथिन। तखन दुनू मे युद्ध आरम्भ भ' जाइछ। शिवक गण भूत सभ ई देखैत अछि। हस्तिमुख देवता गणपति अपन सूंढ़ि सँ हुनका लपेटि लैत छथि आ चारू कात घुमाबय लगैत छथि --

'' ओ सिद्ध पुरुष परशुराम
बनि जाइत छथि खेलौना-सन
गणपतिक खेलयबा लेल
उठा क' ऊपर हुनका
घुमाबय लगैत छथि ओ

कतोक बेर देखैत छथि
ऊपर जा परशुराम
पृथिवी आ नींचा बसल आन लोक।''

मुदा चपल गणपति देवता किछु अधिके चपलता कयलनि। अपन उपहास पर परशुरामक क्रोध भड़कि उठैछ। "प्राचीन भारतीयक रक्तकें देवतो द्वारा कयल उपहास सह्य नहि भेलैक।'' ओ शिव द्वारा प्रदत्त अपन कटार उठा गणपति पर चला दैत छथि। कटार गणपतिक गाल पर खसैत अछि आ हुनक बज्रदंत कटि क' ठनकाक नाद संग खसि पड़ैत अछि--

'' भ' गेल भय-चकित समस्त ब्रह्माण्ड
सरबय लागल जड़ि सँ रक्त
आ खसि पड़ल ओ बज्रदन्त
जे प्रतीत होबय लागल
कैलाशक एकटा श्रृंगक समान
उगल हो नीचांक रक्तिम धरती सँ ऊपर जे
पार्वतीक पिता प्रतापी हिमवान
उठा क' अपन दृढ़ आ धवल माथ
लगलाह जेना भेल होथि
शोक सँ स्तम्भित
देखि ओ दुर्घटना
भेल अपन नातिक संग
साक्षी एहि समस्त घटनाक
उतरि रहल छल सूर्य कैलाशक चोटी सँ
कठिन जेना भ' गेल होइन
देखब ई दारुण दृश्य
भ' गेलाह अदृश्य ओ
क्षण भरि लेल मेघक पाछाँ
- - - -
बिहुँसलनि स्कन्द
आ नन्दीक आँखि रँगा गेलनि
वीरभद्र उठौलनि अपन गदा
रूरू लेलनि दीर्घ निःश्वास
कुम्भाण्ड अपन हाथ मड़ोरलनि
आ चण्ड दबौलनि अपन जीभ।''

अनुचर लोकनिक विलाप सुनि गणपति आ समस्त विश्वक माता-पिता पार्वती आ शिव हड़वड़ा क' घटनास्थल पर अबैत छथि। रक्त मे सनायल देखि पार्वती अपन पुत्रक लग दौगलि जाइत छथि। परशुराम शिवक पैर पर खसि पड़ैत छथि। सुब्रह्मण्य अपन माता-पिता कें समस्त वृत्तान्त सुनबैत छथि ---

'' शीघ्रे ओ महादेवी
वामा हाथें सम्हारि अपन केश-जाल
पति पर करैत
आग्नेय दृष्टिक निपात
कहलनि जे देखल अहाँ
अपन विशिष्ट शिष्यक आभार ?
यदि अछि वाँचल एखनो
कोनो दिव्य अस्त्र अहाँ लग
त' ओहो द' दिऔन हिनका
अपन आशीर्वादक संग
अहाँ लेल धन्न सन
बेटा यदि मरियो जाय
अहाँके त' भेटल अछि
अपन सुयोग्य आ श्रेष्ठ शिष्य
कहने छी अहीं हमरा एक वेर
' परशुराम छथि अतुलनीय श्रेष्ठ '
मुदा शिक्षा दातव्य होइछ
मात्र योग्य पात्र कें।''

पार्वतीक क्रोध एहि तरहे प्रकट होइछ आ समस्त दुनियाक स्वामी शिवके फुराइत नहि छनि जे ओ की कहथि। तखने अकस्मात् ओहि दुःख-पूर्ण परिदृश्य मे कोनो दिव्य वंशी सँ संगीतक ध्वनि सुना पड़ैछ। ओ मधुर एवं अनुपम संगीत कैलाशमे सभकें प्रसन्नता आ शांति प्रदान करैछ। संगीतक अनुगमन करैत संगीतकारो उपस्थित होइत छथि। ओ आन क्यो नहि, राधाक संग स्वयं कृष्ण छथि। राधा एवं कृष्णक छवि एतेक प्रकाशमय छल जे हुनका सभक उपस्थितिमे भास्वर शिवोक तेज दिन मे दीप जकाँ मन्द पड़ि जाइछ। दीप्त शब्दावली मे कवि हुनका सभक सुन्दरताक वर्णन करबाक प्रयास करैत छथि ---

'' ओ सुन्दर छथि
वर्षाक बादल-सन कारी वर्णक
प्रकृति सँ चंचल छथि

तड़ित सम धवल वेशधारी
कर जनिक कोमल छनि पल्लव सम
उद्‌भासित छथि अपन प्रिय वंशीक संग
मोर- पंख सँ शोभित छनि मनोरम केश जनिकर
गहने छथि हाथ ओ
जाहि युवा नारी केर
लगैत छथि प्रफुल्ल ओ
ओहि चम्पक प्रसून सम
छिड़ियबैत अछि सुगंधि जे
चारू दिशा मे
प्रभातक सूर्य संग प्रफुल्लित
कमल समान मुख छनि हुनकर
पहिरने छथि साड़ी ओ
प्रवालक समान कान्तिमान।"

एहि मनोरम जोड़ीक कैलाश प्रसन्नतापूर्वक स्वागत करैत अछि। हुनका सभक पैर पर प्रत्येक व्यक्ति अपन माथ झुकबैत छथि। परशुरामक मुँह पियरायल छनि, संभवतः पार्वतीक क्रोधक भय सँ वा ओहि विचारक दुःख सँ जे गणपतिक संग हुनक मित्रता आब टूटि जयतनि। राधा आ कृष्ण हुनका दिस करुणापूर्ण नजरि सँ देखैत छथि। राधा गणपतिक समीप जाइत छथि आ मातृ-सुलभ वात्सल्यक संग हुनका अपन कोरा मे ल' हुनक कटायल कपोल अपन हाथ सँ सोहरबैत छथि। हुनक घाओ लगले ठीक भ' जाइत छनि। गुणवती राधाक तरहत्थीमे स्वर्गीय अमृत भरल छनि। कृष्णक वंशीयो सँ मधुर स्वर मे ओ पार्वतीसँ कहैत छथि ----

" जखन बच्चा सभ करैत छथि
बदमाशी एक- दोसरा संग
की ई उचित छैक
मायक लेल क्रोधित होयब ?
हे अहाँ महान नारी,
जहिये सँ भेलाह अछि
परशुराम अहाँक पतिक शिष्य
अहाँ भ' गेलहुँ अछि
तीन पुत्रक माय तहिये सँ
कुलीनवंशी एहि व्यक्ति कैं
मानू अहाँ बहुमूल्य

अपनो संतान सँ
अपना हृदयमे राखू
महान प्रेम हिनका लेल
प्राप्त जे भेल छथि अहाँकें पुत्र रूपमे
विनु कोनो गर्भक चिन्ता
आ प्रसव केर पीड़ाके।''

तखन एहि तरहें पार्वती परशुरामक प्रति अपन रोष लेल पश्चात्ताप करैत छथि ----

'' देखलखिन जखन पति हुनकर
अर्थपूर्ण मुस्की संग हुनका दिस
चन्द्रमुखी रुद्राणीक मुखमण्डल
झुकि गेलनि लज्जा सँ
आ तखन प्रेमपूरित हृदय सँ ओ
उठौलनि स्वयं परशुरामकेँ
खसल जे रहथि हुनक पद्म -पाद पर
दुलरौलनि फेर ओ
ओहि परशुरामकेँ
जे छलाह महान योद्धा
निर्मल चित्त, भय-विहीन
तखन ओ शोभित भेलाह
एकटा शिशुक समान
समस्त विश्वक माताक कोरामे।''

एहि कवितामे देवतासभक मानवीकरण कयल गेल अछि, हुनका सभकें पारिवारिक झगड़ामे ओझराइत देखाओल गेल अछि, परंच ई सभ हुनकासभक दैवी गरिमा सँ बिनु पूर्णतः च्युत कयने कयल गेल अछि। घटित घटना मे समस्त लोककें सम्मिलित होयबाक बातक बेर- बेर उल्लेख, शिव आ पार्वतीकें समस्त जगतक माता- पिता होयबाक विशेषगुण सँ समन्वित देखायब, हुनका सभकें ईश्वर आ अष्टमूर्ति आ महादेवी कहब, राधा एवं कृष्णक दिव्य सुन्दरताक वर्णन करब आ संगहि कविताक गरिमामय शैली- ई सभ किछु एहन कौशलपूर्ण उपाय कयल गेल अछि जाहि सँ देवता लोकनिक देवत्वकें सुरक्षित राखल गेल अछि। लोकगीत आ पौराणिक गाथा सभमे देवता-लोकनि बहुधा मनुक्ख सन व्यवहार करैत देखल जाइत छथि आ हिन्दू मन- मस्तिष्क दैवी पात्र सभक एहन मानवीकरण सँ विचलित नहि होइछ। वल्लत्तोल हिन्दू मनोविज्ञानक एहि तत्वक कुशलतापूर्वक उपयोग करैत छथि। एहि काव्यक प्रत्येक पदक दोषहीन गठनक कारण ई एकटा अत्युत्तम कला-कृति बनि गेल अछि। ई एकटा छोट मनोरम नाटको थिक

जाहि मे प्रभावित कर'-बला पात्रसभ छथि-- निर्भय परशुराम, चपल गणपति, बुद्धिमान सुब्रह्मण्य, कुपिता पार्वती, हुनक घबड़ायल पति आ शान्ति- स्थापक राधा आ कृष्ण, जे सभ बड़ मधुर आ दीप्त पात्र छथि। संगहि एहि मे सुन्दर दृश्य सभक योजना भेल अछि-अलकाक पथ सँ परशुरामक जायब, शिवक पुत्र द्वयक संग हुनक वार्तालाप आ युद्ध, गणपतिक अपन सूंढ़ि द्वारा हुनका घुमायब, हुनक (गणपतिक) दाँतक तोड़ल जायब, शिवक अनुचर गणक विविध प्रतिक्रिया, पार्वतीक भीषण क्रोध, शिवक घबड़ाहटि, राधा आ कृष्णक आगमन आ पार्वतीक क्रोधक शांतिक बाद हुनका पर शिवक मुस्कान।

' अनिरूद्धन ' आ शिष्यनुम मकानुम (शिष्य आ बेटा) ई दुनू कृति मूलतः नाटकीय थिक। एहि दुनू काव्य- कृति कें अत्यन्त सुविधापूर्वक छोट नाटक मे बदलि देल जा सकैछ। एहि दुनू कृति मे स्वरक भंगिमा, मुखाकृतिक स्पष्ट अभिव्यक्ति आ सशक्त हाव- भावक संकेत भेटैत अछि आ ई सभ अपन विषय-वस्तुक अनुरूप अत्यन्त जीवंत अछि। एहि दुनू काव्य मे शैलीगत सुन्दरताक अतिरिक्त पर्याप्त शक्ति छैक जे सावधानी सँ चयनित विवरण सभक समाकलन सँ प्राप्त होइछ।

अपन किछु इसाई मित्रसभक आग्रह पर वल्लत्तोल अपन अगिला वर्णनात्मक काव्यलेल एकटा बाइबिल सम्बन्धी विषयक चयन कयलनि। ई मेरी मगदेलनक कथा थिक जे संत ल्यूकक उपदेशक सातम अध्याय सँ लेल गेल अछि। वल्लत्तोलक 'मगदेलन मरियम' 1921 ई॰ मे प्रकाशित भेल छल। एकरा हुनक वर्णनात्मक कविता सभमे सर्वोत्तम मानल जाइछ जे सर्वाधिक लोकप्रिय भेल अछि। 'अनिरूद्धन' आ 'शिष्यनुम मकनुम' (शिष्य आ बेटा) क विपरीत एकर रचना द्रविड़ छन्द, ' माकन्दमंजरी ' नामक गीतात्मक छन्द मे भेल अछि, जकर पूर्वो मे ' साहित्य मंजरी ' क किछु कवितामे ओ सफलतापूर्वक प्रयोग कयने रहथि। ई कविता पाँच खण्ड मे छैक- पहिल खण्डमे साइमनक घर पर ईसामसीहक वर्णन, दोसर खण्डमे हुनक दर्शनार्थ मरियमक यात्राक वर्णन कयल गेल अछि, तेसर खण्डमे मरियमक अतीतक चित्रण भेल अछि, चारिम खण्ड मे ईसामसीहक उपदेशक श्रवण सँ मरियम मे भेल परिवर्तन वर्णित अछि आ अंतिम खण्ड, जाहि मे एहि रचनाक काव्यात्मकताक चरमोत्कर्ष देखबामे आओत, ईसामसीह संग मरियमक मिलनक कथा कहैछ। एहि कविता-क पाँच खण्ड मे विभाजन, भव्य वर्णन, सहज एवं स्पष्ट वर्णनात्मक विकास, बिम्बक उपयुक्तता, पंक्ति सभक आ मोहावरा सभक विशिष्ट सौन्दर्य एवं कविताक सर्वांगीण प्रवाह सँ स्पष्ट होइछ जे वल्लतोल ध्यानक केहन एकाग्रता संग एहि कविताक रचना कयलनि।

प्रथम दृश्य मे ईसामसीह साइमनक घर अबैत छथि। मुदा ओ सम्पत्तिशाली व्यक्ति हुनका आमंत्रित कयलाक बादो हुनक स्वागतमे उत्साह नहि देखाओल। ओ ने ईसामसीहक ठेहुन पर झुकि क' अभिवादन कयल ने पैर धोयबा लेल हुनका पानिये देल आ ने हुनक हाथक चुम्बन लेल --

" चुम्बन लेबा लेल ओहि पवित्र हाथक
जे दुनिया के दैत अछि समस्त वैभव
की नहि नमत अहाँक माथ
मुक्त भ' किछु कौड़ीक गर्वोन्माद सँ ? "

ईसामसीह अपन शिष्य सभक संग भव्य बहुरंगी रेशमी कालीन पर बैसैत छथि, जेना कृष्ण अपन सखासभक संग वृन्दावनक वनस्थली मे बैसैत छलाह, जाहि स्थल पर जूही, चम्पक आ अशोकक फूल बिखरल रहैत छल। जे अपन दैवी स्पर्श सँ पानिके सुरा मे बदलि देने रहथि हुनका साइमनक भृत्य सभ कतोक प्रकारक स्वादिष्ट खाद्य- वस्तु परसैत अछि। पक्षीवृन्द हुनक महिमाक गीत गबैत अछि आ सुगंधित मंद हवा हुनका लग नहुए- नहुए पंखा हुंकैत अछि। सघन कारी केश आ हुनक दाढ़ी, कविक शब्दावली मे हुनक मुख- कमल कें घेरने मधुमाछी लगैछ, कनेक फहरयला पर कालिन्दीक जल पर उत्पन्न कारी लहरि- सन चमकैत अछि। ईसामसीह अपना सम्बन्ध मे ख्यात अद्‌भुत वृत्तान्त आ ' महेश ' - सन प्रयुक्त उपमान कें छोड़ि कोनो परम्परागत धीर-ललित नायकक समान लगैत छथि। रमणीय राति आ साइमनक भव्य बैसका प्रेमक दृश्य लेल उपयुक्त पृष्ठभूमि प्रस्तुत करैछ। नायक आ त्राताक रूपमे ईसामसीहक चित्रण मे कवि संतुलन बनौने रखलनि अछि। अगिला दृश्यमे ' नायिका ' प्रस्तुत भेल अछि –

" हे तारागण,
अहाँ किएक शान्त- निश्चल भ'
निरन्तर ताकि रहल छी
नीचाँ दिस
एहन की संभव थिक
जे अहाँ सभक बीचक केओ
धरती मुंहे पड़ल हो खसि
हँ, एतय एहि मार्ग पर
जा रहल जे आकृति अछि
बहुत किछु तारा जकाँ लगैत अछि·
किंवा ईहो थिक संभव जे
एकटा दोसर छोट चन्द्रिका हो
जूहीक फुलायल फूल जकाँ धवल
चन्द्रिका मे टहलैत।

नायिकाक सुन्दरताक वर्णन ऐन्द्रिय विस्तार संग कयल गेल अछि, जाहि मे हुनक देहक गोलाइ, सघन केशराशि तथा देह सँ बहराइत सुगंधि पर ध्यान देल गेल अछि। ओ अपन प्रिय संग भेट लेल जा रहलीह अछि, मुदा हुनक मुखाकृति पर ने भयक भाव

अछि आ ने शंकाक। हुनका कोनो प्रकारक भय किएक होयतनि, कारण जे ओ अपन प्रियतम सँ भेट करय जा रहलीह अछि, जाहि प्रियतम सँ प्रत्येक जीवात्मा कें भेट करबाक छैक। मेरी साइमनक घर पर पहुंचैत छथि आ ओतुका खुजल द्वार हुनका स्वर्गक प्रवेश द्वार- सन लगैत छनि। जेना समुद्र लग पहुंचि क' कोनो धारक गति मन्द पड़ि जाइछ ओहिना हुनको चालिक तेजी कम भ' जाइत छनि। पुनः ओ तेजी सँ दौगैत सीढ़ी चढ़ैत छथि आ द्वार पर पहुंचि ठमकि जाहत छथि ---

" हे मनोरमे
शंकित चित्त रहू जुनि
ठमकल अहाँ द्वार पर
द' सकैत छी डेग अहाँ
खुशी- खुशी घरक भीतर
चलला सँ निषिद्ध मार्ग पर
लागि जे गेल छल पंक अहाँक पैर मे
धोआ क' भ' गेल अछि स्वच्छ
अहाँक आँखिक खसल नोर सँ।"

अगिला खण्ड मे हुनका द्वारा चलल अधलाह मार्गसभक कविता मे चित्रण कयल गेल अछि। ओ कोनो उजड़ल-पुजड़ल छोट- छिन झोपड़ी मे जन्म लेने रहथि, जत' दरिद्रता निवास करैत छल। मुदा ओ परम सुन्दरि रहथि। केओ नहि जनैछ जे कोनो पाथर पर ओहन यौवनक परिपूर्णता प्राप्त भेलनि, ओ चारूकात सँ अपन प्रशंसक सँ घेरा गेलीह, जिनका सभक स्वार्थ प्रेरित वासना हुनका कुमार्ग पर ल' अनलकनि। पहिने त' हुनक अन्तःकरण हुनक काम- संगतिक विरोघ कयलकनि, मुदा अपन सौन्दर्यक प्रशंसामे गाओल स्तुति गानक नाद मे हुनक आत्माक विरोध डूबि गेलनि ----

" ओ
जिनका नहि उपलब्ध रहनि
एक मुट्ठी चाउर
अपन बुभुक्षाक शमन हेतु
भ' गेलीह सत्वर ओ
स्वर्ण-छत्र-धारिणी रानी
वाह रे सुन्दरता !
जखन अहाँ करैत छी
सुशोभित कोनो नारी- देह
कोन एहन सौभाग्य थीक
जे रहि जाइछ अपराजेय ? "

ई कोना संभव भ' गेलैक जे ई स्त्री जे पापक गर्त मे पड़लि छलीह, आइ लोक कल्याणक भावना सँ उद्विग्न भ' गेलीह अछि ? मन्द पवन द्वारा अमृतक ठोप समान आनल ईसा मसीहक वचन दूर सँ हुनका लग अयलनि। ओ वृन्दावनक ओहि मृगीक समान छलीह, जे कृष्णक मुरलीक नाद सुनबामे मग्न छलि। ओहि महान गुरुक उपदेश हुनक अन्तर मे पैसि हुनका अपन निजी जीवन दिस दृष्टिपात करवा लेल विवश क' देलकनि। 'सतीत्व' नामक शव्दक हुनका जीवन मे कोनो स्थान नहि रहनि आ ओ कोनो नव भयक कारण काँपय लगलीह। ओकरा वाद हुनक सुपरिचित परिवेश हुनका लेल भयाओन भ' गेलनि। हुनका अपन भवन नर्क-सन, आरामदेह आ आनन्ददायी ओछाओन काँटक ओछाओन सन आ अपन भृत्यगण भयानक प्रेतात्मा- सन प्रतीत होवय लगलनि। हुनका मन मे एकटा विशाल मरुस्थल पसरि गेलनि आ दुःस्वप्नक बोध हुनका सताबय लगलनि। एना प्रतीत होवय लगलनि जेना हुनका एकटा सोनक जहाज पर जाहि मे राजसी सुख-भोगक वस्तु पर्याप्त मात्रा मे लादि देल गेल हो, सवार क' ओहि जहाज कें एकटा सैतान (राक्षस) द्वारा आगिक समुद्र मे आनि हुनका ओहि मे धकेलि देल गेल हो। भय, विवशता आ एकाकी-पनक भाव सँ आक्रान्त भ' ओ अन्तर सँ टूटि गेलीह आ कानय लगलीह ---

" कानू, कानू हे मृगनयनी,
कनैत लोकक सहायक
होइत छथि ईश्वर।"

ईसा मसीहक सान्त्वना भरल शब्द हुनका कान पड़लनि। पापकर्म द्वारा अर्जित अपन समस्त सम्पत्ति ओ दीन-दुखिया सबमे वाँटि देल आ अपन शेष जीवन प्रार्थना मे विताओल।

काव्यक अन्तिम चरण मे कवि ईसा मसीहक संग मरियमक भेटक वर्णन करैत छथि। ओ ईसामसीहक लग आवि हुनका पैर पर खसि पड़ैत छथि। हुनक प्रेम, जे आब मात्र ईश्वरक प्रति रहि गेलनि अछि, नोरक रूपमे बहय लगैत छनि। ओ अपन नोर सँ ईसामसीहक पैर धोइत छथि, अपन रेशमी केश-राशि सँ हुनक पैर पोछैत छथि आ अपन पवित्र ठोर सँ हुनक चरणक चुम्बन करैत छथि ---

" हे नारी,
भ' गेल आइ पवित्र
अहाँक ठोर
आइ ओ कयलक अछि चुम्बन
ओहि स्थानक
जतय ओकरा करबाक चाहैत छलैक।"

तखन ओ अपना संग आनल अत्तर सँ हुनक माथ धोइत छथि, जे स्वयं समस्त पुष्पराशि कें सुंगधि प्रदान करैत छथि। ओ हुनका सँ कहैत छथि ---

" स्वामी,
बड़ पैघ अपराध
कयल अछि हम
अवहेलना क' अहाँक उपदेशक
हे जगन्नियन्ता,
क' दिअ' माफ हमर पापकर्म
आ चरण मे शरण दिअ'
एहि सेविकाकेँ
- - - -
यद्यपि हम कयल अछि ओ कर्म
जे वर्जित छल हमरा लेल
जुनि करू त्याग हमर तथापि
हमहूँ त' आखिर
सृष्टि छी अही हाथक
जे क' सकैछ आगियो के शीतल।"

ओकरा पर जे अन्हार मे पड़ल अछि, सूर्यक पहिल किरण जकाँ हुनक कृपा-दृष्टि पड़ैत छनि आ ओ मरियम सँ कहैत छथि ----

" हे हमर संतान'
बिसरि क' सब अपन संताप
अहाँ जाउ
अहाँक अन्तरक आस्था
बचा लेलक अछि अहाँकेँ
विनष्ट होयबा सँ
अहाँ द्वारा कयल सभ दुराचार लेल
अहाँक पश्चात्तापे
अहाँक प्रायश्चित्त थिक।"

एहि कवितामे मात्र तीन टा चरित्र अछि -- साइमन, मरियम तथा क्राइस्ट (ईसामसीह)। साइमन एको शब्द नहि बजैछ। ईसामसीहक जेहन अनुत्साहक संग ओ स्वागत कयलक, ओहि सँ ई संदेह होइछ जे की ओ मात्र अपन कौतूहलक शन्ति हेतु हुनक स्वागत कयलक अथवा अतिथिगण पर अपन प्रभाव जमाब' लेल कयलक। अपन घर आयलि मरियमक ओकरा द्वारा कयल स्पष्ट तिरस्कार सँ ई संकेत होइछ जे ओ एकटा सांसारिक, स्वार्थी आ कठोर हृदयक लोक छल। वल्लत्तोल पर्याप्त नाटकीय संक्षिप्तता संग साइमनक चरित्रक रेखांकन कयलिन अछि। ईसा मसीह मनुष्य आ देवता-दुनू छथि -- अपन

सामीप्यक कारण मनुष्य एवं अपन चमत्कारी शक्तिक कारण तथा अपन दैवीगुण (क्षमता) सँ ओहि पापिनक पापक विनाश क' देवाक कारण ओ देवता छथि। ओ अपन कृष्णक समान एहन प्रेमी- देवतो छथि जे प्रणय- भक्तिक परमानन्दक प्रेरणा दैत छथि। अंतिम दृश्य मे मरियम अत्यन्त विह्वल भ' जाइत छथि, जखन ओ प्रेम,दुःख आ पश्चात्तापक कारण ईसा मसीहक पैर पर खसि पड़ैत छथि आ दयाक याचना करैत छथि।

जीवनक अत्यन्त गंभीर पक्षक स्पर्श कयनिहारि कविता तखने वास्तव मे नाटकीय भ' जाइछ जखन ओ मनोवैज्ञानिक समस्या आ नैतिक प्रश्न सब सँ जूझय लगैछ। वल्लत्तोलक कविता एहन कोनो प्रयास नहि करैछ। ओ एकटा मूक रचना थिक। स्थितिक, मात्र बाह्य व्यापारक वर्णन करैत अछि आ ओ पापक मनोविज्ञान अथवा पश्चात्ताप किंवा मानसिक परिवर्तनक गंभीर आ विशद् वर्णन नहि करैत अछि। पौराणिक (क्लासिकल) कला जकाँ कोनो स्थितिक वाहरी आ सार्वजनीन पक्षे टा पर ओ ध्यान दैत अछि।

एहि कवितामे एहन सुन्दरता भेटत जे प्रगीतात्मक संगीत, चित्रात्मक वर्णन, नाटकीय व्यापारक प्रवाह, मनोभावक सहजता एवं स्पष्टता तथा अलंकृत शैली सँ सम्पन्न अछि। बाइबिल सम्बन्धी विषय एवं एहि सुन्दरताक उपस्थापन लेल आवश्यक निरीक्षण जे प्रेमभक्तिक उत्कट भाव संगे समन्वित भेल हो, से एहि कवितामे पर्याप्त मात्रा मे भेटैछ। ' मगदलन मरियम' मे शब्द- विन्यासक पारदर्शिता सेहो उपलव्य होइछ, जे प्रायः कलाक चमत्कारी सिद्धि थिक।

वल्लतोलक अगिला वर्णनात्मक कविता थिक ' कोचु सीता ' अर्थात् ' शिशु सीता' जे 1928 मे प्रकाशित भेल। शिशु सीताक नाम चम्पकवल्ली थिक, जे युवा नर्त्तकी अछि आ जे रामायण सँ प्रभावित भ' सीताक समान पवित्र तथा चरित्रवती बनय चाहैत अछि। ई काज ओकरा कठिन लगैत छैक, कारण ओकर नानी, जे ओकर लालन-पालन करैत छैक, ओकरा अपन कुल- परम्पराक अनुसार वेश्या वनवय चाहैत अछि। ओकर सीता- भक्ति बुढ़िया नानी के सह्य नहि छैक। नानी ओकरा वेश्या- जीवनक धर्म बुझबैत छैक। ' चरित्रता ओहि लड़कीक लेल गुण थिक जे सुन्दर नहि अछि। सुन्दरतारूपी रत्न स्रष्टाक वरदान थिक। फुलायल चम्पक जकाँ तोरा राजा सभ चाहैत छथुन। तोरा गंधहीन फूल (अर्थात् चारित्र्य) क की आवश्यकता छैक ?'

मुदा चम्पकवल्ली पैघ होइतहि सीता तथा चरित्रताक गुणक प्रति अत्यन्त अनुरक्त भ' जाइत अछि। जाहि राति ओकर नानी एकटा ग्राहक कें ओक़रा लग पठबैत छैक, ओ ओतय सँ भागि जाइत अछि। दस दिनक बाद ओकर एकटा चिट्ठी अबैत छैक जे ओ आत्महत्या क' रहल अछि।

एहि कविता मे कविक काव्यकलाक नीक पाँती आ विम्ब सभ भेटैत अछि। बुढ़ियाक वर्णन कवि एहि प्रकारें करैत छथि --

'' लड़कीक नानी, जे वूढ़ि अछि, पलंग पर अलसायलि पड़लि अछि। ओ कामदेवक टूटल धनुष जकाँ ओठंगलि अछि। चम्पकवल्ली ओहिठाम सँ उठि क ठाढ़ि भ' जाइत अछि जाहि ठाम बैसि क' पढ़ि रहल छलि। ओ जयबाक तैयारी करैत अछि।

'' ओकर वक्ष पर लाल रेशमी जाकेट छलैक, ओ युवावस्थाक उपलव्धि सँ गोलाकार छल। ओहि पर रामायण राखल छलैक जकर एकटा कोन चम्पकवल्लीक गरदनि मे सटल छल। ओकर गरदनि मे मूँगा, मोती आ सोनाक गहना सभ चमकि रहल छल। ओ अपन मुँह एक दिस क' लेलक। लगैत छल जेना कमल अछि जे झुकि गेल हो। ओकर चिवुक सँ रामायण सटल छलैक। हाथ मे सुन्दर औंठी छलैक। पाछाँ मे लटकल कोमल केश कें ओ वन्हने छलि। ओकर पैर लाल छलैक। रेशमी घघराक छोर जेना पैर कें चुमैत छल। फर्श पर, जाहि बाटे ओ गेलि, सिन्दूर छीटल छल। ओ कोठरी दिस गेलि त' ओकरा मन मे नीक विचार छलैक।''

ओकर अंतिम पत्र भारतक ओहि नृत्यांगना सभक जीवन्त फोटो थिक जे अपन सतीत्वक लेल प्रसिद्ध छथि। मृत्यु वरण करबाक कारणक उल्लेख करैत ओ प्रार्थना करैत अछि -- "हे हमर मातृभूमि ! अहाँक चरण मे इएइ हमर अन्तिम प्रणाम थिक। यदि हमर पुनर्जन्म हो त' हम अहींक कोखि मे जनमी आ अपन बहिन सभकें पराधीनता सँ मुक्त देखि सकी।''

ई एकटा रोचक कविता थिक, मुदा अन्य कविताक अपेक्षा कम नाटकीय अछि। अंतिम भाग मे एकटा पैघ पत्रक कलाहीन प्रस्तुति सँ कविताक प्रभाव कमि गेल छैक।

1941 मे वल्लत्तोल 'अच्छनुम् मकलुम्' (एकटा पिता आ पुत्री) कविता लिखलनि। ई विश्वामित्र आ शकुन्तलाक काल्पनिक मिलन पर आधारित अछि। शकुन्तला कें विश्वामित्र जनमिते छोड़ि देने छलथिन। पति दुष्यन्त द्वारा उपेक्षित शकुन्तला हिमालय मे काश्यप मुनिक आश्रम मे रहैत अछि। ओकर छोट बेटा सर्वदमन आश्रम लगहक जंगल मे खेलाइत अछि। एक दिन विश्वामित्र महर्षि काश्यपक दर्शन करय अयलाह। ओ एकटा वृक्षक नीचां मे महर्षिक प्रतीक्षा करैत छथि। ई जनबाक लेल जे महर्षि आश्रम मे छथि वा नहि, ओ अपन शिष्य कें भीतर पठौलथिन। विश्वामित्र एकटा छोट बच्चा कें ओहिठाम देखैत छथि, जे खेलयबा मे लागल छल। ओ हुनका अपन पितामह लग ल' जयबाक लेल तैयार भ' गेल। विश्वामित्र कें आश्चर्य होइत छनि जे ई बाल-गोपाल के अछि, जे काश्यप कें दादा कहैत अछि। ओ ओहि शिशुक प्रति सहजें आकृष्ट भ' जाइत छथि आ ओकरा उठा क' अपन छाती सँ सटा लैत छथि।

ओ साहसी बालक, एक्के क्षण मे तपस्वी कें एकबेर फेर लौकिक जीवन दिस मोड़ि देलक। पुण्यात्मा विश्वामित्र निहुरि क' ओकरा ऊपर उठा लेलनि। अपन हाथ बढ़ा क' वात्सल्य भावसँ ओ ओकरा छाती सँ दबा लेलनि। मृग- चर्म झाँपल वक्षस्थल पर ओ

ओहिना शोभायमान छल जेना कारी आकाश मे तारा चमकल हो। ओकर केश कान्ह पर लटकैत छलैक, जे पसेना सँ भीजल छल। महर्षि अपन दाढ़ीवला मुँह सँ वालकक फूल सनक मुँह कें सटौलनि। कवि वालसुलभ चपलताक संग विश्वामित्र सँ पुछैत छथि --

'' की हम अहाँ सँ सादर एकटा प्रश्न पुछू, महात्मन?
अहाँके सर्वाधिक आनन्द ककरा सँ भेटैत अछि ?
' सच्चिदानन्द ' मुद्रामे तपस्या करैत काल, अथवा
एहि अवोध शिशुक आलिंगन करैत काल ?''

अपन वेटा कें तकैत माय ओहिठाम पहुँचि जाइत अछि। ओ दुव्वर आ कातर अछि। अपन सुन्दरताक अतिरिक्त ओकरा लग दोसर कोनो अलंकरण नहि छलैक। वालक ओकरा सँ कहैत छैक-- ' माँ, हम एम्हर छी।' मुदा माय के लग अयबा सँ पहिने ओ एकटा खेलौना देखैत अछि, जे कालिदास द्वारा वर्णित मार्कण्डेयक हाथक वनल माटिक मजूर छल। ओकरा लेबाक लेल ओ दौड़ैत अछि। शकुन्तला सँ मेनकाक सादृश्य देखि क' विश्वामित्र क्षण भरिक लेल विस्मित रहि जाइत छथि। हुनका मन भेलनि जे पुछियैक-- ' मेनका, अहाँ एतेक बदलल किएक छी ? ' मुदा, ओकरा सँ ओ यैह पुछलथिन -- ' कहू, एहि शिशुक सुखी माय अहाँ के छी ? एकरा मे सम्राट बनबाक सभटा शुभ लक्षण छैक।'' शकुन्तला उत्तर दैत अछि -- हम त' जंगल मे जनमलहुं आ माय छोड़ि देलनि। हम कण्वमुनिक पालल- पोसल दुहिता छी। राजा दुष्यंतक पत्नी आ मुनि विश्वामित्रक वेटी छी।''

' हमर ? -- विश्वामित्र चकित भ' पुछलथिन। ओकरा देखि क' मेनका मन पड़ि गेल छलनि। हुनका ओकरा सम्बन्ध मे कोनो शंका नहि छलनि। हुनक आँखि नोर सँ भरि गेलनि। शकुन्तला हुनका पैर पर खसि पड़लनि। ओकरा देखि क' विश्वामित्र कें असीम खुशी भेलनि। ओ ओकरा उठा क' ओकर माथ कें बेर- बेर चुमैत छथि। बाप जकाँ पुछैत छथिन -- "दुलारू बेटी, अहांक नाम की थिक ? बेटाक की नाम अछि ? अहाँ राजा पत्नी भ' क' एहि जंगल मे किएक अयलहुँ ?'

कातर स्वर मे ओ हुनका अपन रामकथा सुनबैत छनि, मुदा बिच्चे मे कोंढ़ फाटि जाइत छैक-- ' हम पति द्वारा उपेक्षित छी।'

विश्वामित्र तामसे घोर भ' गेलाह। तेहन रौद्ररूप भ' गेलनि जेना सौसे संसार कें जरा क' खाक क' देथिन। हुनका आंखि सँ ज्वाला बहराइत छनि आ सम्पूर्ण प्रकृति भयातुर भ' जाइत अछि। हुनका लेल ई असह्य छनि जे हुनक बेटीक अपमान हो। की दुष्यन्त ई नहि जनैत छथि जे विश्वामित्रक तपस्याक फलस्वरूप त्रिशंकु तथा हरिश्चन्द्र कें कष्ट भोगए पड़ल रहनि। ओ शाप देबहि लेल रहथि जे दुष्ट अपन गर्भवती पत्नी कें अकारण छोड़ि देलक . . . , किन्तु शकुन्तला निहोरा क' क' हुनका रोकि देलकनि --

''अहाँक बेटी अपन पतिक नाशक कारण ने वनय
आ ओकरा वैधव्यक आगि मे जर' ने पड़य
हमर जीवन विस्मृत भ' जाय छिअ।
किन्तु, हमर दुर्भाग्य अपन पुत्रकें सेहो
उपेक्षित ने होवय दीअय।''

आगां कहवा सँ ओ अपना कें रोकि नहि पवैत अछि -- "ओ अभागिन जे अपन माय- वाप द्वारा उपेक्षित भेलि, स्वाभाविक रूप मे अपन पति द्वारा सेहो उपेक्षित भेलि।''

विश्वामित्रक क्रोध शकुन्तलाक नोर सँ शान्त भ' गेलनि। ओ ओकरा कहलथिन --

''तोहर सुन्दर स्वभाव हमरो उवारि लेलक,
तों शीघ्र अपन बेटाक संग पति सँ भेंट करह।''

ई कविता छोट आ मधुर अछि। वल्लत्तोलक अधिकांश अन्य कविता जकाँ ई अलंकृत शैली मे नहि लिखल गेल अछि। ई सोझ आ मर्यादित अछि, एकर स्वर दुखी तथा कठोर छैक। पिता आ पुत्रीक अप्रत्याशित मिलनक नाटक मर्मस्पर्शी रूप मे चित्रित भेल अछि। वल्लत्तोलक कथा-काव्य जकाँ एहि दृश्य कें मूक नाटकक रूप मे कल्पित कयल गेल अछि। किन्तु एहि कवितामे वाह्य- कर्मक अपेक्षा पात्रक भाव पर बेसी ध्यान देल गेल अछि। दृश्य- वर्णन अथवा वातावरण- निर्माणक हेतु एक्को शब्दक प्रयोग नहि कयल गेल अछि।। वल्लत्तोलक अन्य कतोक कविताक अपेक्षा मानवीय सम्बन्ध आ भाव पर केन्द्रित होयबाक दृष्टिएँ ई कविता अधिक महत्वपूर्ण अछि। एकर भाव सोझ- सरल तथा संदर्भक सर्वथा अनुकूल अछि। पात्र- सृष्टि पौराणिक रूप मे कयल गेल अछि।

एहि पाँच वर्णनात्मक कविता मे, विशेषतः प्रथम तीन मे, वल्लत्तोलक काव्यकला एवं कल्पनाशक्तिक पूर्ण विकास भेल छनि। मनोविज्ञानक जटिलता तथा नैतिक जागरूकताक सूक्ष्मता दिस एहि कविता सम मे ओ बेसी ध्यान नहि देलनि अछि। एहि सीमाक अछैतो ई कविता सभ शक्तिशाली अछि। ओ अपना विषयक प्रति न्याय करैत अछि। अतीतक किछु दृश्यक नाटकीय प्रभावक संग पुनर्प्रस्तुति करैत अछि ई कविता। सभ पाठककें तन्मय क' लेबाक नाटकीय शक्ति एहि मे अछि।

प्रकृति-गायक

वल्लत्तोल प्रकृति पर पहिल कविता तखन लिखलनि जखन ओ एकइस वर्षक छलाह। ओ 'ऋतुविलासम' नामक कविता छल जे कालिदासक 'ऋतुसंहार' क अपरिपक्व अनुकृति छल। एहि मे ऋतु सभक वर्णन ओहि रूढ़िवादी ढंग सँ करैत छथि जेना बहुतो कवि कयने छथि। जेना, कवि अपन प्रियतमा कें शरत- रात्रिक सुन्दरताक परिचय दैत छथि-- '' देवी, जकर स्वर मधु सदृश अछि, शरतक ई राति एहन सुन्दर युवती अछि, चन्द्रिकाक धवल किरण ओढ़ा रहल हो भू- शय्या कें।'' कोइलीक संगीतक सम्बन्ध मे कवि कहैत छथि--

'' सुनि क' कोइलीक संगीत
जेना केओ चतुर मित्र
प्रेमी सभकेँ पोटि लैत अछि
तहिना अपन प्रेमी सँ बिछुड़लि
स्त्रीगण विरह- ज्वालामे जरैत हो।''

एहेन पदक बीच मे एकटा एहनो पद देखबा मे अबैत अछि जे अपन सौन्दर्य तथा प्रफुल्लता सँ चकित क' दैत अछि ---

'' नदी गरजैत अछि, पहाड़ीसँ खसैत जलधार सँ
फेनक गुब्बारा जल्दी- जल्दी उठैत-खसैत भँवर मे।
पैघ-पैघ लहरि एक- दोसरा कें चीरैत बढ़ैत अछि
कातक गाछ कें जड़ि सँ तोड़ि -मरोड़ि दैत अछि।''

वल्लत्तोलक प्रकृति- कविताक एकटा आकर्षक पक्ष ओकर यथार्थता थिक, जे हुनक काव्य- प्रशिक्षण अवधिक तुरंत बाद सशक्त रूपमे परिलक्षित भेल। ' साहित्य मंजरी ' क प्रारम्भिक संकलन मे हुनक एहन कविता अछि जे केरलीय सुषमाक परिचित दृश्यक वैविध्यपूर्ण वर्णन करैत अछि, जेना ' सान्ध्य अटन,' गामक हेमन्त,' 'गामक ग्रीष्म,' 'नाव मे जलयात्रा', 'भारतपुषा नदी,' 'तिरूरपोन्नानि नदी' आदि। यत्र- तत्र सँ उद्धृत किछु पद्यांश हुनक यथार्थवादिताक परिचय दैत अछि –

' एकटा पाड़ा मैदान मे चरि रहल अछि, ओकरा पीठ पर एकटा सुन्दर चिड़इ बैसल छैक, ओ अपन गोल सिंघवला माथ उठबैत अछि आ हमरा दिस अपन भयंकर आंखि तरेड़ि क' देखैत अछि। ' (सांध्यअटन)

' नदी सँ भयंकर मगरमच्छ बहराइत अछि। ओ कात मे रौद मे ओंघरायल अछि। एहन लगैत छल जेना पाथरक पैघ टुकड़ा जत' - तत' सजाओल गेल हो।' (हेमन्त)

' जखन लुक्खी, जकर पीठ पर सुन्दर-सुन्दर रेघा बनल छैक, आमक गाछ पर चढ़ैत-उतरैत अछि तखन बच्चा सभ नीचां मे ठाढ़ भ' क' ओकरा देखैत अछि। ओकर आकर्षक आँखि मे लोभक मोह छैक।' (ग्रीष्म)

एहन यथार्थवादी विम्ब संग परम्परागत विम्ब सेहो अछि जे अनलंकृत एवं आकर्षक अछि। कविक यथार्थबोघ आ कोमल संवेदना कतोक बेर आवर्त्तित विम्ब मे सेहो प्राणक संचार क' दैत अछि। ' साँझुक पैदल यात्रा ' मे ओ नदी पर आकाशक प्रतिविम्बक वर्णन करैत छथि। ' गढ़गर लाल रंगक सांध्यकालीन आकाश, पोखरिक बीच मे दर्पण जकाँ देखि सकैत छी। ओहिठाम पोखरि मे लाल कमल फुलायल अछि।'

' भारतपुषा ' मे नदी के खुशी-खुशी देखय बला तीलक वर्णन अछि, नदी सहस्र पर्वतक बेटी थिक ने। अपन पति पश्चिमी सागर सँ भेट करबाक लेल ओ इतराइत चलल जाइत अछि।

' नाव मे जलयात्रा ' कविता मे चन्द्रमा अन्हार राति मे उठैत अछि आ पूबक आकाश रूपी पवित्र पोखरि मे श्वेत कमल जकाँ फुलाइत अछि। लहरि पर थिरकय वाली चन्द्रिका कें चन्द्रिका नहि कहल गेल अछि, पानि मे हेलय वला उज्जर हंस कहल गेल अछि। 'वर्षा- बादल कें देखय बला कृषक ' कविता मे परम्परागत विम्ब पर मौलिकताक मुल्लमा चढ़ाओल गेल अछि।

' जखन वर्षा ऋतुक कारी मेघ पसरि जाइत अछि तखन धरती लाज सँ लाल भ' जाइत अछि। पतिलग अबैत काल कनियाँक मुंह जेना लाज सँ लाल म' जाइत छैक। ओकर शरीर सँ बिजलौकाक लक्ष्मी जेना सटि गेल हो। ओ इन्द्रधनुषक माला पहिरने हो, अंधकारक देवता अछि ओ आ दुःख सँ पीड़ित कें बचयबाक हेतु आयल अछि।'

केरलक विभिन्न ऋतुक सौन्दर्य कें कवि आह्लाद सँ देखलनि अछि। ओ हेमन्त आ ग्रीष्मक सम्बन्ध मे लिखलनि अछि। वर्षा तथा ओनमक समय पर लिखलनि अछि, वर्षाक बादक सुन्दर आ सुखद दिनक वर्णन सेहो कयलनि अछि। हुनका प्रकृतिक प्रतिएँ मनुष्यक दृष्टिकोण प्रकृतिए जकाँ महत्वपूर्ण बुझाइत छनि। 'हेमन्त' मे हम हुनका सभकें देखैत छियनि जे साँझ मे घूर कें घेरि क' ठाढ़ छथि आ आगिक ऊपर अपन दुनू हाथ अनुग्रहक मुद्रा मे रखने छथि। ' ग्रीष्म ' मे हम भोरे-भोरे किसानक गीत सुनै छी जे अपन खेत कें पटयबा मे व्यस्त छथि आ बच्चा सभकें आमक गाछ तर पाकल आम बीछबाक लेल दौड़बैत छथि। 'वर्षाकालक एकटा साझुँक यात्रा' मे कवि कहैत छथि --

'हवाक झोंका आयल घमंड सँ
बादल ओकरा सँ भिड़बाक लेल तैयार भ' गेल
हम यात्रीगण वर्षा सँ भीजि गेलहुं आ थरथरा गेलहुँ
हमर छत्ता सँ खसैत पानिक बुन्न चानीक तोरण द्वार सन सुन्दर छल
किन्तु ओ हमरा बरखा सँ बचा नहि पओलक।'

वर्षा मे पैरे चल' बला एक गरीबक वर्णन कवि एहि रूप मे करैत छथि -- ' हवाक झोंका उठल, मूसलाधार पानि बरसल, मुदा एकर एको रत्ती परवाहि कयने बिना केओ रास्ता पर चलि रहल अछि। ओ एकटा मैल धोती पहिरने अछि। ताड़क पात अपना माथ पर राखि पानि सँ ओकरा बचबैत अछि। ओकरा कोनो असुविधा नहि बुझाइत छैक। ओकरा त' गरीबीक कष्ट छैके।'

मनुष्यक प्रकृतिस्थ वर्णन करितहुँ ओ प्रकृति-सौन्दर्यक विशद चित्रण करब नहि बिसरैत छथि। जेना, ' ग्रीष्म ' नामक कविता मे केरलक गरमीक खास खूबी दिस कवि हमर ध्यान आकृष्ट करैत छथि। पाकल आम, सोनाक मटरमाला सन देखाइत पीयर फूलक गुच्छा, हरियर- धनगर खेत तथा ग्रीष्मकालीन साँझुक शांति आदिक वर्णन ओ करैत छथि यद्यपि वल्लत्तोलक कविता मे सामान्यतः प्रकृतिक प्रसन्न मुद्रा अभिव्यक्त भेल अछि, तथापि ओ प्रकृतिक निष्ठुर तथा भयंकर पक्षक सेहो समान रूप सँ वर्णन करैत छथि। केरल मे ई निष्ठुरता-वर्षाक भयंकरता तथा दुर्भिक्षक समय मे प्रकट होइत छैक। 'अद्वैतम, शिवम् शान्तम्' शीर्षक कविता मे भदवरिया दिनक तुलना जंगली हाथीक झुंड सँ कयल गेल अछि। कवि नारिकेरक एकटा कुंज कें देखबैत छथि जतए किछु गाछ खसल अछि आ किछु गाछक पात टूटि गेल अछि। हाथीक आक्रमण सँ तोड़ल गेल किछु आओर गाछ अछि। ' अतिवृष्टि ' शीर्षक कविता मे कवि अन्तहीन वर्षा सँ उत्पन्न कष्टक वर्णन करैत छथि। ओ एकटा डारि पर वैसल चिड़इ कें देखैत रहैत छथि।' बड़ सिनेह सँ ओ अपन असहाय बच्चा कें अपन खोंता मे रखैत अछि। ओकर पाँखि भीजल छैक, थरथराइत छैक। ओ बेर- बेर आकाश दिस आँखि उठा क' देखैत अछि, जाहिठाम मेघ- घटा लागल अछि, एहन दुर्दिन मे कतेक दिन बितौने अछि। ओ अपन चहकब जेना बिसरि गेल अछि।'

मनुष्यक स्थिति सेहो एहि सँ नीक नहि। ओकर डाँड़ पर एकटा पैघ चिप्पी छैक जे भीजल अछि। एहि घोर वर्षा मे ओकरा काज कतए' भेटतैक। ओ भूख सँ तड़पैत अछि।

'अन्यवेष भ्रमम' शीर्षक कविता मे ओ 1950 ई॰ क क्रूर वर्षा ऋतुक वर्णन सजीव रूप मे प्रस्तुत करैत छथि। कविताक अन्तिम अंश मे केरलवासीक आधुनिक फैसनक प्रति मोहग्रस्तताक ओ उपहास करैत छथि। ओ निर्दय वर्षा- बादल सँ कहैत छथि-- 'तोहर एहि अनावश्यक वर्षाक कारण बेंग सेहो तोहर प्रशंसा करब छोड़ि देलक अछि। तोरा देखि क' मजूर आब नहि नचैत अछि। हवा मे केवल किछु खड़-पात हिलैत अछि। 'तोहर प्रेमिका बिजली सेहो तोरा कहिया ने छोड़ि देलक। हौ मेघ, तोहर बज्र कत' छह? भविष्यक प्रति पृथ्वीक आशा पर त' नहुंए सँ वज्रपात क' दैत छह।'

केरलक दयनीय स्थिति पर कवि कनैत छथि – 'चन्द्रपक्ष मे सेहो चन्द्रमा नहि देखाइत अछि। सूर्य प्रकाशक समय मे - सितम्बर मास मे- सूर्य नहि देखाइत अछि। फसिल कटबाक समय नहि होइत अछि। किसान कें अन्न भेटबाक मौसम नहि अबैत अछि। केरल मे सभ किछु उनटा -पुनटा अछि।'

कवि केरलक हेमन्त ऋतु कें उपदेश दैत छथि – ' तोरा करिया साड़ी सँ अपनाकें झँपबाक आवश्यकता नहि। तोरा त' चन्द्रिकाक श्वेत रेशमी साड़ी आ ताराक गहने शोभा देतह। किएक तों विदेशी कपड़ा सँ आकृष्ट भ' गेलह अछि ? '

ग्रीष्म ऋतुक अन्तमे सर्वसाधारणक स्थिति देखि क' कवि मूर्च्छित भ' जाइत छथि। आकाश मे मेघक घूमब- उमड़ब, ठनकाक संग बरसबाक तैयारी करब आ धरती पर एको बुन्न खसौने बिना मेघक बिला जायब कविक मुख्य विषय छनि।

'किसान भदवारिक मेघ देखैत अछि ' शीर्षक कविता मे किसान चातक जकाँ करिया मेघ कें ध्यान सँ देखैत अछि आ ओकरा कान मे मृदंगक एकटा शब्द वज्रनाद जकाँ पड़ैत छैक। किसान कें कारी- कारी मेघ पाड़ा जकाँ लगैत छैक जे घासक मैदान मे चरि रहल हो। करिया मेघ कें ओ विष्णु मानैत छथि जे गरमीक ताप सँ संसार कें बचयबाक हेतु आयल छथि। किन्तु क्रुद्ध हवा मेघ पर झपटैत अछि। लगैत अछि जेना पाथरक वर्षा होइत हो। करिया पाड़ा भागि गेल।'

'जीवनक युद्ध मे दृढ़चित्तबला लोक सभ सेहो, जे अमूल्य रत्न सँ सुसज्जित धनुष ल' क' अबैत छथि, तीर चलयबाक अवसर नहि पाबि क' हारि जाइत छथि।'

' ग्रीष्मान्तक एक राति ' मे कवि बिजलीक खेलक अत्यन्त नाटकीय वर्णन प्रस्तुत करैत छथि। कारी आकाश मे, जे नीलरत्नक झंप सदृश लगैत अछि, बिजलौता चमकल आ बिला गेल। फेर एक बेर एहन दैवी रूप प्रकट भेल जे चानीक चमकैत आवरण ओढ़ने छल। ओहो अपन नानाविध रूप देखा क' तिरोहित भ' गेल। तेसर खेप स्वर्ण भेष मे एकटा आओर देवी रूप आयल। ओ नाचि क' देखा देलक।'

' भरि राति– भेर होयबा धरि- बिजलौका पूर्ण उत्साहक संग नृत्य करैत रहल। आकाश मे बादलक बाजा गूँजि उठल। तइयो एको ठोप पानि धरती पर नहि खसल। चातक पक्षीक चोंचक पिआस समाप्त भ' जयतैक ततबो पानि नहि खसल।' वल्लत्तोल पशु- पक्षीक प्रति सेहो उदार भावना रखैत छथि। चिड़इ पर हुनक अनेक कविता छनि। गाय- बड़द पर सेहो ओ किछु कविता लिखने छथि। 'एकटा कबूतर' शीर्षक कविता मे ओ एकटा परबाक वर्णन करैत छथि जे हुनक खिड़की लग दाना बीछि- वीछि क' खाइत छल। ओकर स्वागत करैत ओ कविताक आरम्भ करैत छथि आ ओकर सुन्दरता पर प्रशंसा व्यक्त करैत कविता कें आगाँ बढ़बैत छथि –-

' ई प्रभात हमरा लेल हर्षदायक अछि।
हे परबा ! अद्‌भुत सौन्दर्यक प्रतीक
अहाँ हमरा अत्यन्त प्रिय छी, हमरा घरक चहुँदिशि
अहाँ विराजमान छी।
अहाँक पैरक रंगक मनोहारिताक वर्णन असंभव अछि।
अहाँक चोंच आ पैरक लाल रंग
आ अहाँक शरीरक सौन्दर्य

पक्षीक गौरव थिक।
अहाँक आँखि
कोनो प्रिय महिलाक भाल परक
कुंकुमक विन्दी थिक।
अहाँक शरीर
केराक छोट कोशा सनक अछि।

कविता आगाँ बढ़ैत अछि – पक्षी तथा मनुष्यक जीवनक विचार कें आधार बना क'। मनुष्यक क्षोभ तथा क्रूरता पर, आ पक्षीक संतुष्टि एवं निष्कलंकता पर। पक्षी चलबाक उपक्रम करैत अछि त' कवि ओकरा सँ ओतहि रुकबाक प्रार्थना करैत छथि --

' सौन्दर्य ! इन्द्रधनुषक सत्व समेटने
सौन्दर्यक नदीक तरंग, हमरा एकाकी छोड़ि दिअ
आगाँ- आगाँ नहि जयबाक अछि।
अपन चोंच सँ दाना बिछैत
आ अपन सुन्दर पैर सँ नहुँए- नहुँए चलैत
अपन सुन्दरता सँ हमर आँखि कें मुग्ध करैत
किछु काल हमरा लग रहब।'

मुदा, अपन कण्ठ कें कनेक उठा क' जत' छोट लाल रेघा छैक, परबा कवि सँ विदा लैत अछि आ कवि ओकरा जयबाक अनुमति दैत छथि –

'दोसरा ककरो अहाँके देखि क' एतेक सुख भेटल छैक की ?
हमर आँखि कें पल भरिक लेल मुग्ध करबाक हेतु
हम अहाँके धन्यवाद दैत छी।
अहाँक घुमबाक बाट तकैत
अपन परिवार लग जा क' अहाँ
ओकरा प्रसन्न करू।
ई त' कोनो गृहस्थक धर्म थिकैक।'

'मुर्गा, चिड़इ मारल गेल, ' एकटा विलक्षण त्याग,' संतृप्त भ' जाउ, हमर मां ! ' एकटा बूढ़ि खबासिन ' सनक कविता मे सुन्दरता पर कविक प्रसन्नता, जीवनक प्रतिएँ हुनक गम्भीर सहानुभूति तथा पशु-पक्षीक प्रति मनुष्यक क्रूरता पर हुनक क्रोध देखल जा सकैत अछि। 'एकटा विलक्षण त्याग' केरलीय मंदिर मे प्रचलित मुर्गाक बलि पर केन्द्रित अछि। मुर्गाक सुन्दरताक वर्णन कयलाक बाद कवि देवी सँ पुछैत छथि -- "जखन अहाँ एहि पक्षी कें देखबैक, की अहाँक स्तन सँ दूध नहि बहत ?" भारतक प्राचीन परंपरा अहिंसाक स्मरण दिअबैत ओ कहैत छथि – ' घास कें खोटबो हमर पूर्वज पैघ पाप बुझैत छलाह' तन, मन आ वाणी सँ जे अहिंसाक पालन करैत छलाह–

'जतए एहन महात्मा सभ रहैत छलाह,

एहन देश की मनुष्यक ई अन्याय सहत ?
सोझ - सुधगंक ई हत्या,
जकरा बलिदानक नाम देल गेल अछि
ई भयानक काज बुधियार लोक सभ करैत छथि।'

'कृषक जीवन' कविता मे कवि बड़द सँ कहैत छथि -- हे बड़द, अहाँकें शान्ति भेटय। अहाँक माय हमरो दूध देलक अछि। अहां हमर प्रिय भाइ छी। हमर जीविकाक प्रधान आधार छी। अहाँक शरीर पर हमर ध्यान अछि, ओ चिक्कन आ स्निग्ध बनल रहय।''

प्रकृतिक नेना सभ वल्लत्तोल कें प्रिय छलनि, प्रकृतिक संग रहय बला मनुष्यो हुनका प्रिय छलनि, किसान हुनक सर्वप्रिय लोक छलनि। किसान पर ओ मारिते रास कविता लिखने छथि। 'वर्षा- बादल कें देख'बला किसान, 'असमीक प्रार्थना ', 'कृषक मीत', तथा ' अतिवृष्टि ' एकर किछु उदाहरण थिक। किसानक प्रति सहज प्रेम, हुनक कष्टक सहज बोध, हुनका प्रति आत्मीय सहानुभूति, हुनका पर अभिमान- ई सभ हुनक कविताक विशेषता थिक।

गांधीजीक एहि विचार कें वल्लत्तोल बरोबरि दोहरबैत रहैत छलाह जे यदि भारतकें सशक्त, प्रसन्न तथा स्वतंत्र रहबाक छैक त' किसानक स्थिति मे सुधार आवश्यक अछि। कृषक जीवनक किछु चित्रण ओ एहन कयलनि अछि जे सदा स्मरणीय रहत-- हरबाह बड़ आशा सँ आकाशक कारी मेघ कें देखैत अछि। अपन मड़ैयाक बरखा मे बहि जयबाक कारणें जाड़ मे ठिठुरैत गरीब ग्रामीण, अनुसूचित जातिक महिला साँझ मे खेत घुमैतकाल बाट मे सवर्ण सभ सँ बँचबाक हेतु पानि सँ भरल खेत मे कूदि पड़ैत अछि। नावचालक कवि सँ रामायण पढ़बाक अनुमति चाहैत अछि।

प्रकृतिक सौन्दर्य आ ओकर नानारूपक अतिरिक्तो की प्रकृति कें वल्लतोल बेसी गंभीरता सँ लैत छलाह ? प्रकृति सामान्यतः हुनका जीवनक प्रसंग विचार करबाक अवसर दैत छनि अथवा हुनक विचारक उदाहरण बनैत छनि। मुदा एहिमे अधिकांश विचार समयोचित होइतहुं अत्यन्त साधारण थिक तथा प्रकृतिक यथार्थता सँ सम्बन्धित थिक। बरखाक पानि कें लौकिक जीवन जकाँ देखबा मे अथवा मनुष्यक अमिट भूखकें पक्षीक संतृप्तिक विपरीत देखबा मे मानव- जीवन अथवा प्राकृतिक जीवन कें गंभीरता सँ देखबाक आ बुझबाक प्रयासक अभाव भेटैत्त अछि।

अपन किछु कविता मे ओ यथार्थ चित्रण वा तर्कसंगत विचारक अपेक्षा कल्पनाक प्रसार मे बेसी रुचि लैत छथि। 'प्रभात गीत' मे भोर कें एकटा काजुल खबासिन कहल गेल अछि, जे बितलाहा रातिक फूल (तारा) कें आकाशरूपी कोठरी सँ बहारि क' फेकि दैत अछि। चन्द्रमा रूपी उज्जर बर्तन कें दूर ल' जाइत अछि आ आकाश पर शुद्ध जल छिटैत अछि, कुंकुम सँ ओकरा सजबैत अछि। 'सत्यगाथा' कविता मे ई कल्पना आओर विकसित भेल अछि। एहि मे सम्पूर्ण प्रकृति कें सत्यक देवीक अभिव्यक्ति कहल गेल

अछि। ऊपर (आकाश)क महाशून्यता मे संध्याक छोट- छोट दीप अछि जे तारा वनि क' चमकैत अछि। समुद्र, जे सदति भूमि कें गीड़ि जयबाक डर देखबैत रहैत अछि, एकटा बच्चा द्वारा ओरिया क' पाछाँ धकेलि देल जाइत अछि। ई सभ देवीक आज्ञा शक्तिक परिणाम थिक।

" बिजलौका अहाँक तरुआरि थिक
मेघ अहाँक रथ थिक
कड़कैत ठनका अहाँक नगाड़ा
सभटा स्वर अहाँक जय-घोष थिक।"

प्रकृति सँ अनुभूत शक्ति आ महत्व मानव- जीवन मे अभिभावकक रूप मे प्रत्यक्ष होइत अछि--

" हे सत्य, जे अहाँक पैर चुमबाक लेल निहुरैत अछि
ओ निर्भय आ सभतरि दृढ़ भ' क' ठाढ़ भ' सकैत अछि।"

एहि कविता मे 'प्रकट' 'अप्रकट' कें छुवैत अछि। ईश्वर प्रकृति तथा मनुष्य कें मिलाव' वला काल्पनिक शक्ति अछि। मुदा, वल्लतोल ने त' रहस्यवादी छथि आ ने' प्रतीकवादी। ओ त' दार्शनिक कवि सेहो नहि छथि। हुनक सिद्धि थिक संवेदना तथा जीवन मे आनन्दक अनुभूति। प्रकृति हुनका लेल आनन्दक अजस्र स्त्रोत अछि। ओ समुद्रक ओहि लहरि कें देखैत रहताह जे केरलकें चानीक पद- पायल पहिरबैत अछि। असंतुष्ट भ' क' ओकरा निकालैत छथि, फेर पहिरबैत छथि, अथवा हवा आ मेघ आ नदी कें देखैत छथि, प्रकृतिक महत्वक गीत गबैत छथि, तथा ओहि ईश्वर कें घन्यवाद दैत रहताह जे हुनका एहि सिद्धि सँ अनुगृहीत कयलथिन अछि।

" हम कोना अपन लोभी छोट हाथ हुनका सम्मुख पसारू
जे बड़ कृपापूर्वक अपन स्नेह हमरा देलनि अछि।
रहबाक लेल हमरा घर देलनि, जाहि मे कतोक सुन्दर वस्तु अछि
एकर कारी गुदगुद ओछान, शीतलपंखा रत्नजड़ित
एकर नील झालरि आ चमकैत सुवर्ण गोल सेहो।"

उपरोक्त पद प्रकृतिक प्रति वल्लत्तोलक दृष्टिकोणक परिचायक थिक। ओ प्रकृति कें मानव कें प्राप्त वरदान तथा मानवजीवनक पृष्ठभूमिक रूप मे देखैत छथि। प्रकृति कें जखन कखनो ओ संहारात्मक रूप मे देखैत छथि तखन ओकरा निर्दय तथा ममत्वहीन मानैत छथि, जंगली, स्वतंत्र तथा मानवक प्रति विमुख नहि। वल्लत्तोल पूर्णतः 'क्लासिसिस्ट ' छथि ओ प्रकृतिक स्वतंत्र सत्ता नहि मानैत छथि। ओ प्रकृतिक लोकप्रिय पक्ष सँ चिन्तित छथि। ओकर महान तथा उन्नत रूप हुनका भयभीत नहि करैत अछि। प्रकृति, जेना ओकरा ओ देखैत छथि, एक दिस ईश्वर सँ सम्बन्धित अछि त' दोसर दिस मनुष्य सँ। प्रकृतिक दृश्यात्मक सुन्दरता पर आनन्द मे, प्रकृतिक मानवीकरण मे, जीवन मे नैतिकताक शिक्षा देबाक लेल ओ प्रकृति कें प्रेरक मानैत छथि। एहि रूपकें मानबा मे ओ विश्वक अन्य क्लासिसिस्ट मे सँ एक छथि।

एकटा स्वच्छन्दतावादी कवि

क्लासिकल मान्यता सँ अनुशासित तथा धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्पराक प्रति समर्पित कवि, विशेषतः जखन ओ विदेशी संस्कृतिक प्रभाव सँ सेहो असम्पृक्त रहल हो तखन, स्वच्छन्दतावाद दिस आकृष्ट नहि होइत अछि। तथापि एहि शताब्दीक प्रथम दशक मे मलयालम साहित्य तथा केरलीय समाज मे कतोक नव प्रवृत्ति कार्यरत छल। वल्लत्तोल एहि सँ अप्रभावित नहि रहि सकलाह। हुनक क्लासिसिज्म आत्मकेन्द्रित आ कठोर नहि छलनि' ओ नमनीय आ सादगीपूर्ण छल, नव प्रवृतिकें स्वीकार कर'-बला छल। एक सीमा धरि ओ छायावादी कवि छथि। मलयालम मे छायावादक विकास मे हुनक यथेष्ट योगदान छनि। क्लासिसिज्म तथा छायावादक मध्य सन्धिमे कोनो आश्चर्यजनक बात नहि छलनि' कारण क्लासिसिज्मक ई प्रकृति थिक जे ओ अन्य प्रवृति लेल बाट छोड़ि दैत अछि।

आधुनिक मलयालम छायावादी कविताक एक विशेषता, जे सभ छायावादी काव्य मे पाओल जाइछ, ई थिक जे कवि विषयक पाछाँ नुकायल नहि रहैत छथि, प्रत्युत् विषयकें अपन विचार आ भाव कें प्रकट करबाक माध्यम बनबैत छथि। कखनो-कखनो ओ पाठक सँ सोझा- सोझी सम्वादक स्थिति मे रहैत छथि, किन्तु बहुधा ओ आत्म-भाषण करैत छथि आ पाठक कें लगैत छैक जे ओ कविक आन्तरिक भाव कें बाहर सँ सुनि रहल अछि। मलयालम कविता मे प्रथम-पुरुषक शब्द यदा-कदा सुनबामे अबैत अछि, 'ज्ञानप्पाना' सनक पहिलुक काव्य मे एहि प्रकारक स्वर जत' - तत' सूनल जा सकैत अछि। संक्षेप मे, उनैसम शताब्दीक अन्त धरि कवि विषयक वस्तुगते प्रस्तुति पर बेसी ध्यान दैत छलाह। अंग्रेजी शिक्षाक आविर्भाव सँ एहि मे परिवर्तन भेल। अंग्रजी कविताक, विशेषतः छायावादी कविताक, अध्ययन एकटा प्रभावकारी अनुभव छल। मलयालम मे शीघ्रे नवधारा फूटि पड़ल। छोट कविताक प्रचलन भेल। कवि अपन भाव आ प्रतिविम्ब कें व्यक्त कर' लगलाह। ए. आर. राजराज वर्मा लिखित 'मलयविलासम्' मे सह्य पर्वत कें देखैत कविक विचार अभिव्यक्त भेल अछि। बी. सी. बालकृष्ण पणिक्कर लिखित 'विश्वरूपम्' तथा 'एकटा विलाप' नामक कविता मलयालम मे नव काव्यधाराक उदाहरण थिक। एहि मे दोसर मलयालमक प्रथम शोक गीत थिक। सी. एस. सुब्रह्मणियम पुटिकाक 'एक विलाप' तथा के. सी. केशव पिल्लै लिखित 'आसन्न मरण शतकम्' सेहो एही

प्रकारक काव्य थिक। एहि मे सँ कोनो कविता मे आत्मपरकता नहि अछि, तइयो कविक स्वर एहि मे स्पष्ट भ' गेल अछि। कुमारन् आसान् रचित 'खसल फूल' प्रतीकात्मक ढंगक शोकगीत थिक, जे एहि बातक स्पष्ट प्रमाण अछि जे नव रूप प्रचलन मे आबि गेल अछि। वल्लत्तोलक छोट-छोट कविता एहि नव प्रकारक कविताक क्षेत्र मे एकटा महत्वपूर्ण देन थिक। हुनक कतोक कविता वर्णनात्मक अछि, वर्णन विचार सँ घुलल-मिलल अछि आ प्रत्येक कविता मे विचार कोनो खास मनःस्थिति अथवा भावात्मक स्तर सँ व्यवस्थित अछि। तें 'नौका विहार', अपन मातृभूमिक प्रति, 'कविता जे हवाक संग उड़ि गेल' सदृश कविता मे विषयगत उल्लेख एकदम स्पष्ट अछि। ई उल्लेख 'वधिर विलाप', 'हमर उज्जर केश कैं देखि कैं,' 'हमर छोटकी बेटी' सनक कविता मे आओर स्पष्ट अछि। 'विलाप' मे ओ कहैत छथि–

'' काल्हि भोर धरि हम किछु आओर नीक भ' जायब, एहि आशा सँ राति मे हम सुतबाक लेल जाइत छी। किन्तु, हे प्रभातक देवी, जखन हम जगैत छी तखन हमरा बड़ निराशा होइत अछि। दुनियाक विविध शब्द जखन हमरा कर्णगोचर नहि होइछ तखन हमर मोन आलस्य सँ प्रभावित भेने विना निद्रामग्न भ' जाइत अछि। कविता पर आनन्दित देवी ! हम कखन अपन मित्रक संग कोनो कवि सम्मेलन मे जा पायब। जखन ओ अपन कविता सुनबै छथि तखन हमर दुःख असीम भ' जाइत अछि, किएक त' हम ओकरा सूनि नहि सकैत छी।''

'हमर उज्जर केश कें देखि क' शीर्षक कविता मे ओ अपन असाधारण भाव के व्यक्त करैत छथि – 'ओ मुत्यु, हम अहाँक रास्ता मे नहि आयब। हम अहाँक निद्रा सँ नीक जकाँ बूझि लेलहुँ अछि जे अहाँक राज्यक केहन स्थिति अछि। भूत-प्रेतक अहाँक संसार मे हम अपन हृदयक प्रेमक प्रतिदान ककरा दी, जाहि प्रेम के हम बड़ कठिनता सँ प्राप्त कयलहुँ अछि। हमर एकटा छोट बेटी अछि सहानुभूति जकरा हम बड़ प्रेम सँ पोसलहुँ अछि - - - अहाँक उजड़ल - उपटल नगर मे ओ अपन नोरक मोती-माला ककरा गरदनि मे पहिराओत ? ''

हुनक देशप्रेम आ राष्ट्रीयतावादी कविता मे एहन भावात्मक प्रस्तुति अछि जे पढ़ि क' पाठक कें लगैत छैक जे कवि अपन कथ्य मे पूर्णतः आत्मसात भ' गेल अछि।

वल्लत्तोल अपन छोट कविता सभ मे आत्मनिष्ठ वा छायावादी नहि छथि। हुनक अधिकांश विचार साधारण छनि आ भाव विचार सँ एहि तरहें नियंत्रित छनि जे ओकरा छायावादी बनि जयबाक सम्भावना नहि देखाइत अछि। वल्लतोलक आत्मनिष्ठा बहुत किछु अँग्रेज कवि टॉमस ग्रेक शोक गीतक सदृश अछि। शोक गीतक भाव सामान्यतः एक्के होइत अछि – दुखात्मक। ओकर विचार मर्यादित आ रचनानुकूल होइत अछि आ पद-विन्यास आकर्षक। एकर अतिरिक्त कविता पढ़ैत काल पाठक के बुझाइत छैक जे कविक हृदय दुःखी, गम्भीर, शांत, उदासीन आ सचेतन अछि। वल्लत्तोलक कविता मे सेहो शैली एकदम शिष्ट अछि आ कविक भाव एवं विचार बहुधा केरलीय हिन्दू

संस्कृति पर आधारित। मुदा तइओ पाठक कवि सँ एक प्रकारक आत्मीयताक अनुभव क' क' हुनक व्यक्तित्व सँ परिचित होइत अछि। वल्लत्तोल आत्मनिष्ठ कविता लिखबाक साहस नहि कयलनि, किन्तु अपन मुक्तक कविता सँ, जे व्यक्तिगत कवित्व शक्ति सँ पूर्ण छल, ओ मलयालमक आत्मनिष्ठ काव्य-लेखन कें गतिशील कयलनि जे बादमे मलयालम साहित्य मे अत्यन्त प्रचलित भ' गेल।

कवि कें छायावादी एहि लेल कहल जाइत अछि जे ओ वर्तमान सँ असन्तुष्ट भ' एकटा सुदूर अतीत मे आश्रय लैत छथि आ ओकरा अपन आत्माक अभय स्थान बनबैत छथि। मध्ययुग छायावादी सभ कें निरन्तर आकर्षित करैत रहल। भारतीय छायावादी बहुधा मुगल सभक प्रताप अथवा राजपूत सभक वीरता अथवा भारतीय अतीतक गौरव पर मोहित भ' जाइत छथि। वल्लत्तोल सेहो अतीत-प्रेमी छथि। वेद-कालीन तथा पुराण-कालीन भारत हुनक कन्पनाक केन्द्र छनि। ओ ओहि पुरान किला मे, जलप्रवाह मे आ खण्डहर मे भ्रमण कर' चाहैत छथि। 'केलि-कोंचलि' कविता मे पाठक सँ कहै छथि —

"यदि पाठक के पसन्द हो त' कल्पनाक वायुयान मे चढ़ी
अतीतक आकाश मे हम प्रसन्नता सँ किछु काल उड़ी"

एहि कविता मे कवि पद्मपुराणक एक घटना कें ल' लेलनि अछि। नान्हिटा सीता, एक जोड़ा सुग्गा के पकड़ि लैत अछि, एकटा के पिजड़ा मे द' दैत अछि आ दोसरा के उड़ा दैत अछि। एहि आख्यान सँ ओ एकटा सुन्दर कविता बनौलनि अछि। अपन शैली, विन्यास तथा आकर्षण मे ई हुनक सर्वश्रेष्ठ कविता मे सँ एक अछि। पाठक जनकक विशाल राजधानी देखि सकैत अछि — रानीक अपूर्व सुन्दरता, सीताक बालसुलभ भंगिमा तथा रामायण पाठक प्रतिध्वनि ओ बेर-बेर सुनि सकैत अछि। जनकक आदर्श राज्य एवं शिशुक आदर्श एवं आकर्षक स्वरूपक माध्यम सँ ई अतीतक एकटा भ्रमण थिक। श्रीकृष्ण पर लिखित एकटा फोटो, अक्रूरक व्रज यात्रा, कर्मभूमिक छोट पैर आदि कविता सेहो अतीतक यशोगान करैत अछि। एहि मे धीया-पुताक खुशीक जमाना सँ कैल गेल वर्णन अछि। 'अनिरुद्ध बन्धन मे' - ई उषा तथा अनिरुद्धक प्रेमक काल्पनिक कथा पर आधारित अछि। 'शिष्य आ बेटा' मे पात्र देवी-देवता तथा एकटा मनुष्य अछि। पुराण प्रसिद्ध परशुराम छथि। पौराणिक विषय कें कतोक कविता मे लेल गेल अछि — जेना, केरलक माथ, ओ औंठी, भक्ति आ ज्ञान आदि मराठाक वीर आ शिवाजीक वर्णन 'जंगली मूसक चिट्ठी'। भारतीय वनिताक चारित्र्य-शुद्धि मे मुगल बादशाह हुमायूक जीवनक एकटा काल्पनिक घटनाक वर्णन अछि। एहि कविता मे आ एहने अन्य कविता मे सेहो वल्लत्तोल अतीतक वर्णन बड़ आनन्दपूर्वक करैत छथि। कखनो दृश्य कें केन्द्रित क' क' त' कखनो पात्रक सजीव वर्णन द्वारा आ कखनो धार्मिक तथा आध्यात्मिक मूल्यक माध्यम सँ एहि मे सँ कतोक कविता मे छायावादी आकर्षण प्रचुर मात्रा मे भेटैत अछि। अतीतमे जायब आ अतीत मे कल्पनाक स्वतंत्रताक उपयोग करब

सशक्त छायावादी प्रभावक परिणाम थिक। किन्तु ध्यान देबाक थिक जे वल्लत्तोल के अतीत तथा वर्तमानक बीचक खाधिक साधारण छायावादी बोधो नहि छनि। ओ अतीत मे आश्रय ताकएबला निराश शरणार्थी नहि छथि। हुनका लेल अतीत आदर्शक जलधारा छनि आ वर्तमान अतीतक अविच्छिन्न निरन्तरता। आर्ष भारत एक चिरस्थायी सत्य थिक आ वल्लतोल ओकर महिमा गबैत छथि।

हुनक रचना मे कौखन कोनो एकटा एहन कविता पाठक कें देखबाक लेल भेटैत छैक जे पूर्णतः आकर्षक वा अलंकृत होइछ। 'एक युवकक आत्मसंयम' एकटा एहन ब्राह्मण युवकक कथा थिक जे एकटा सुन्दरि अप्सराक प्रलोभन कें ठुकरा दैत अछि। 'एक कल्पना' वर्णनात्मक कविता थिक जाहि मे एकटा सुन्दरि अप्सरा कें वीणा बजबैत आ ओकर प्रेमी कें आराध्य भावसँ ओकरा टकटक देखैत चित्रित कयल गेल अछि। एहिमे कतोक अलंकृत विवरण अछि। वीणाक तार पर आँगुरक दनादन प्रहार सँ जखन ओहि सुन्दरीक आंगुर लाल भ' जाइत छलैक तखन प्रेमी ओकरा रोकैत छलैक। 'एकटा वीर पत्नी' युद्ध सँ बहरायल कोनो सैनिकक अपन पत्नी तथा बच्चा सभसँ विदा लेबाक दृश्य प्रस्तुत करैत अछि। हुनक कविताक विषय काल्पनिक हो वा पौराणिक अथवा जनश्रुति पर आधारित– ओहि सभ मे प्रचुर आकर्षण अछि जे ओकरा छायावादी गुण प्रदान करैत छैक। लोकोक्तिक सुन्दर प्रयोग, आकारक पूर्णता तथा कल्पनाशक्ति– ई तीनू मिलि क' हुनक कविता कें अतीव सुन्दर बना दैत अछि।

भावक अधिकता छायावादी गुण थिक। वल्लतोलक बाल कविता वात्सल्य सँ ओतप्रोत अछि। 'संतान सौख्यम', 'हवामे उड़ैत कविता', 'हमर छोट बेटी' तथा 'गुलाब आ बच्चा' -- ई सभ कविता अपन संरचना मे अतिउत्तम आ भाव सँ ओतप्रोत अछि। हुनक देश-प्रेम सम्बन्धी कविता मे सेहो एक प्रकारक आनन्द आ उदात्त भाव अछि जे कखनो क' छायावादी तीव्रताक सीमा धरि पहुँचि जाइत अछि। किन्तु हुनक प्रेम कविता छायावादी आदर्शक स्पर्शो नहि करैत अछि। ओ रूढ़ आ शृंगारप्रिय अछि अथवा रुढ़िवादी पारिवारिक आदर्शक अनुकूल, मुदा छायावादी विकार सँ ओ सर्वथा मुक्त अछि, से बात नहि। 'राधाक कृतार्थता' नामक कविता मे राधा अपन मधुर मिलन कें मोन पाड़ैत अछि आ तिरस्कृत होयबा सँ दुःखी भ' जाइत अछि। ओ एहि विचार सँ अपना कें बोधैत अछि जे ओहो अपन प्रेमीए जकाँ एहि संसार मे रहबाक योग्य अछि। एहि कविताक भावुकता एकदम फूसि -फटक लगैत अछि। 'अंतिमपत्र' पत्र-शैली मे एकटा नाटकीय स्वगत-भाषण थिक। पत्र लेखिका भामा जहर खा क' अपन गर्भस्थ शिशु सहित अपनहुँ कें मारि दैत अछि आ से तखन जखन ओकरा पता चलैत छैक जे ओकर प्रीतम फुसिआह छैक। ओ पुरूषक अधिकारक कटु आलोचना करैत अछि। ''एहन करबा मे की दोष ? वीर पुरुष अपन इच्छानुसार कोनो स्त्री कें स्वीकारि अथवा त्यागि सकैत अछि, त' की नारी कें ई करबाक अधिकार नहि छैक?'' 'जाति प्रभाव' शीर्षक कविता मे गौरी अपन प्रेमक खातिर सभ किछु त्यागि दैत अछि। वल्लत्तोलक

एकटा अन्य कविताक नायिका पतिक चिता मे कूदि पड़ैत अछि -- स्वर्ग मे ओकरा सँ मिलबाक लेल। एकटा अन्य नायिका, जे मलाहिन अछि, समुद्र मे कूदि पड़ैत अछि-- अपन डूबल पतिक संग देबाक लेल। ई सभ छायावादी प्रेम भने हो, किन्तु पतंग ताराक लेल औनाइत अछि अथवा राति भोरक लेल व्याकुल अछि, एहन बात ओ कतहु नहि लिखलनि अछि। जीवन मे अन्य कोनो वस्तुक अपेक्षा स्त्री-पुरुषक प्रेम कें गम्भीरता तथा भावात्मक शक्ति प्रदान कयल गेल अछि। वल्लत्तोल सनक परम्परावादी मे एहि तथ्यक उपस्थिति सूचित करैत अछि जे समय कोना बदलैत छैक आ नब रूप तथा आदर्श कोना जन्म लैत छैक।

कलाकारक रूप मे सेहो वल्लतोल छायावाद कें प्रोत्साहित कयलनि अछि। हुनका द्वारा प्रयुक्त कतिपय रूप आ शिल्प परवर्ती छायावादी कविताक लेल सर्वथा उपयोगी सिद्ध भेल। यद्यपि एहि प्रकारक प्रथम कवि ओ नहि छलाह, किन्तु छायावादी शिल्पक प्रयोग ओ तेहेन कौशल सँ कयलनि जे हुनका द्वारा नवीन छायावादी काव्य सहजता आ शीघ्रता सँ विकसित भेल। एहि मे एकटा प्रयोग थिक प्रथम पुरुषक उपयोग। दोसर थिक कथा-काव्य, जाहि मे नाटकीयताक प्रधानता अछि। परवर्ती कतोक मलयालम कवि नाटकीय स्थिति कें उभारबाक लेल अथवा पात्रक जटिलताक वर्णन लेल नाटकीय स्वगत भाषणक प्रयोग कयलनि अछि। जाहि सहजता सँ ओ ई क' सकलाह ताहि लेल ओ सभ वल्लत्तोलक ऋणी छथि। यद्यपि वल्लत्तोल नाटकीय स्वगत- भाषण अथवा कोनो आन तरहक नाटकीय रचनाक विशेषज्ञ छलाह, तथापि ओ नाटकीय कथन मे गति, पात्रक चरित्र चित्रण आदि क्षेत्र मे दोसराक लेल उदाहरण मात्र प्रस्तुत क' सकलाह। 'पिता आ पुत्री' हुनक नाटकीय प्रगीतक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण थिक।

द्रविड़ छन्दक विशिष्ट प्रयोग द्वारा सेहो वल्लत्तोल मलयालम कविताक सेवा कयलनि अछि। केरलकल्पद्रुमम् प्रेस द्वारा प्रकाशित 'कवनकौमुदी' क एकबेर एहि लेल आलोचना कयल गेल जे ओ द्रविड़ छन्दक कविताक स्वागत कयने अछि। तहिया संस्कृतेक छन्द नीक कविताक लेल मान्य छल। वल्लत्तोल द्रविड़ वृत्तक एतेक कुशल प्रयोग कयलनि जे ओ अपना लेल त' सहजहि, काल्पनिक प्रयोगक हेतु सेहो चर्चित भ' गेल। सभ द्रविड़ वृत्तक, विशेषतः 'केका' तथा 'माकण्डमंजरी' क, वल्लत्तोल अत्यन्त कुशलता सँ प्रयोग कयलनि। 'चेरूशेरी' (15 शताब्दी) तथा 'कुंचननमपियार' (16 शताब्दी) क बाद एहन दोसर कोनो कवि नहि भेल छल जे अपन कविताक विविधता वा मृदुलता मे हुनक समकक्ष हो। अपन छन्दगत विशिष्टता तथा शब्दगत स्पष्टता द्वारा ओ मलयालम कविता कें नव शक्ति प्रदान कयलनि, यद्यपि ओ मूलतः छायावादी प्रवृति नहि छल, तइयो ओ विशेषतः द्रविड़ छन्दक प्रयोग द्वारा मलयालम कविता के प्राचीन क्लासिकल स्वभावसँ मुक्त करबा मे तथा नब छायावादी कविताक विकास मे गति अनबा मे सहायक भेल।

यदि प्रश्न कयल जाय जे वल्लत्तोल छायावादी कवि छथि वा नहि ? त' एकर उत्तर होयत 'हँ' आ 'नहि' सेहो। छायावादक सारतत्व – आत्माक दुःख, अपन समय मे एकाकी होयब आ अपना मे बँटल होयबाक भावना—हुनका मे नहि अछि। ओ एकदम प्रसन्नचित्त छथि। पुराण काल जकाँ वर्तमान काल सँ सेहो सन्तुष्ट छथि। हुनक राष्ट्रीयता धरि—जँ कि ओ फैंटासी आ क्रान्तिकारी व्यग्रता सँ रहित अछि, एकटा स्वस्थ मनोवृत्ति अछि आ ओ उदात्त आदर्शवाद एवं उत्साहक किछु क्षण मात्रे मे छायावादी अछि। जीवनक प्रति हुनक दृष्टिकोण आत्मविश्वास आ आनन्द सँ परिपूर्ण अछि। मूलतः ओ क्लासिसिस्ट छथि, छायावादी नहि। किन्तु छायावादक किछु दोसर विशेषता हुनक कविता मे भेटैत अछि आ ओ हुनक मौलिक क्लासिकल गुणक शोभा बनैत छनि। वल्लत्तोल मलयालम कविता मे एकटा नव अध्यायक उदय मे सेहो योगदान देलनि अछि।

एकटा गद्य-लेखक आ समालोचक

जखन वल्लत्तोल 'केरलोदयम्' आ बाद मे 'आत्मपोषिणीक' सम्पादक छलाह तखन सामाजिक अभिरुचिक अनेक पुस्तक - समीक्षा आ लेख लिखलनि। हुनक समीक्षा कें हुनक मित्र कुट्टिकृष्ण मारार संकलित क' 'ग्रन्थ विहारम्' शीर्षक सँ 1925 मे प्रकाशित कयलनि। एहि समीक्षा सभ मे कवि कविताक आलोचक छथि -- कोनो नीक वस्तुक प्रशंसा मे उदार, भाषा-शुद्धि आ शैली-गुणक परीक्षा करबा मे सतर्क आ नकली तथा साहित्यिक बड़प्पन पर आक्रमण। जेना कि 'आत्मपोषिणी' मे कहल गेल अछि, आलोचकक रूप मे हुनक नीति कोनो पुस्तकक नीक पक्षक प्रशंसा करब छल, नब लेखक लोकनिकें साहित्यिक क्षेत्रमे प्रोत्साहन देब हुनका अभीष्ट छलनि आ तें हुनक नीति नब तूरक निन्दा करब नहि छल। कोनो आलोचक कें इमानदार आ उदार होयबाक चाही, अनुदार कखनहु नहि। मुदा, वल्लत्तोल स्वीकार करैत छथि जे एहन नवसिखुआ सभक प्रति ओ थोड़ेक अनुदारे होयताह जे कविक पंक्ति मे कहुना क' घुसिया जाइत छथि आ तुकबंदी करबाक नाहक चेष्टा करैत रहैत छथि। ओ दुःख प्रकट करैत छथि जे ई गप्प आइ बिसरि देल गेल अछि जे एकटा आलोचक मे विद्वत्ता, सच्चाइ, बोध आ स्मरण शक्ति होयबाक चाही आ आलोचनाकें प्रतिवेदीक विरुद्ध एकटा सशक्त हथियारक रूपमे प्रयोग कयल जाइत अछि।

अपन कविते जकाँ अपन आलोचनाक मूलभूत धारणा मे सेहो ओ एक क्लासिसिस्ट छथि। संस्कृतक पौराणिक आलोचनाक तत्व हुनक व्यावहारिक ज्ञान आ संवेदना सँ मिलि क हुनक आलोचनाक मार्ग- निर्देशन करैत अछि। हुनक पुस्तक समीक्षा मे तत्वक विशद वर्णन नहि होइत अछि। एहि क्षेत्र मे हुनक मार्ग- दर्शन मुख्यतः भाषा- शुद्धि, शब्द- विन्यास आ शैलीक औचित्ये करैत अछि। उल्लूरक 'मंगलमंजरी,' जे त्रावनकोर महाराजक प्रशंसा मे लिखल गेल अछि, हुनक आलोचना एहि प्रस्तावक संग शुरू होइत अछि -- केरल मे जे एहेन किछु गोटे रहैत छथि जे कवि 'विरुद' योग्य छथि, ओहिमे पहिल व्यक्ति होयताह उल्लुर परमेश्वर अय्यर। कविताक प्रशंसा ओकर विंब- योजना, स्पष्ट शब्दावली आ अबाध लय- प्रवाहक हेतु कयल गेल अछि। मुदा, वल्लत्तोल ओकर दोष सेहो देखबैत छथि -- अलंकार आ विंबक आवृति आ महाराजक प्रति प्रेमक तीव्रताक कारण अत्युक्ति। जखन कोनो कवि अपना स्तरक दोसर कविक दोष देखार

करैत छथि तखन हुनका बहुत संयत रह' पड़ैत छनि आ वल्लत्तोल अपन शब्द चयन मे अत्यन्त नियमित छथि। खेदक गप्प थिक जे उल्लूरक एहि अप्रधाने कविता पर वल्लत्तोलक समीक्षा आयल। कुमारन आशानक 'लीला' क समीक्षा मे ओ ओहू सँ बेसी स्पष्टभाषी भ' गेल छथि। 'लीला' एकटा प्रमुख काव्य थिक आ एकर क्षमता सँ ओ अवगत छथि। ओ काव्यक उष्मल प्रशंसाक संग समीक्षा शुरु करैत छथि। आशानक प्रशंसा हुनक मौलिकता एवं 'लीला' क प्रशंसा ओकर काल्पनिक नवीनताक लेल कयल गेल अछि। ''मलयालम मे एहन दोसर कविता नहि अछि जाहि मे करुण रसक संग विप्रलंभ शृंगारक एतेक सुन्दर चित्रण कयल गेल हो। तें 'लीला' क समकक्ष कोनो दोसर कृति अछि त' ओ हुनके 'नलिनी' अछि।" फेर कविताक विशद परीक्षा आरम्भ होइत अछि। ओकरा संरचना मे कमजोर आ भाषागत अशुद्धि सँ भरल काव्य कहैत छथि। संस्कृतक आ मलयालमक कतिपय शब्द सभहक मिश्रण कें ओ उचित नहि मानैत छथि। जेना दोसी आ गपशपक शब्दकें। वाक्य रचना मे आशान द्वारा कयल गेल प्रयोग सभकें ओ पसिन्न नहि करैत छथि। असंगत वाक्य रचनाक उदाहरणो ओ प्रस्तुत करैत छथि। बेजाय वाक्य रचना सेहो अछि, जाहि मे विशेषणक स्थान भेद सँ अर्थ स्खलित होइत अछि। बेमेल समुच्चय बोधक अव्यय, प्रतिकूल ध्वनि, व्याकरणगत अशुद्धि, तालक रक्षाक लेल अर्थ आ शुद्धताक बरोबरि त्याग कयल गेल अछि। भाषा सामान्यतः दुरूह अछि। एहि सब दोषक अछैतो कविता कें सुन्दर कहि सराहल गेल अछि। एकटा गाय भने अपन सिंघ आ पैर सँ आक्रमण करैत हो, मुदा जँ ओ बहुत बेसी दूध दैत अछि त' ओकर उपेक्षा नहि होइत अछि। 'लीला'क समीक्षा वल्लत्तोलक आलोचना शक्ति आ दुर्बलता दूनूकें रेखांकित करैत अछि। हुनक सन शुद्धिवादी आ श्रेष्ठ कलाकार (क्लासिस्ट) के स्वभावतः 'लीला' मे प्रयुक्त कतोक भाषागत अशुद्धि क्षम्य नहि होइतैक। मुदा एकर संगे ओ ओकरा नीक कविता मानैत छथि आ ओहि लेल आकर्षक, मोहक आ उत्तम विशेषणक प्रयोग करैत छथि। किन्तु किछु सामान्य बातकें छोड़ि क' ओ ई नहि कहि पबैत छथि जे उत्तमत्ता की अछि। विप्रलंग शृंगार आ करुणरसक मिश्रण-ई प्रयोग छायावादी तीव्रता कें प्रकट करबा लेल अपर्याप्त अछि। 'लीला' क छायावादी तत्व, विंध्यप्रदेश प्रकृति, भँगी चंपक फुलक सुगंधि, मदनक पाछु लीलाक खोज, मदनक नदी मे कूदि क' आत्महत्या आदि क्लासिक आलोचना कें प्रभावित नहि करैछ। वल्लत्तोलक सुन्दर साहित्यिक संवेदना कविताक सुन्दरता सँ प्रभावित होइत अछि, मुदा हुनक हथियार ओहि सुन्दरताक रूप वा स्रोतक अवगुंठन नहि क' पबैत अछि। 'लीला'क अपर्याप्तता कें देखबा मे ओ न्याय करैत छथि, मुदा जखन ओ ओहि कविताक प्रशंसा करैत छथि तखन ओ संदिग्ध सामान्यीकरण मे पड़ि जाइत छथि।

अपना सम्पूर्ण साहित्यालोचना मे ओ तखन उत्तम आलोचना करैत छथि जखन भाषाक शुद्धि लेल लड़ैत छथि। ओ अहू पर जोर दैत छथि जे कविक प्रथम कर्त्तव्य अर्थवत्ता होइछ आ शब्दक प्रयोग ओकरा विचलित नहि क' सकैछ।

साहित्य परिषदक किछु भाषण मे ओ मलयालमक कविताक किछु नव प्रकृति पर असंतोष प्रकट कयलनि। वल्लत्तोल कें आश्चर्य मे ध' क' मलयालम मे प्रेमगीतक भरमार भ' गेल छल। ओ सोचलनि जे एहि कविता सभसे कविक मनक दरिद्रता अधिक प्रकट अछि, ओकर यौवन कम। ओ खेद प्रकट कयलनि जे कविता आ उपन्यासक नायक सभहक सामान्यवृत्ति आत्महत्या दिस अछि, जे हुनका निराश करैत छनि। आधुनिक मलयालम कविताक छायावादी रुझानक उपहास कइयो क' ओ ओहि युवा कविक पीढ़ी सँ संतुष्ट छलाह। "जखन हम हुनक दिल आ दिमागक भावना कें देखि क' अपन साहित्यक पैर मे पड़ल जंजीर कें टुटैत देखलियैक तखन हमरा बड़ खुशी भेल।"

वल्लत्तोल अनेक संस्कृत कृतिक अनुवाद मलयालम मे कयलनि। अनुवादक सम्बन्ध मे हुनक अपन दृष्टिकोण छलनि। ओ दू बात पर जोर देलनि—मूलकृति आन भाषामे अनूदित होयबा योग्य हो आ ओकर अनुवाद साहित्यिक हो। स्वतंत्र अनुवाद पर ओ अपन असहमति प्रकट कयलनि अछि। साहित्यिक भाषा मे ओ बरोबरि नीक पुस्तकक मलयालम मे अनुवाद करबाक आवश्यकता पर जोर देलनि। अपन कविता 'हमर कविता' भाषा मे ओ एहि कथनक पुष्टि कयलनि अछि।

राजनैतिक घटना आ समाज सुधार-सन असाहित्यिक विषय पर सेहो ओ किछु लेख लिखलनि। सामाजिक जीवनमे सरकारी हस्तक्षेप सँ ओ रुष्ट छलाह। तथा-कथित प्रगतिवादी विषय सभक ओ स्वागत नहि कयलनि। नायर रेगुलेशन, जे नायर जातिक विवाह सम्बन्धी विषय छल, केर सम्बन्ध मे ओ लिखलनि अछि.. "समाजमे विवाह सम्बन्धी नियमक ओतेक जरूरति नहि अछि। वैवाहिक जीवनक आधार प्रेम अछि। एहि पवित्र भावकें नियम सँ खतरा नहि होइछ।" ओ पुरान सब वस्तु कें अप्रधान कहि छोड़बाक आ नब वस्तु कें नब होयबाक कारणें स्वीकार करबाक गप्प कैं मूर्खता कहलनि। कोनो मयलाली बनल रहैछ सएह गर्वक गप्प थिक। हुनक यैह स्पष्ट मान्यता छलनि। अपन गप्प सँ ओ एकटा परम्परावादी बुझाइत छलाह जे विवेक सँ काज लैत छलाह। एकटा सनातनीक दर्शन वल्लत्तोल मे हम क' सकैत छी।

वल्लत्तोलक गद्य शैली हुनक पद्य शैलीक समान आ उज्ज्वल अछि, कौखन लयात्मक सेहो अछि। ओ संस्कृत आ मलयालमक नीक मिश्रित रूप अछि। वक्ताक रूप मे ओ धीरे-धीरे बजैत छलाह, मुदा हुनक भाषणक अपन शक्ति आ स्फुरण छलनि। ओहि मे विनोदक भंगिमा छल, विंबावलीक शोभा छल। कविते जकाँ ओहि मे कल्पनाक आर्कषण आ चमक छल। संरचना सम्बन्धी गुण मे वल्लत्तोल पुरान गद्य शैलीक अनुगृहीत छलाह जे एकटा स्पष्ट व्यक्तिवादी गुण सँ मंडित छल। ओ पैघ वाक्यक प्रयोग करैत छलाह। आधुनिक मलयालम गद्यक ई गुण बहुत किछु नष्ट भ' गेल अछि। ओ अपेक्षाकृत सरल भ' गेल अछि।

वल्लत्तोलक काव्यकला

महान कवि ओएह अछि जकरा लेल जीवन अपन रहस्य खोलि क' राखि दैत अछि आ भाषा अपन सुन्दरता द' दैत अछि। कोनो देशक इतिहासमे एहन कवि विरले होइत छथि। एहि सँ किछु निम्न कोटिक स्थान भेटैत छनि 'गीतक गायक' तथा 'सपनाक दर्शक' कें। दर्शक ओ छथि जनिक सपना जीवन-दृष्टि कें गंभीरता प्रदान करैत अछि आ गायक छथि जनिक गीत अपन भाषाक माधुर्य सँ भरल रहैछ। वल्लत्तोल एकटा एहने गायक छलाह। ओ ने त' रहस्यवादी छलाह आ ने दार्शनिक। ओ स्वप्नद्रष्टा सेहो नहि छलाह, जे आत्माक प्रकाश तकैत दौड़ैत रहितथि। ओ एहन व्यक्ति छलाह जनिक भाषण संगीत छल, जनिक स्पर्श शीशा कें सोना बना दैत अछि। मलयालमक सम आधुनिक कवि मे केवल वल्लत्तोल एहन छलाह जनिका भाषा पर पूर्ण अधिकार छलनि। ओ भाषा सँ प्रत्येक स्वर कें सजओलनि, जे हुनका लेल उचिते छल। मलयालमक माधुर्य, ओकर आकर्षक स्वर, ओकर मर्यादा आ शक्ति—सभ गुण हुनक कवितामे भेटैत अछि। 'हमर भाषा मे' मलयालमक भाषा पर ओ गर्व करैत छथि। हुनक शब्द विन्यास मे ओ सभटा गुण छनि जे अपन मातृभाषा मे हुनका देखबा मे अयलनि। 'किलिकोंचल,' 'भारतीय स्त्रीक भाव-शुद्धि, 'अग्दलन' मरियम' सदृश कविता मे स्पष्टता, माधुर्य तथा पद-सौकुमार्य अछि जे चेरूशेरीक 'कृष्णगाथा' मात्र मे भेटैत अछि। ' शिष्य आ बेटा' मे पद-विन्यासक स्पष्टता तथा तीव्रताक अतिरिक्त सुन्दरता सँ युक्त दर्प आ क्षमता अछि। कखनो वल्लत्तोल 'एकटा औंठी,' 'भक्ति आ ज्ञान', 'नावो-यात्रा' सनक कविता मे सोझ-साझ भाषा बजैत छथि। ई वड्र्सवर्थक भाषा थिक जाहि मे गद्य कें भाव आ कल्पनाक स्पर्श सँ कविताक उच्चता देल गेलैक अछि। कखनो हुनक भाषा संश्लिष्ट रेशमी विन्यास प्राप्त करैत अछि, जाहि मे बात सभ उपर्युपरि रहैत अछि। 'हमर छोट-बेटी' मे अपन छोटकी बेटीक मुसकानक वर्णन ओ करैत छथि।

''एहि फूलक छोट लाल मुँहक मुस्कान मे संसार भरिक सभ गुलाब फुलायल अछि, जे एकाएकी फुलाइत अछि-- जेना सुन्दरताक कोंढ़ी बेराबेरी फुलायल हो, छोट सुन्दर माणिकक दाना एक के बाद दोसर फुलायल हो। एहन मृदुलता व्याप्त हो। अमृतक फुहार मे तीतल सुगंधि छिड़िआयल हो। दैवी विशुद्धि एक संग जमा भ' गेल हो।''

एहन पंक्ति, जे ऐन्द्रिक विवरण सँ पूर्ण तथा अलंकृत प्रयोग सँ चमत्कृत अछि, हुनक कविता मे बहुतो अछि। शुद्ध संस्कृत शब्द सभसँ निर्मित उच्च कोटिक शब्द-विन्यास हुनक कविताक स्वभाव थिक। विन्यास विषय आ संदर्भक अनुसार बदलैत अछि। वल्लत्तोल शिल्पकला मे निपुण छथि आ 'मणिप्रवालम्' शैलीक सभ गुणक लाभ उठबैत छथि-- नमनीयता,जोर,सरलता आ गौरव, भंगिमा तथा माधुर्य। हुनक कविताक विशिष्ट स्वभाव आंकर क्लासिकल तत्व थिक जे विभिन्न गुणक अनुपम सौन्दर्य सँ पूर्ण अछि।

स्वस्थ एवं ऐन्द्रिक विवरण वल्लत्तोलक कविताक संरचनाकें सशक्त बनबैत अछि। उपरोक्त पाँती सभ कें देखला पर स्पष्ट होइछ जे सभ विवरण सुन्दर तथा आदर्शात्मक अछि। छाया-चित्र-सन देखल-गुनल विषय-वस्तुक यथार्थवादी विवरण द्वारा विभिन्न दृश्यक स्पष्ट चित्रात्मक प्रस्तुति कर सकैत छथि। 'एकटा औंठी' मे ओ एकटा थाकल-ठेहिआयल मलयाली ब्राह्मणक चित्र प्रस्तुत करैत छथि -- ''तड़िपत सँ बनल छत्ता हुनक बाम कनहा पर अछि जकर दस्ता दहिना हाथ मे अछि। दिन भरिक गरमी सहि क' ओहो टूटि - भंगठि गेल अछि आ विश्रामक लेल हुनक कनहा सँ लटकल अछि। हुनक जनऊ गर्मी सँ बचबाक लेल पसेना सँ भीजि क' हुनक छाती सँ सटल अछि। हुनक माथ परक वैष्णव-चिह्न मेटा जकाँ गेल अछि, मुदा हुनक चेहराक वैष्णव-पवित्रता चमकि रहल अछि अपन धोतीक छोर ओ डाँड़ मे लपेटने छथि। माथक केश कें ऊपर उठा क' वन्हने छथि जकर नोकगर छोर कें कानक पाछाँ लपेटने छलाह।''

पात्रक चालि-ढ़ालि, मुद्रा तथा भाव-परिवर्तन कें अपन शब्द मे पकड़ि लेबाक कुशलतो वल्लत्तोल मे छलनि। 'किलिकोंचल' मे ओ नान्हि टा सीताकें अपन मायक लग दौड़ैत चित्रित कयलनि अछि।

बकुल फूलक अर्धनिर्मित माला कें कनहा सँ लटका क' नान्हि टा बच्ची उत्सुकता सँ अपन माय दिस दौड़ैत छलि। जेना कोनो सुवर्ण पुष्प हवा मे उड़ि रहल हो। 'दौड़ू जुनि, ने त' खसि पड़ब।' ओकर कमल सदृश पैरक पाजेब बाजि उठल। 'की ई हमर भार सहि सकत ?' ओकर पातर डाँड़क डँड़कसक मणि सभ फुसफुसायल।

'मधुलक्ष्मी' नामक कविता मे ओहि नामक एकटा नर्तकीक पद-संचालनक वर्णन ओ करैत छथि। 'ओकर आँगुरक छोर पर बकुलक फूल सजाओल गेल अछि। ओकर गाल गुलाब जकाँ लाल छल। ओकर बामा हाथ कलात्मक ढंग सँ डाँड़ पर छल। ओ अपन आँखि आ भौह कें नीक जकाँ घुमौलक। ओकर गरदनि कमलक माला सँ अलंकृत छल। ओ किछु दूर समानान्तर रेखा मे चलल। ओकर पैर मे सुन्दर छोट लाल फूलक पाजेव छलैक। गीतक ताल पर ओ थिरकैत छलि। चंपक फूल ओकर हाथ मे सजाओल गेल छल। कमलदल सनक ओकर आँखि छलैक। ओकर चालि अत्यन्त आकर्षक छल। जखन कखनो ओ मुसकुराइत छलि, ओहि स्थान पर फूलक जेना बरखा होबय लगैत छल। ओकर अंग-प्रत्यंग सुन्दर तथा हल्लुक छलैक। ओकर डेगो हवा सँ हल्लुक छल। ओ जेना दूधक फेन पर चलैत छलि।'

'खयवाक लेल किछु नहि, पहिरबाक लेल किछु नहि' शीर्षक कविता मे ओ एकटा परिवारक सरल गरीबीक चित्र प्रस्तुत करैत छथि जे पहिने कहियो धनिक छल। ओ ओहिठामक कुकुर कें देखैत छथि –

'एक कुकुर जकर देह पर कीड़ा रेंगैत अछि, ओ साँस लेबा मे कष्टक अनुभव करैत अछि, ओकर हाड़ तखन जागि जाइत छैक। ओ ओसारा पर पेटकुनिया देने पड़ल अछि। ओ कखनो अपन माथ उठबैत अछि, जे ओकर पैर पर आराम सँ पड़ल छल। अपन बूढ़ आँखि सँ ओहि आदमी कें देखैत छल जे भीतर आयल छल।'

वल्लतोलक शैली प्रायः अलंकृत होइत अछि। हुनक प्रत्येक कविता मे उपमा तथा रूपकक बहुलता अछि। हुनक रचनाक काल्पनिक सुन्दरता एहन विम्बक प्रयोग मे भेटैत अछि। हुनक शक्तिक सीमा प्रसन्नतायुक्त आकर्षण सँ ल' क' सर्जनात्मक मौलिकता धरि अछि। 'एकटा तोता' मे ओ कहैत छथि -- 'तोहर आँखि एहन सुन्दर अछि जेहन कुंकुमक बिन्दी सँ सुन्दरि युवतीक माथ लगैत अछि। तोहर देह केराक कोशा सनक सुन्दर अछि।'

पुरान फाटल- चीटल गेडुआ कें देखि क' कवि एहन विम्बक वर्णन करैत छथि --

'तोरा देहमे भेल भूर बाटे भरि बाकुट तूर बाहर अबैत अछि। कोनो विरूप युवतीक केश पर राखल जूही फूल सन लगैत अछि।' इयैह दृश्य कविकें एकटा आरो विम्ब प्रस्तुत करबाक प्रेरणा दैत अछि– 'ई देखि क' जे राजाक शरीरक सेहो अंतिम स्थिति इयैह थिक, की तों हँसैत छह गेडुआ ! तोहर हृदय गोर छह, जत' सँ उज्जर तूर बहार होइत अछि।'

जहल मे बैसल अनिरूद्धक उपमा एहि तरहें देल गेल अछि-- ''माटिक कोहा मे एकटा पवित्र दीप जरि रहल अछि। कठियारी मे आमक नवगछुली लागल अछि। एकटा फूल कें धूआँ सँ जरा देल गेल हो। एकटा सुन्दर रूप कें कूड़ा मे फेकि देल गेल हो। सौभाग्य कें अशुभ नक्षत्र सँ झाँपि देल गेल हो। हाथी थाल मे डूबल हो। ककरो सुयश निट्ठाह गलंजर मे समाप्त भ' गेल हो।''

'नान्हिटा सीता' क नानी बूढ़ि वेश्या ओछान पर पड़लि अछि जकरा लेल ' कामदेवक टूटल धनुष' क प्रयोग कयल गेल अछि। 'नगीला' मे भवदेवन् अपन जातिक आचारक अनुसार अपन कनियाँ कें सजा रहल छल, तखन ओकर जेठ भाइ ओकरा अपन गुरु लग ल' जाइत अछि आ कहैत अछि -- ''ई अपना घर मे अपन नवकी कनियां के सजा रहल छल, जेना कामदेवक धनुष कें सजबैत हो।''

'मगदलन मरियम' मे साइमन के घर लग पहुँचितहि नायिकाक गति शिथिल भ' जाइत छलैक-- 'ओकर गति एहन मन्द होइत छलैक जेहन समुद्र मे मिल'-बाली नदीक होइत छैक।''

वर्षाकालीन साँझ मे पानि पड़ैत देखि क' हुनका लौकिक जीवनक बात मन पड़ि जाइत छलनि। 'अहाँ संघर्ष क' क' ऊपर उठू फेर नीचाँ खसब। अहाँ कूड़ा करकट

आ काँट -कूस सँ भरल प्रदेश मे खसब, केओ अहाँकें रोकि नहि सकैत अछि। अहाँ एकटा नदी मे मिलि जाउ, आ समुद्र मे समाहित भ' पूर्णता प्राप्त करू। यौ पानि ! लौकिक मार्गक यात्रीक जीवनक नाना रूप अहाँ प्रत्येक डेग पर देखबैत छी।" 'वर्षा मे पैदल यात्रा' सँ।

'हवा मे उड़ैत कविता' मे कविक छोटका वेटा हुनक कविताकें हथिया लेलकनि जे ओ तखन लिखि रहल छलाह - 'ओकरा छीनि क' बच्चा पढ़' लागल। अपने भाषा मे अपना ढंग सँ। ओहि पुरान कवितो सँ टटका नव मधुक बुन्न टपकि रहल छल।'

आजाद भारतक भूमिका पर अपन विश्वास कें कवि एहि विम्ब मे व्यक्त करैत छथि

"ई हाथी जे भारतक प्रतिरूप थिक
तोड़ि दैछ अपन बन्धन सभ
उन्मत म' दुनियाकें पद-दलित करबा लेल कथमपि नहि
अपितु ऊपर उठयबा लेल
अपन मैत्रीपूर्ण सूँढ़क सहयोग सँ
अपन ओहि समस्त बन्धु -बान्धवकें
जे गोंतायल रहलाह अछि जलक अतल तल मे
आ भोगैत रहलाह अछि विवशताक भोग"

विचार विम्ब सँ भरल अछि आ प्रत्येक विम्ब अपन अर्थवत्ता सँ नव सुन्दर बाट देखबैत अछि। इयैह उपमा आ रूपक वल्लतोलक काव्य कें आकार दैत अछि आ माधुर्य तथा आनन्दक गहवर मे ल' जाइत अछि। ई सभ कखनो चुकैत नहि अछि।

वल्लतोल अपन किछु कविता कें दृष्टान्त वा रूपक बना क' प्रस्तुत कयलनि अछि। 'ई दुःख काफी अछि, काफी अछि' शीर्षक कविता मे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसकें एकटा नदी मानलनि अछि जे स्वतंत्रताक समुद्र दिस बहैत अछि, मुदा चट्टान आ पहाड़ सभ सँ रोकल जाइत अछि। किछु स्वार्थी किसान सभ सेहो छथि जे ओकरा नष्ट क' देबा पर वृत छथि। 'प्रभातगीतम्' मे प्रभात कें एकटा व्यस्त कमनिहारि मानलनि अछि जे आकाशरूपी कोठरी सँ भोरुका पहर अपन काज करैत रहैत अछि। 'तोहर विजय हो,' कविता मे एकटा पैघ यज्ञकें नदी मानि लेल गेल अछि। दुनू अर्थ कें मिलेबा मे ओ बड़ सहजता आ स्वाभाविकता सँ काज लेलनि अछि जाहि मे कोनो यांत्रिक अथवा कृत्रिम अंश नहि आयल अछि।

कविता मे विम्बक भरमार रहितहुँ वल्लतोल एहन कवि नहि छलाह जनिका लेल विम्ब कविताक पर्यायवाची शब्द हो। ओ क्लासिक परम्पराक कवि छथि, जिनका लेल स्पष्ट चिन्तन तथा संतुलित निर्णय कांव्य- सर्जनाक हेतु सर्वोपरि होइछ। ओ कल्पना कें नियंत्रित रखैत छथि। तें हुनक विम्ब योजना काव्यमय प्रतीकक स्थान नहि लैत अछि। तइयो किछु एहन विम्ब हुनक कविता मे अछि, जेना नदी, प्रकाश आ अन्धकार।

पानिक धार हुनका आकृष्ट करैत छनि – हुनक कविता मे कतोक नदीक उल्लेख भेल अछि-- यथा भारतपुषा, तिहरपोन्नानिनदी, परियार, नर्मदा, गोदावरी एवं कालिन्दी। मानव जीवन आ मानव प्रयत्न किछु कविता मे नदी बनि जाइत अछि - जेना, 'प्रयागस्नानम्', 'दुःख काफी अछि, काफी अछि' आदि कविता राति आ दिन, अन्हार आ इजोत-गुलामी आ आजादी, अज्ञान आ ज्ञानक विम्ब थिक। 'अंधकार सँ' सदृश दार्शनिक कवितामे ई विम्ब एकटा नव संश्लिष्टता प्राप्त करैत अछि। प्रकाशक देवता कें, सूर्यक सूर्य कें, ओ कहैत छथि –

''कहियो यदि अहाँ दिस
देखब आवश्यक होइत हमरा लेल
नहि,नहि
हम त' ई सोचियो क' भ' जाइत छी त्रस्त
छीहो हम अन्ततः
जीव एकटा अन्धकारक
अहाँक मुखमण्डल जे दीप्तिमान थिक
ओहि सभ वस्तु सँ जकरा मे होइछ दीप्ति
हम देखबाक नहि रखैत छी कामना
हमरा लेल ई सुनबे पर्याप्त थिक
जे अहाँ छी सभ वस्तुमे विद्यमान''

कतोक शताब्दी सँ अंधकारमे डूबल मनुष्य प्रकाशक लेल अनन्त प्रयत्न करैत अछि। थाकल कवि प्रश्न करैत छथि जे अपना कें तृप्त करबाक लेल ओकरा कतेक प्रकाश चाहियैक। कवि कहैत छथि जे प्रायः सूर्य सेहो दिनानुदिन प्रकाशक ताक-हेर क' रहल अछि, किन्तु ओ ओहि प्रयत्न मे शामिल नहि होबय चाहैत छथि।

''कत' सँ आयल छी हम एहि दुनियामे ?
अन्धकारक कोखि सँ
आ की थिक प्रकृति एहि अन्धकार केर ?
नहि छैक ज्ञात ककरो
कत' जा रहल छी प्रतिदिन हम ?
अन्धकार मुहें
तखन किएक प्राप्त होइछ
एतेक रास प्रकाश हमरा
एकटा मध्यान्तर जकाँ ?'

अन्य कविता मे ओ दिन आ रातिक परम्परागत मिलन कें स्वीकार करैत छथि। 'समय बदलि गेल' कविता मे भोरुक तारा कें अन्हारक हृदय फाड़निहार आतंक कहल गेल अछि। 'भोरक तारा' आकार मे पातर अछि, दरिद्रताक

परिधान पहिरने अछि आ ओ अन्हार कें सोझा-सोझी निर्भय भ' क' देखैत अछि। अन्हारक पिण्ड अपना मे फुसफुसाइत अछि --

''कतेक आश्चर्यक विषय
हम सभ जे वनबैत छी
गगन-चुम्बी स्फटिकक देबाल
भ' जाइछ ध्वस्त जेना माटिक बनल हो ओ
हमरा सभक पैरक नीचाँ
दीर्घकाल सँ जतायल पहाड़
उठायब आरम्भ करैछ अपन माथ
घोंटि गेल रही हम सभ
एहि विश्वकें मांसुक खण्ड जकाँ
मुदा आब उजरा रहल अछि
हमरा सभक केश।''

एहि मे तथा 'परवश्ता' सनक अन्य कविता मे आजादी प्रकाश अछि आ गुलामी सभ कें सुरक'-बला अन्धकार।

विम्ब वल्लतोलक कविताकें रचना- सम्पन्नते नहि दैत अछि, अर्थ एवं भावक गंभीर मर्यादा सेहो दैत अछि। प्राचीन संस्कृत आलोचना मे कहल गेल दुनू आधारभूत गुण हुनक विम्ब कें उपलव्ध छैक- ध्वनि आ औचित्य।

ई आश्चर्यक विषय थिक जे विम्बक एहन समृद्ध कवि मे रंगक प्रयोग वहुत कम भेटैत अछि। रंगक परम्परागत प्रयोग किछु विम्ब मे यदा-कदा देखबा मे अबैत अछि--जेना, खेतक हरियर कालीन सनक लागब, गाल गुलाब सनक, सुग्गाक आँखि कुंकुमक बिन्दी सनक, ओकर पैर मूंगा सनक, आदि। किछु कविता मे परम्परागत विम्ब नवीन काल्पनिक विम्ब सँ मिलि जाइत अछि। उदाहरणक रूप मे, 'किलिकोंचल' मे आकाशक वर्णन --

''अहाँक नव कारी घटा मे
एहन किछु बात छैक
जे अहाँ हरियर गाछ सभक कखनो
सघन वन बनि जाइत छी
अहाँक उज्जर घटाक विस्तारक संग
एहन किछु बात छैक
जे अहाँ कखनो बनि जाइत छी
विस्तृत बालुकामय किनार
कौखन अहाँ सजबैत छी
अपना कें कुंकुमसँ
जे बहराइत अछि सूर्यक प्रभात-किरण-जाल सँ

किन्तु रंगक यथार्थवादी निरीक्षण तथा रंगक लेल रंगक प्रयोग सामान्यतः वल्लत्तोलक कविता मे नहि भेटैत अछि। शब्दक विम्ब बहुत अछि। बहैत पानिक कलकल शब्द, बादलक गरजब, लहरिक गंभीर स्वर, चिड़इक तरल स्वर, वीणा- सितार तथा मृदंगक स्वर आ बच्चाक कोलाहल। कोनो एक्के अर्थ मे विम्बक प्रयोग करबे मे नहि अपितु ठोस वस्तुक प्रयोग द्वारा विविध आ सामान्य भाव उत्पन्न करबो मे ओ पटु छथि। आकार आ रंगक, ध्वनि, स्पर्श तथा सुगंधिक मिश्रणो देखि सकैत छी। उदाहरण-स्वरूप ओ अपन 'ओरू चित्रम्' (एकटा चित्र) नामक कवितामे कृष्णक एना वर्णन करैत छथि---

"चन्द्रमाक कोमल दीप्ति
आ अंगूरक सत्तक मधुरता
कोमल समीरक आनन्ददायी शीतलता
तन्नुक आम्र-पल्लवक झोंझिक कोमलता
आ इन्द्रधनुषक रमणीयता
जे आकाश मे बनबैत अछि
नौ बहुमूल्य पाथरक बन्दनवार
आ चमेलीक फूलसभक सुगंधि
जे प्रस्फुटित होइत अछि संध्याकाल
ई सभ वस्तु आ आनो सुन्दर पदार्थ
मिश्रित भेटत एहि छोट-सन शरीर मे"

'रेशमी कपड़ा मे लपेटल जरैत लकड़ीक टुकड़ा' मे कारी भदवरिया रातिकें जंगलक रूप मे चित्रित कयलनि अछि। 'आकाशक स्याह विस्तार दावाग्नि मे जरल जंगल जकाँ लगैत अछि। मेघक गर्जन बीच-बीच मे सुनबा मे अबैत अछि हाथीक शत्रुक गर्जन सदृश।'

'सांध्य प्रणाम' कविताक पहिल पद मे एकटा सुन्नरि स्त्री कें कोनो गरीबक मड़इ मे अप्रत्याशित देखि कवि आश्चर्य प्रकट करैत छथि ---

"कोनो दीप्तिमान अंगार जकाँ प्रतिभासित
वेगसँ बहि गेल राखिक मध्य
किंवा थालसँ भरल पोखरिमे एकटा लाल कमलक समान प्रस्फुटित होइत
अथवा घटासँ झँपायल एकटा वर्द्धमान चन्द्रमा जकाँ
के थिक ओ सुन्दर रमणी
ठाढ़ि एहि तमसावृत्त
छोट-छिन मड़इक एहि ओसारा मे ?"

वल्लत्तोल जतेक विम्बक प्रयोग करैत छथि से अपन सामान्य गुणक कारणें लेल गेल अछि, अथवा ओ निरीक्षण सँ प्राप्त यथार्थवादी विम्ब सभ अछि। यथार्थवादी विम्ब

अपेक्षाकृत कम अछि। शेष विम्ब मे किछु परम्परागत अछि। अन्य सभटा अपन धर्म आ शिल्प मे क्लासिकल अछि, विश्वव्यापी गुण सँ परिपूर्ण अछि। ओ कविताक व्याख्या करैत अछि, ओकरा सजीव बनबैत अछि, सजबैत अछि, मुदा ओ कविताक मूल-प्राण नहि थिक। ओ कविता कें अपना मे केन्द्रित नहि करैत अछि।

वल्लत्तोलक कलाक एकटा दोसर पक्ष ई थिक जे कोनो अनुवाद मे, संस्कृत तथा द्रविड़ वृत्त मे ओकर श्रेष्ठता कें ठीक-ठीक प्रकट नहि कयल जा सकैत अछि। ओ संस्कृत मे ओजस्वी आ द्रुत पद्य तथा द्रविड़ छन्दे मे प्रचलित एवं कोमल कविता लिखने छथि। मलयालम कविता कें संस्कृतक श्लोक सँ मातृभाषाक सुर-तालक अनुरूप परिवर्तित करबाक लेल मुख्यतः उयाह उत्तरदायी छथि। कहब कठिन अछि जे मलयालम वृत मे ककरा-ककरा ओ नीक जकाँ प्रस्तुत कयलनि, कारण सभटा वृत्त पूर्णतः हुनक अनुकूल छलनि। सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द 'केका' थिक, जे अंग्रजीक स्वच्छन्द छन्दक अति निकट अछि। मलयालम मे केका छन्द कें एतेक महत्व देबयबला इयैह छलाह जे विचार-कविताक लेल ओकरा नितान्त आवश्यक उपकरण बनौलनि।

वल्लत्तोलक कविताक एक उल्लेखनीय पक्ष ओकर गति वा व्यापार थिक। प्रत्येक पंक्ति मे किछु- ने- किछु घटित होइत अछि। एक शब्द कहल जाइछ, एक मुद्रा, एक गति अथवा नाटकीयताक आवेग आबि जाइत अछि। प्राकृतिक जीवनक भावक दृश्य उपस्थित म' जाइछ। ओ निश्चल दृश्यक वर्णन थोड़बे करैत छथि, प्रत्येक पद मे सजीवता देखबाक आग्रही छथि ओ। मानवीय वा प्राकृतिक जीवनक गुणक वर्णन ओ कतेक सहजता सँ करैत छथि से देखि क' हरेक बारीकी पर पाठक सुखद आश्चर्यक अनुभव करैत अछि। उपरोक्त वर्णनात्मक पद एहि गुणक उदाहरण थिक। वल्लत्तोलक अधिकांश कविता कथा- काव्य थिक। पाँचम अध्यायमे कहल गेल प्रसिद्ध खण्डकाव्यक अतिरिक्त हुनक अपेक्षाकृत छोटो काव्य सभ छनि। जेना, 'एकटा नायर युवती आ मुसलमान' एवं 'युवकक आत्म-शिक्षण', 'वीरक पत्नी,' चोर कें पुरस्कार,' 'खयबाक लेल किछु नहि, पहिरबाक लेल किछु नहि', 'रेशमी कपड़ा मे लपेटल जरैत लकड़ीक टुकड़ा', 'राघाक कृतार्थता,' 'चिड़इक गीत', 'युवा संन्यासिन,' 'भारतीय महिलाक चारित्र्य-शुद्धि', 'भक्ति आ ज्ञान,' 'नगीला', 'नरेन्द्रक प्रार्थना,' 'अंतिम पत्र,' फाँसीक तख्ता पर सेहो,' 'एकटा औंठी', 'बेचारा सभ मे बेचारा,' 'मलयालमक माथ', 'हरे कृष्ण,' तथा 'जातिक शक्ति'। एकर अतिरिक्त एहनो कविता अछि जे नाटकीय तथा वर्णनात्मक अंशक वर्णन करैत अछि। यथा, 'हवा मे उड़ैत कविता', 'हमर माथक केशकें देखि क', 'नाव-यात्रा,' 'किसान वर्षा-बादल कें देखैत अछि,' आदि। 'अम्पाटि' (ब्रज) मे जायबला अक्रूर, 'रावणक अपन पत्नीक कोठरी मे संदर्शन,' कर्मभूमिक छोट पैर,' 'पापसँ मुक्ति', 'सांघ्य-प्रणाम' सदृश कविता मे नाटकीय तथा वर्णनात्मक अंशक मिश्रण अछि। एहि सभ कविता मे, कविता खाहे जेहन हो, नाटकीय तत्व पर ध्यान देल गेलैक अछि। वर्णनक क्रमगत धार, पात्रक सजीवता (जतेक कविताक लेल जरूरी अछि), अनुक्रम मे

तथ्यक चयन आदि बात पर सेहो ध्यान देल गेल अछि। 'खयवाक लेल किछु नहि, पहिरबाक लेल किछु नहिं' अथवा 'फांसीक तख्ता पर सेहो' कविता मे कवि वर्णनात्मक एवं नाटकीय तथ्य मे संतुलन बनौने रहैत छथि। कविताकेँ वातावरण तथा रूप देबाक लेल पर्याप्त वर्णन अछि। कविताक कथा-तत्व मे भावात्मक पक्षक समावेश हेतु एकटा निश्चित यति संग भावात्मक तत्व सेहो अछि।

एहि कविता सभक एकटा दोष ई थिक जे ओ व्यापारक बाह्य अंशकें पात्रक मनोव्यापार सँ बेसी महत्व दैत अछि। वल्लतोल क्लासिकल परम्पराक कवि छथि, आ तदनुसार कार्य- व्यापारे मनुष्य थिक। मनोविज्ञानक सूक्ष्मता क्लासिसिस्ट समकें शब्द तथा प्रवृतिक सत्यताक अर्धांशो प्रभावित नहि करैत अछि। क्लासिसिस्ट ओकरे स्वीकार करैत अछि जकर दुनिया मे एकटा निश्चित लक्ष्य तथा अस्तित्व छैक, जे एकटा मनुष्य कयलक अछि आ जकरा सौंसे संसार देखि सकैत अछि। शीलगत कार्य एकटा व्यक्तित्व निर्माण क' लैत अछि, जेना हवा आ पानिक शीलगत कार्य एकटा सुन्दर दृश्य कें रूप प्रदान करैत अछि। तें जे सभ एहन काज मे लागि गेल छलाह हुनका चारित्रिक विशेषता भेटितनि जे ओहि सभक व्याख्या प्रस्तुत करय आ जे हुनका सभक व्यक्तिगत विशेषता सँ कतहु बेसी महत्वपूर्ण अछि। संस्कृत नाटकक नायक कें धीरललित, धीरोदात्त आदि वर्गमे विभाजित करबाक इयैह तात्विक आधार थिक। नायिका सभके मुग्धा, प्रौढ़ा आदि वर्ग मे ओही दृष्टिकोण सँ राखल गेल अछि। भावक वर्गीकरण सेहो पात्रे जकाँ कयल गेल अछि। परिभाषित कार्यक पाछाँ परिभाषित भाव अछि आ ई भाव सभ किछु निश्चित प्रक्रिया सँ कयल वृत्ति वा रस मे परिवर्तित कयल जाइत अछि। वल्लत्तोल क्लासिकल साहित्यक मर्मज्ञ छलाह। ओ एकटा शुद्ध क्लासिक कला कथकली आ ओकर साहित्य सँ प्रभावित छलाह। स्वाभाविक अछि जे 'मगदलन मरियम' मे पापक संकीर्ण मनोविज्ञान अथवा पश्चात्ताप देखबा मे नहि अबैत अछि। 'नगीला' मे, जे एकटा एहन युवकक कथा थिक जकरा वैवाहिक समारोहक बीच मे सँ संन्यास दिस झुका लेल जाइत अछि, प्रेम आ संन्यासक मध्य संघर्षक जटिलताक उल्लेख नहि अछि।

वल्लत्तोलक नायक अपन कनियाँक सौन्दर्यक स्मरण करैत अछि आ ओकरा प्रति अदम्य आकर्षणक अनुभूति होइत छैक। शारीरिक विकार कें प्रेमक स्पर्श कराओल जाइत अछि। 'रावणक अपन पत्नी सँ भेंट' मे रावण रामक संग युद्धकाल मे मन्दोदरी सँ भेट कर' जाइत अछि। ओकर पुत्र मेघनाद शत्रु पर विजय प्राप्त कयने अछि, एकर अभिनन्दन करबाक लेल ओ गेल छल। ओकर जे भव्य स्वागत भेल छलैक तकर वर्णन विस्तार सँ कयल गेल अछि। रावणक सभटा अपराध- बोध के एक्केटा वाक्य मे राखि देल गेल अछि-- ''चाहे हम अपन प्रिय पत्नीक चरण पर अपन जीतल तीनू लोक कें राखि दी, तइयो रामक शत्रु हम ओकरा आदर नहि देलियैक आ ओकरा लेल किछुओ नहि कयलियैक।' निस्संदेह संक्षिप्तीकरणक ई सर्वोत्तम उदाहरण थिक, मुदा राजकीय विलास तथा ऐश्वर्यक अतिरंजित वर्णनक बीच मे ई गौण लगैत अछि। जीवनक प्रति

कविक दृष्टिकोणक एहि सीमाक कारण ओंकर आलोचना करब व्यर्थ थिक। ओ दुनियाक वाह्य रूप देखलनि—गति आ व्यापार कें देखलनि। ओ कोनो प्रादेशिक दृष्टिकोण कें प्रमुखता नहि देलनि, प्रत्येक वस्तुक चयन, सम्पादन तथा सुन्दर बनयबे मे ओ लागल रहैत छलाह।

कलाकारक रूप मे वल्लतोलक सर्वश्रेष्ठ सिद्धि इयैह थिक जे ओ ई देखा देलनि जे मलयालम भाषाक सामर्थ्य की छैक। ओ ओकरा नाचब- गायब, समतल मे प्रवाहित होयब, रानी जकाँ प्रतापी बनि क' चलब आ देवी सदृश उदार बनि क' रहबा योग्य बनौलनि। ओ प्राचीन क्लासिकल ढंग सँ मर्यादा मे ओकर अंगक संग सम्बन्ध, स्पष्टता, शुद्धता तथा लावण्य जोड़लनि। ओ छोट कविता कें समग्र, वैविध्यपूर्ण तथा नाटकीय बनौलनि। नाटकीय काव्य कें आवश्यकतानुसार आधार आ गति देलनि। ओ श्रेष्ठ शव्द-शिल्पी तथा महान कलाकार छथि।

सहायक ग्रन्थ-सूची

वल्लत्तोल	बी. उण्णिकृष्णन नायर, मातृभूमि, कालीकट, 1962
वल्लत्तोल उपहार ग्रन्थम् :	सम्पादक : डा. चेलनाट अच्युत मेनन तथा डा. एस. के. नायर, जनता प्रेस, 1948
वल्लत्तोल कविता	सम्पादक : कविता समिति, एन. वी. एस., कोट्टयम, 1956
मातृभूमि वल्लत्तोल अंक :	मातृभूमि, कालीकट, 1958
कैरलियुटे कथा	एन. कृष्णपिल्ले, एन. बी. एस., 1958

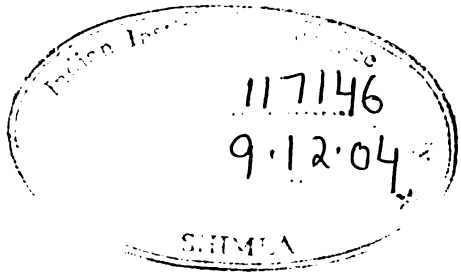

वल्लत्तोल नारायण मेनन (1878-1957) आधुनिक मलयालम कविताक पथ-प्रदर्शक लोकनि मे सँ एक रहथि । परम्परागत ढंग सँ शिक्षित आ संस्कृत मे निपुण, ओ वाल्मीकि रामायण तथा ऋग्वेदक मलयालम मे अनुवाद कयलनि । यद्यपि वधिरता हुनका लेल एकटा वाधा रहलनि, तथापि ओ अपन समस्त जीवन साहित्य आ कथकलीक सेवामे बिताओल । कलामण्डलम'क संस्थापकक रूप मे ओ अपन मण्डली कैं शान्तिनिकेतन, सोवियत रूस, चीन आ फ्रांस लऽ गेलाह । ओ गाँधीजी कैं अपन गुरु मानलनि आ सरकारी पुरस्कार कैं अस्वीकार क' देल । हुनक विभिन्न विषयक ज्ञान एवं क्षेत्र व्यापक तथा विस्मयकारी छल । कलाकारक रूप मे वल्लत्तोलक सर्वोच्च सिद्धि इएह रहनि जे ओ स्थापित कयलनि जे मलयालम साहित्य की क' सकैछ । ओ एक संग 'क्लासिसिस्ट' (परम्परावादी) तथा 'रोमाण्टिको' (स्वच्छन्दतावादियो) रहथि । ओ साहित्य अकादेमीक सदस्य रहलाह । वर्ष 1955 मे हुनका 'पद्मभूषण' सँ सम्मानित कयल गेल ।

प्रो. बी. हृदयकुमारी मलयालमक अध्यापन करैत छथि । अनेक समालो छथि ।

Library IIAS, Shimla
MT 891.481 218 I V 242 H
00117146

ISBN 81-7201-893-2

पन्द्रह टाका